सम्पादकीय

ताकत दिखाना पड़ती है...

पत्र-पत्रिकाएं केवल समाचार संप्रेषण या अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र नहीं हैं, अपितु वे अनेक ऐसी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, जिनके बारे में अन्य माध्यम सोच भी नहीं पाते। परंतु जब तक पहलवान दांव न दिखाए उसे कोई पहलवान नहीं मानता। उसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं को भी समय-समय पर अपनी ताकत दिखाना पड़ती है। संभवतः वर्तमान दौर अपनी ताकत दिखाने का था, तभी तो जय हाटकेशवाणी ने भोपाल में नागर महाकुंभ का आयोजन किया, बल्कि समाज में नए सोच का संचार किया। आमतौर से जब नागर इकाईयों की बैठक होती है और उनमें कोई कार्यक्रम किए जाने की बात होती है तो पदाधिकारी यही कहते पाए जाते हैं कि कार्यक्रम तो करो, पर लोग आते नहीं हैं... भाई नागर महाकुंभ भोपाल में हुआ उसमें झाबुआ, खंडवा, गुजरात तक के लोग कैसे आ गए? दरअसल, किसी भी आयोजन के लिए माहौल बनाना पड़ता है.. प्रोपोगंडा करना पड़ता है। माहौल बनाने के लिए पत्र-पत्रिकाओं से अच्छा माध्यम कोई नहीं है। साथ ही समाज को एकता के सूत्र में बांधने, प्रदेशभर में गौरवान्वित करने, वैवाहिक सहयोग, समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने, खबरों का आदान-प्रदान करने सहित कई कार्य समाज की पत्रिकाएं कर सकती हैं। कई बार समाजजनों के लिए ये पत्रिकाएं गौरव का विषय भी होती हैं, जब वे अन्य समाज के परिचित बंधुओं को गर्व के साथ ये पत्रिकाएं दिखाकर बताते हैं कि ये हमारे समाज की पत्रिका है। एक तीर से कितने निशाने लग सकते हैं यह समाज की एक पत्रिका ही प्रमाणित कर सकती है। ये समाजजनों की अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र न होकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यस्ततम जीवन में अनेक समस्याओं का समाधान है- जरूरत है समाज के प्रत्येक परिवार, प्रत्येक सदस्य को इनसे जुड़ने की। समाज की प्रत्येक, जानकारी जन-जन तक पहुंचे। संस्कृति एवं विचारधारा का निरंतर प्रवाह हो इसके लिए आवश्यकता है कि परिवार के सभी सदस्य समय निकालकर इन पत्रिकाओं को पढ़ें... चिंतन करें... तथा विचारें कि हमारा समाज किस दशा में है और किस दिशा में जा रहा है।

संगीता शर्मा (नागर)

विचारों की उपयोगिता

कोई भी मनुष्य अपने विचारों से नहीं भाव से जीता है। भाव यानी स्वयं का भाव-स्वभाव। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके स्वभाव से पहचाना जाता है। हमारे पास विचार तो बहुत हैं, पर क्या हम उन्हें अपने स्वभाव में उतार पाते हैं? जैसे एक विचार है कि हम क्रोध नहीं रोक पाते। क्रोध का कारण बाहर से है, क्योंकि किसी विचार से आदमी को क्रोध आता है और विचार बाह्य जगत से प्रचलित हैं, परंतु भाव आँतरिक है, मन के भाव अंदर से आते हैं। जो आंतरिक हैं वह स्थिर हैं, जो बाह्य हैं वह परिवर्तनशील हैं। भाव व विचारों में सामंजस्य ही पूर्णता है, तो व्यक्ति के कर्म वैसे ही होंगे। इसके विपरीत भाव में यदि बैर-वैमनस्य, घृणा, कपट, हिंसा होगी तो यह उसके कर्मों में दिखाई देगी। व्यक्ति जिस भाव में विचार करता है उसकी सोच वैसी ही हो जाती है। यदि दो आदमी आपस में संवाद कर रहे हैं तो उनकी बातों से उनके विचारों से उनकी सोच को समझ सकते हैं। धैर्य व शांति से कही गई बात का असर गहरा होता है। उतावलेपन में कही गयी बात का प्रभाव नहीं पड़ता। हर विचार के पीछे कारण होता है और उसे पहचानना या उसका आधार होना जरूरी है। एक कहावत है कि जैसा सोचोगे वैसा बनोगे। इस छोटे से विचार में कितनी गहराई है। एक सकारात्मक दिशा है। इसे भाव के साथ समझा जाये तो व्यक्ति की जीवनशैली ही बदल जाए। अच्छे विचारों की उपयोगिता तब है जब उसे स्वभाव में ढाला जाए। विचारों की अभिव्यक्ति में भाव की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विचार एक सोच है तो भाव एक अहसास है। और दोनों का संतुलन ही आगे बढ़ने का स्त्रोत है। हमें अपनी व्यस्ततम दिनचर्या में अंर्तमन के भाव पहचानने की जरूरत है। क्योंकि विचार तो हमेशा चलते रहते हैं। सोचिए, समझिए व जानिए। इन्हीं शुभकामनाओं के. साथ।

श्रीमती दिव्या मंडलोई (नागर)

आपके पत्र

पाठकों की बेसब्री वाणी की लोकप्रियता का प्रमाण

समाजसेवियों द्वारा मध्यप्रदेश में प्रथम नागर महाकुंभ की सफलता की हार्दिक बधाई, माननीय मुख्यमंत्री शिवराजसिंहजी, जिन्होंने महाकुंभ के अवसर पर नागर समाज की भोपाल शाखा को धर्मशाला व छात्रावास हेतु भूमि आवंटित एवं इंदौर, मंदसौर, नीमच, झाबुआ, रतलाम आदि शाखाओं को भी निर्विवादित भूमि का प्रस्ताव देने पर भूमि आवंटन करने की घोषणा की व निर्माण में भी सहयोग देने का आश्वासन दिया। साथ ही शासकीय सेवा व विद्याध्यन हेतु सर्व ब्राह्मणों को जो गरीबी रेखा में हैं आरक्षण का नियम बनाने की घोषणा से समाजजनों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्रीजी का आभार माना। मैं महाकुंभ के शुभ अवसर पर अपना संदेश समाज को देना चाहता था, लेकिन इतने कम समय में सुंदर कार्यक्रम के साथ सभी उत्सुक समाजजनों का उद्बोधन संभव नहीं था। अतः मैं मेरी बात पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचा रहा हूं।

पत्रिका के प्रेरणास्त्रोत श्रद्धेय स्व. श्री शिवप्रसादजी शर्मा सा. एवं संस्थापिका स्व. श्रीमती प्रभादेवी शर्मा (बैन) को शत्-शत् नमन जिनके प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन 3 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ था। पत्रिका की प्रधान सम्पादिका श्रीमती संगीता शर्मा ने अपने सम्पादक मंडल एवं सहयोगियों के सहयोग से सम्माननीय श्री दीपक शर्मा एवं श्री पवन शर्मा, मनीषके कुशल मार्गदर्शन में 3 वर्ष के अल्प समय में देश में ही नहीं विदेश में भी समाज की गतिविधियों के सम्बंध में जानकारी पहुंचाने की एक मात्र सफल पत्रिका के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। मास समाप्ति के पश्चात सभी समाजजनों को हाटकेशवाणी का बेसब्री से इंतजार रहता है, दिनांक 8 तक पत्रिका नहीं मिलने पर फोन आने लग जाते हैं। झाबुआ शाखा के प्रयास से थांदला, पेटलावद, पिटोल के स्वजनों को पत्रिका के माध्यम से एक सूत्र में पिरोने का सफल प्रयास किया है एवं अगले कदम में आसपास के क्षेत्र में निवासरत व निकटतम राज्य गुजरात, राजस्थान एवं महाराष्ट्र के शेष समाजजनों में नई चेतना जाग्रत करने हेतु जय हाटकेशवाणी के माध्यम से संबद्ध किए जाने हेतु संकल्पित है।

राजेश नागर
अध्यक्ष नागर परिषद झाबुआ
मो. 94251-02276

जय हाटकेश वाणी पावन पत्रिका कल्पवृक्ष की भांति विकसित हो

सारंगपुर। आज के युग में सभी समाजजन एक सूत्र में बंधकर अपनी मान मर्यादा का पालन करते हुए अपनी गरिमा को अक्षुण बनाने में अग्रसर हो रहे हैं। वैसे ही आज 'जय हाटकेशवाणी' पत्रिका हमारे देश के समस्त नागर बंधुओं को एक सूत्र में बांधकर परमोन्नति की ओर अग्रसर कर रही है। यह पत्रिका तीन वर्ष पूर्ण कर अबाध गति से चतुर्थ वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। भगवान हाटकेश निरंतर हर माह इसकी संख्या में बढ़ोतरी करते रहें, यही विनय है।

दिनांक 9-5-10 को भोपाल में उक्त पत्रिका के तीन वर्ष पूर्ण होने पर जो समाज का सम्मेलन देखा वह अकथनीय है, हर कार्यकर्ता में जोश और उत्साह था वहां का आनंद देखकर मैं भावविभोर और गदगद हो गया और अनायास मन में कृष्ण भक्त नरसीजी मेहता का स्मरण आ गया, जिन्होंने इस कलुयग में भगवान हाटकेश्वर की असीम कृपा से श्री कृष्ण चंद्र के साक्षात दर्शन किये और उन्हीं के वंशज वट वृक्ष की विभिन्न शाखाओं से पल्लवित होकर एक सूत्र में होकर हमारे देश में अबाध गति से अग्रसर होते हुए समाज के गौरव को बढ़ा रहे हैं। श्री राजेन्द्र नागर ने बताया कि वे इस पत्रिका के प्रचार-प्रसार में तन, मन, धन से समर्पित होकर नित नये ग्राहक बनाकर इस पावन कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। सारंगपुर नगर में उन्होंने इस पत्रिका के शत-प्रतिशत सदस्य बना लिए हैं और वे राजगढ़ व शाजापुर जिला अंतर्गत सदस्य संख्या निरंतर बढ़ाने के प्रयास में लगे हुए हैं। सम्मानीय पवनजी शर्मा जो इस पत्रिका के प्रकाशक महो. हैं, उनके मृदु व सौम्य व्यवहार से हम अति प्रसन्न हैं, उनका सहयोग अतुलनीय है। भगवान हाटकेश्वर सभी नागर बंधुओं को सद्बुद्धि प्रदान करते हुए उन्हें एकता रूपी अक्षुण धागे में पिरोए हुए रखते हुए परमोन्नति की ओर अग्रसर करते रहे, यही सदाशिव से आत्मीय भरा अनुनय विनय करते हैं।

राजेन्द्रकुमार नागर
नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक
अम्बिकापुरी कॉलोनी, सारंगपुर
जिला राजगढ़ (व्यावरा) म.प्र.
मो. 9893408733

महाकुंभ के बहाने शक्ति प्रदर्शन

जयहाटकेशवाणी पत्रिका के सौजन्य से आयोजित नागर महाकुंभ (9 मई 2010 भोपाल) के सफल आयोजन की हम भूरि-भूरि प्रशंसा करते थकते नहीं। वाकई इस सफल कार्यक्रम की पावस बेला में संतोष शांति, प्रकाश, जागरण, आत्मबोध व स्वानुभूति के बीज प्रत्येक नागर बंधु के मन में अंकूरित हो उठे हैं। हमें अपना भान हुआ, अपनी शक्ति का पता चला कि हम भी किसी से कम नहीं है, आपको धन्यवाद।

जय हाटकेश वाणी पत्रिका ने जहां समाज को एक अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया, सामाजिक गतिविधियों से अवगत कराया, नई दिशा दी, वहीं जरूरत मंदों के लिए विभिन्न कोषों की स्थापना कर सहयोग प्रदान कर अपनी उपादेयता सिद्ध कर डाली. माननीय मुख्यमंत्रीजी श्री शिवराजसिंह ने अपनी गौरव गरिमा के अनुकूल ब्राह्मण समाज के उत्थान के परिपेक्ष में उनका जयघोष मैं उनकी चिंता व चिंतन व पीड़ा का प्रमाण मानता हूं। हमारी ओर से उन्हें बहुत सा आशीर्वाद। साधुवाद।किन शब्दों से इस आयोजन की प्रशंसा करें, शब्द तो बोने लगते हैं। मेरे सद्भाव, सद्भावना तथा सद्कामना हमेशा आपके साथ है व रहेगी। पत्रिका और ऊंचाइयां छुए। समाज उत्थान के प्रगति पथ पर समाज की दशा व दिशा बदलने में यह महाकुंभ मील का पत्थर सिद्ध होगा। इसी शुभकामना के साथ एक बार फिर सभी भागीदारों, भागीरथों को धन्यवाद।

रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन)

सहयोग एवं सौजन्यता की मूर्तियों की बदौलत सम्पन्न

महाकुंभ में अमरत्व की प्रेरणा

नागर कुंभ की विशेषता

❐ निर्धारित समय से प्रारंभ होकर उसी अनुसार समापन

❐ प्रतिभाओं को प्रोत्साहन हेतु मंच एवं अनुभवीजनों का सम्मान-वंदन।

❐ अतिथियों का भारतीय संस्कृति के अनुरूप कंकू से तिलक लगाकर अगवानी करना

❐ मंत्रियों एवं मुख्यमंत्री के आगमन हेतु कार्यक्रम को रोका नहीं गया।

भोपाल। किसी अच्छे कार्य का संकल्प यदि लिया जाए तो उसमें चौतरफा सहयोग प्राप्त होता है। जब भोपाल में प्रारंभिक दौर में जय हाटकेश वाणी का उत्सव नागर महाकुंभ के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया तो सर्वप्रथम पवन शर्मा ने वरिष्ठ पत्रकार श्री ओमप्रकाशजी मेहता से अपने मन की बात कही। पत्रकार श्री मेहता ने सहर्ष सहमति दी और कहा कि हाँ मैं सम्पूर्ण सहयोग दूंगा। इसी तारतम्य में अगली बार पवन शर्मा, मैं तथा श्री मेहताजी बैठे और तारीख तय कर ली। श्री मेहताजी ने अगली बार मुख्यमंत्रीजी एवं ब्राह्मण मंत्रियों को निमंत्रित करने के पत्र लेकर हम दोनों भाइयों को बुलाया तथा विधानसभा में ही सबसे मिलवा दिया। 18 अप्रैल को श्री ओमप्रकाशजी मेहता के निवास स्थान पर स्थानीय नागर बंधुओं की बैठक हुई और उसमें सभी आमंत्रितों ने उत्साह से हिस्सा लिया। जिसमें प्रमुख रूप से श्री वल्लभदासजी मेहता, श्री बालकृष्णजी मेहता, ओ.पी. दशोरा, श्री अशोक व्यास, श्री सुभाष व्यास, श्री मदनमोहन नागर, श्री बी.आर. मेहता, श्री अनिल मेहता उपस्थित थे। सभी से आयोजन के संबंध में सुझाव प्राप्त किए गए तथा निमंत्रण पत्र छापकर वितरण का कार्य शुरू कर दिया गया। उपरोक्त सब बातें प्रकाशित करने का उद्देश्य यह है कि आप यदि सही पहल करो तो बड़े से बड़ा काम आसानी से सम्पन्न हो जाता है। पत्रकार श्री मेहता के राजनीतिक एवं प्रशासनिक संबंधों का लाभ एक सफल आयोजन को करने में मिला, वहीं श्री अशोक व्यासजी की आयोजन के प्रबंध एवं संचालन क्षमता का भी भरपूर लाभ मिला। सांस्कृतिक आयोजन का संयोजन उनके जिम्मे ही कर दिया गया तथा उनके सफल संचालन को सबने सराहा। मैदानी स्तर पर भोपाल के युवाओं को एकजुट करने में श्री सुभाषजी व्यास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,

एक तीर-कई निशाने

❐ म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास विगत कई दिनों से प्रयासरत थे कि इंदौर नागर समाज के श्री आशीष त्रिवेदी के साथ वे एक मंच पर विराजित हों।

❐ समाज के हित के लिए हाटकेश्वर समाचार एवं जय हाटकेश वाणी के मिलकर कार्य करने का संदेश

❐ भोपाल में नागर समाज को सक्रिय करने के लिए उसमें युवाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता प्रतिपादित हुई।

भाई रविन्द्र शर्मा, मुकेश नागर एवं डॉ. पियुश व्यास, सुदेश नागर ने आमंत्रण-पत्र घर-घर भिजवाने की व्यवस्था की, बल्कि श्री सुभाषजी व्यास ने सभी स्थानीय निवासियों को फोन भी लगाए। किसी आयोजन को सफल बनाने के लिए उसकी कमान सही हाथों में सौंपने की जरूरत है, श्री सुभाषजी व्यास ने स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद घर-घर जाकर निमंत्रण-पत्र वितरित किए।

वरिष्ठ पत्रकार श्री ओमप्रकाश मेहता ने रवीन्द्र भवन निःशुल्क उपलब्धता के लिए संस्कृति मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा से सहयोग लिया, मेहमानों को ठहराने के लिए हिन्दी भवन में पांच कमरे आरक्षित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा मुख्यमंत्री, ऊर्जा मंत्री सहित अतिथियों को आमंत्रित करने, होटल अप्सरा में नाश्ते एवं भोजन की व्यवस्था सहित सभी कार्य सौजन्यता से कराने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। श्री ओ.पी. दशोरा ने जहां उपहार स्वरूप दिए जाने वाले बैग हेतु 1400 रु. का नकद सहयोग दिया, वहीं श्री सुभाष त्रिवेदी ने एक हजार पैकेट ठंडी छाछ की व्यवस्था की। भोपाल के सभी कार्यकर्ताओं ने अपना स्वयं का कार्यक्रम मानकर सहयोग दिया।

यह नागर महाकुंभ भोपाल के स्थानीय सहयोगियों की वजह से ही सफल हो पाया, जिन्होंने अपना भरपूर सहयोग दिया। जय हाटकेशवाणी परिवार इन सभी का हृदय से आभारी है। कार्यक्रम संयोजक श्री ओमप्रकाशजी मेहता का अपनापन एवं सहयोग अविस्मरणीय है, वहीं श्री अशोक व्यासजी का आयोजन प्रबंध क्षमता एवं संचालन अत्यंत प्रशंसनीय रहा। श्री सुभाषजी व्यास का उत्साह एवं युवाओं को जोड़ने की क्षमता, रवीन्द्र शर्माजी की तत्परता तथा युवाओं का आगे बढ़कर सहयोग करने की बात भुलाई नहीं जा सकेगी। आयोजन की सफलता का श्रेय इन्हीं सब को जाता है।

मुख्यमंत्री ने मेहताद्वय की प्रशंसा की

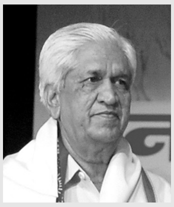

प्रदेश के जननेता, मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने वरिष्ठ पत्रकार श्री ओमप्रकाशजी मेहता एवं डॉ. अभय मेहता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि नागर समाज ने प्रदेश ही नहीं देश को महान विभूतियां दी हैं। श्री ओमप्रकाशजी मेहता ने पत्रकारिता के क्षेत्र में तथा डॉ. अभय मेहता ने चिकित्सा के क्षेत्र में उज्ज्वल, प्रशंसनीय कार्य किया है।

अमरत्व क्यों?

जिस प्रकार देवताओं एवं राक्षसों ने समुद्र मंथन के द्वारा अमृत की प्राप्ति की तथा जिस-जिस जगह अमृत की बूंद गिरी वहां-वहां महाकुंभ के आयोजन होते हैं। इसीलिए हाटकेश वाणी के कार्यक्रम को नागरकुंभ नाम दिया गया, क्योंकि य़हां जो कुछ हुआ वह अमरत्व का ही मामला है। समाज के निर्माण कार्यों में हमारा धन यदि लगता है तथा वहां हमारा नाम लिखा जाए तो वह लंबे समय तक याद रखा जाता है। महाकुंभ का मुख्य संदेश था कि निर्माण कहीं भी हो देशभर के नागर परिवार उनमें सहयोग देकर जल्दी से जल्दी कार्यों को पूर्ण करवा दें। मंगल कलश के माध्यम से समाजहित में नियमित बचत का प्रोत्साहन दिया गया। बच्चों में शैक्षणिक प्रतिभा के अलावा किसी विधा में रुचि हो तो गीत-संगीत, नृत्य के लिए प्रोत्साहन हेतु उन्हें मंच मिला तथा समाज के वरिष्ठ सेवानिवृत्त नागरिकों का वंदन इस उद्देश्य से किया गया कि परिवार एवं समाज उनका सम्मान करें तथा उनके अनुभवों का समाजहित में लाभ लेवें। सेवानिवृत्ति के पश्चात जीवनभर की कमाई में से कुछ हिस्सा समाज के निर्माण कार्यों में देकर अमर होने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जावे। आखिर जीवन के सम्पूर्ण कार्यों से निवृत्त ये अनुभवीजन वरिष्ठ नागरिक केवल सम्मान ही तो चाहते हैं।

मातृशक्ति का सहयोग रहा

कार्यक्रम संयोजक श्री ओमप्रकाशजी मेहता के साथ कार्यक्रम की तारीख तय करते समय यह पता नहीं था कि 9 मई को मातृदिवस है, यह एक संयोग था किंतु कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में मातृशक्ति का चमत्कारिक सहयोग एवं उपस्थिति महसूस की गई। भीषण गर्मी के बावजूद आशा से अधिक उपस्थिति, मुख्यमंत्री का आने का कार्यक्रम निरस्त होते-होते उनका आ जाना।भोजन की स्वादिष्टता, समस्त कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। अतः कार्यक्रम की रूपरेखा बनने से लेकर उसके सम्पन्न होने में मातृशक्ति का चमत्कारिक सहयोग रहा। मंच पर भी भगवान हाटकेश्वर एवं माँ सरस्वती की मूर्ति के साथ मातृशक्ति स्वरूप श्रीमती प्रभा शर्मा एवं श्री शिवप्रसादजी शर्मा को भी तस्वीर रूप में स्थापित किया गया था।

दीपक शर्मा

एकता और बचत का महाकुंभ

नागर महाकुंभ भोपाल से प्रेरणा,
ओम नाम विश्व मानव का,
कल्याण करने वाला है, दीपक की फैली रोशनी
जिसके प्रकाश से हो गया उजाला है।
ओम और दीपक ने नागर जनों का महाकुंभ लगाया।
थोड़े से बुलावे पर नागर समाज दौड़ा चला आया।
यह सुखद संदेश जय हाटकेशवाणी ने पहुंचाया।
धन्य है सब नागरजनों जो कई वर्षों से बिछड़े सदस्यों को मिलाया.
यह नागर महाकुंभ एक प्रेरणा की मिसाल बन गई।
एक रुपया रोज डालो कलश में
यह राशि मिल का पत्थर साबित हो गई।
भोपाल से मिली रोशनी एक जुटता का संदेश दे गई।
हम सब मिलकर करें काम, हर दिल में यह रोशनी पवन जैसी फैल गई।

के.पी. नागर
कर्मचारी कालोनी,
टोलनाका उज्जैन रोड, आगर मालवा

जो कहा वो किया

मंदसौर में धर्मशाला-छात्रावास निर्माण हेतु ५१ हजार रु. एकत्र

इंदौर। भोपाल में आयोजित नागर महाकुंभ में की गई घोषणा के अनुरूप नागर समाज के धर्मशाला, छात्रावास निर्माण हेतु निर्माण स्थान से दानराशि एकत्रित करने के साथ ही देशभर के नागर परिवारों के योगदान प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में सर्वप्रथम मंदसौर में धर्मशाला एवं छात्रावास निर्माण हेतु 51000 रुपए की राशि विभिन्न स्थानों से एकत्र की गई है। वरिष्ठ समाजजनों के सहयोग से मंदसौर में 2400 स्क्वेयर फीट भूमि प्राप्त हुई थी, जहां हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण किया जा चुका है तथा धर्मशाला, छात्रावास के रूप में 3 मंजिलों में 24 कमरों का निर्माण प्रस्तावित है, जिसका नक्शा विधिवत स्वीकृत कराया जा चुका है। चूंकि मंदसौर नगर में इतने अधिक नागर परिवार नहीं हैं कि केवल उन्हीं के आर्थिक सहयोग से धर्मशाला-छात्रावास का निर्माण हो सके। अतः मासिक जय हाटकेश वाणी के माध्यम से देशभर के नागर परिवारों से आर्थिक योगदान प्राप्त करने की पहल की गई है, जिसके अंतर्गत पहले चरण में 15 नागर परिवारों से 51000 रुपए की राशि एकत्रित की गई है। सभी परिवारों ने अत्यंत उत्साह के साथ अधिकाधिक राशि की घोषणा की, वहीं विशेष उल्लेखनीय बेरछी आश्रम के पं. राजेश्वर नागर, खजराना के पं.अशोक भट्ट, नागदा के विजयप्रकाशजी मेहता, इंदौर के राजेन्द्रजी नागर ने अतिरिक्त सदाशयता के साथ उल्टा प्रश्न किया कि आप जितनी चाहें उतनी राशि लिख लेवें, किंतु इसमें अधिकाधिक परिवारों का सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से अधिकाधिक 11000 रु. पं. श्री राजेश्वरजी से प्राप्त किए गए। भोपाल महाकुंभ में आगंतुकों का स्वागत भारतीय संस्कृति परिवेश में कुंकू का तिलक लगाकर किया गया तथा शगुन के रूप में उसमें प्राप्त 1853 रु. भी मंदसौर धर्मशाला हेतु भेंट कर दिए गए।

सांसद निधि से सहयोग प्राप्त करने का प्रयास

मासिक जय हाटकेशवाणी ने पहल की है कि जहां-जहां भी नागर समाज के पास धर्मशाला-मंदिर, छात्रावास के लिए भूखंड उपलब्ध हैं, वहां-वहां आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए वह प्रयास करेंगे। जो भी नागर परिवार मंदसौर में निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहते हैं वे जय हाटकेश वाणी के माध्यम से अथवा अध्यक्ष नागर ब्राह्मण धर्मशाला एवं ट्रस्ट के पक्ष में चेक /ड्राफ्ट भेज सकते हैं। साथ ही समाजसेवी श्री अमिताभजी मंडलोई उपरोक्त धर्मशाला हेतु सांसद निधि से सहयोग प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय सांसद मिनाक्षी नटराजन से सम्पर्क कर रहे हैं। जय हाटकेश वाणी का आह्वान है कि सभी नागर परिवार यथासंभव सहयोग देकर धर्मशाला छात्रावास निर्माण को गति प्रदान करें। ताकि एक स्थान पर निर्माण पूर्ण होते ही अगले स्थान पर निर्माण की प्रक्रिया शुरू की जा सके।

–पवन शर्मा

मंदसौर में धर्मशाला-छात्रावास में सहृदय योगदान देने वाले महानुभावों की सूची

1.	पं. श्री राजेश्वरजी नागर (बेरछी)	11000
2.	श्री राजेन्द्र गिरिजाशंकरजी नागर (इंदौर)	5111
3.	श्री विजयप्रकाशजी मेहता (नागदा)	5001
4.	श्री आशीष राय साहब दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी (पूर्व घोषित) इंदौर	5001
5.	श्री संजय शंकरलालजी नागर (इंदौर)	5001
6.	श्रीमती माणकबेन प्रहलाद भट्ट (खजराना)	5001
7.	श्री सुभाष नंदलालजी व्यास (भोपाल)	5000
8.	श्री दीपक शिवप्रसादजी शर्मा (इंदौर)	2226
9.	भोपाल में आगंतुकों से प्राप्त राशि	1853
10.	श्री उमेश शरदचंद्रजी झा (राऊ)	1111
11.	श्री विनोद दुर्गाशंकरजी नागर (इंदौर)	1100
12.	श्री कन्हैयालालजी नागर (राऊ)	1100
13.	श्री सूर्यकांतजी नागर (इंदौर)	1000
14.	श्री विवेकजी मंडलोई (अहमदाबाद)	501
15.	श्री विवेकजी दुबे (इंदौर)	500
16.	श्री ओमप्रकाशजी त्रिवेदी (रतलाम)	500

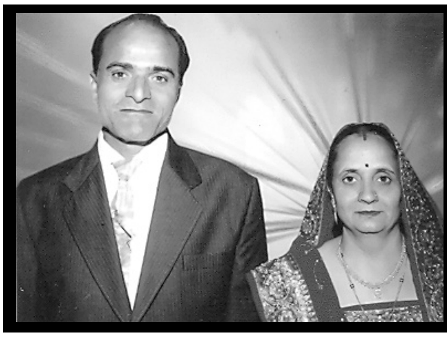

श्री गिरिजाशंकर नागर को राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा बधाई

राऊ। श्री गिरिजाशंकरजी नागर एवं श्रीमती माया नागर की विवाह वर्षगांठ 24 मई के अवसर पर मासिक जय हाटकेश वाणी के आजीवन संरक्षक बनने पर अखिल भारतीय नागर परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलीपभाई मांकड़ सहित अनेक गणमान्य समाजबंधुओं ने उन्हें बधाई प्रेषित की है। ज्ञातव्य है कि श्री गिरिजाशंकरजी नागर ने आजीवन संरक्षक की सहयोग राशि 11000 रुपए नगद जय हाटकेश वाणी प्रबंधन को प्रदान कर दिए हैं। श्री नागर समाज कार्य में सदैव तत्पर रहते हैं।

धर्मशाला को एक लाख रुपए का दान

नरसी जयंती पर किया गया दानवीर पं. नानूरामजी नागर का सम्मान

उज्जैन। परमार्थ के लिए दान देना अमरत्व की दिशा में एक कदम बढ़ाने जैसा है, साथ ही दान की सार्थकता उस समय अधिक सिद्ध होती है, जब उससे प्रोत्साहित होकर अन्य समाजजन भी तन-मन-धन से सहयोग करने के लिए प्रेरित होते हैं। ऐसा ही अनुकरणीय कदम ग्राम सारखेड़ी (उज्जैन) के निवासी पं. श्री नानूरामजी नागर ने उठाते हुए नागर ब्राह्मण धर्मशाला एवं मंदिर न्यास हरसिद्धि की पाल उज्जैन को एक लाख रु. की दानराशि भेंट की, इस उपलक्ष में उनका सपत्निक सम्मान नरसी मेहता जयंती के अवसर पर किया गया।

पं. श्री नानूरामजी नागर एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला बेन नागर ने नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर एवं धर्मशाला में यात्रियों की सुविधा के लिए वाटर कूलर लगाने, स्वचलित आरती वाद्य यंत्र खरीदने एवं अन्य आवश्यक कार्यों हेतु एक लाख रुपए की धनराशि देकर अनुकरणीय कार्य किया है। इस उपलक्ष्य में नागर समाज द्वारा सुप्रसिद्ध भक्त नरसी मेहता की जयंती पर नागर धर्मशाला में दैनिक अवंतिका के प्रधान सम्पादक एवं नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र नागर एवं म.प्र. नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र नागर ने दानवीर समाजसेवी पं. नानूरामजी नागर एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला बेन नागर का शाल, श्रीफल एवं पुष्पहार भेंट कर सम्मान किया। प्रारंभ में ट्रस्ट के सचिव एवं गायत्री परिवार उज्जैन के वरिष्ठ सदस्य डॉ. रामरतन शर्मा ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ नागर दम्पति के हाथों भगवान हाटकेश्वर एवं नरसी मेहता का पूजन करवाया। इस अवसर पर नागर ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ सदस्य सर्वश्री संतोष जोशी, जगदीश नागर, रामप्रसाद नागर (नारिया), सुरेश रावल, हरिशंकर नागर, राधेश्याम नागर, रामेश्वर नागर तथा प्रमोद नागर सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

पण्डित नानूराम जी नागर का परिचय

शाजापुर जिलें में मक्सी के पास स्थित ग्राम कपालिया में श्री मांगीलाल जी नागर एवं श्रीमती पुनीबाई के घर जन्में पण्डित श्री नानूराम जी नागर का विवाह ग्राम नारिया (बकानिया) निवासी श्री भागीरथ जी रावल ''डेलची वाले'' की इकलौती पुत्री सीताबाई के साथ हुआ था। भागीरथ जी की अन्य कोई संतान नहीं होने से नानूराम जी अपने ससुर जी की सेवा करने की पवित्र भावना लेकर ग्राम कपालिया छोड़कर घर जमाई के रूप में नारिया आ गये थे। चूँकि भागीरथ जी की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमजोर होने के बावजूद भी नानूराम जी ने हाड़ तोड़ मेहनत कर जंगल में मंगल कर दिया किन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था हंसते खेलते नानूराम जी के इस परिवार पर अचानक वज्रपात हुआ और उनकी अर्धांगिनी श्रीमती सीताबाई का बीमारी से स्वर्गवास हो गया। अपनी पत्नी के निधन से नानूराम जी हताश हो चुके थे ऐसी अवस्था में स्वयं नानूराम जी के ससुर श्री भागीरथ जी ने उनका दूसरा विवाह करने का निर्णय कर लिया और उन्होंने ग्राम बरखेडा निवासी श्री जगन्नाथ जी नागर एवं श्रीमती नानीबाई नागर की सुयोग्य सुपुत्री श्रीमती शकुन्तला बेन नागर के साथ उनका विवाह करवा दिया। शकुन्तला बाई ने नारिया आकर अपने पति के साथ अपने धर्म पिता भागीरथ जी की खूब सेवा की दोनों पति - पत्नी ने लगन एवं मेहनत से कार्य कर अपनी गृहस्थी को संवार लिया। नानूराम जी नारिया से रोज सुबह 4 बजे सायकल से उज्जैन दूध लेकर जाते फिर गांव वालों का गल्ला बेलगाडी में भरकर उज्जैन मंडी में बेचने ले जाते उसके बाद बाकी समय में अपनी खेती गृहस्थी का कार्य करते । इस प्रकार वे रोज करीब 18 घंटे मेहनत करते थे। उनकी मेहनत रंग लाई आज भगवान का दिया हुआ इनके पास सब कुछ है तीनों बच्चे हरिवल्लभ, राधेश्याम एवं रामेश्वर अपने माता पिता के पदचिन्हों पर चलकर अपने परिवार के पालन पोषण के साथ ही समाज सेवा में जुटे हुए हैं। ऐसे तपस्वी एवं दयालु श्री नानूराम जी नागर ने नागर ब्राहम्ण समाज को एक लाख रूपये दान कर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुति संतोष जोशी
सहसचिव
मो. 94259-17541

श्री सूर्यकांत नागर ने जारी किया मृत्यु संबंधी घोषणा पत्र

इंदौर। इंदौर नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सूर्यकांतजी नागर ने मृत्यु संबंधी घोषणा-पत्र जारी किया है, जिसमें उन्होंने उल्लेखित किया है कि मेरी मृत्यु के पश्चात दाह संस्कार एवं अस्थि विसर्जन के अतिरिक्त कोई कर्मकांड नहीं किया जाए। मृत्यु भोज भी नहीं किया जाए। अधिक से अधिक चौथे दिन शांति पाठ कर शोक समाप्त कर दिया जाए। मंदिरों के बाहर बैठे गरीब एवं भिक्षुओं को भोजन सामग्री वितरित की जाये। इसके अतिरिक्त 15हजार रु. नागर समाज परिषद इंदौर को अन्यथा किसी साहित्यिक या पारमार्थिक संस्था को विनम्र भेंट स्वरूप दी जावे।

घोषणा-पत्र में श्री नागर ने सभी मित्रों, परिवाजनों, संबंधितों से आग्रह किया है कि मेरी अंतिम इच्छा मानकर इसी के अनुरूप कार्यवाही की जावे। इस घोषणा पत्र की प्रतियां पहले से ही अपने संबंधियों, मित्रों को और जानकारी हेतु प्रेषित कर रहा हूं, ताकि वे साक्षी बन सकें। अंत में श्री नागर ने यह भी आग्रह किया है कि यदि नजदीक में विद्युत शवदाह गृह की व्यवस्था हो तो मेरा अंतिम संस्कार उसी में किया जावे तथा मेरे शव पर कोई अतिरिक्त वस्त्रादि नहीं ओढ़ाया जाए।श्री नागर ने उपरोक्त घोषणा-पत्र जारी कर समाज के लिए अनुकरणीय कार्य किया है। समाज सुधार की दिशा में अन्य समाजबंधु भी यदि इस प्रकार का घोषणा-पत्र जारी करें तो वह प्रशंसनीय कदम माना जावेगा।

सम्पादक

पं. राजेश्वरजी नागर की सहृदयता

बेरछी। पं. राजेश्वर नागर का नाम अब इस प्रदेश के लिए अपरिचित नहीं है। स्वयं के बलबूते पर धर्म की ध्वजा लेकर गांव-गांव तक पहुंचे एवं स्वनिर्मित

व्यक्तित्व पंडितजी की सहृदयता उस समय देखने को मिली जब मंदसौर में प्रस्तावित धर्मशाला निर्माण के लिए उनसे आर्थिक सहयोग की अपेक्षा की गई। उन्होंने आगे बढ़कर सर्वाधिक 11000 रुपए का आर्थिक सहयोग प्रदान किया एवं भविष्य में भी कहीं भी नागर समाज के निर्माण में सहयोग देते रहने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

हाटकेश्वर मंदिर वड़नगर में सुविधा के लिए आगमन से पूर्व फोन करें

गुजरात की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राचीन नगर वडनगर में नागर, वणि और श्री नागरा नागरों का मूल प्रागट्य स्थल है। इस भव्य देवालय का निर्माण करीब 600 वर्ष पूर्व हुआ था तथा समग्र विस्तार का पुनरोद्धार कार्य ट्रस्ट की ओर से शुरू हो गया है। प्रथम चरण में देवालय की बाह्य दीवार जो धूल से और गर्भगृह के धुएं से काली पड़ गई थी कि सफाई का काम पूरा किया है। दूसरे चरण में संगमरमर लगाने तथा अद्यतन टाईलेट बनाने का कार्य गति में है। अभी और पुनरोद्धार का कार्य बाकी है जैसे कि अतिथिगृह की हरेक रूम में टाइलेट व्यवस्था, मुख्य प्रवेश द्वार, सभाखंड, माताजी का मंदिर की भव्यता, मुख्य देवालय की बाह्य दीवार के खराब पत्थर बदलना, खंडित प्रतिमाओं के स्थान परल नई प्रतिमाओं की स्थापना, अध्यतन रसोईगृह इन सब कार्यो के लिए आप सबके सहयोग की आवश्यकता है। आप जो सहयोग देंगे वह स्वीकार्य है. मगर आप जो चेक या ड्राफ्ट से आर्थिक सहयोग देना चाहते हैं वो किसी के नाम पर नहीं भेजते हुए श्री हाटकेश्वर महादेव संस्थान मु. वडनगर जिला मेहसासाणा पीनकोड 384355 के नाम से भेजना। आपको आर्थिक सहयोग की रसीद प्राप्त हो जाएगी।

आप जब वडनगर आएं तो कार्यालय में सम्पर्क अवश्य करें। आप पहले से फोन करेंगे तो आपको जो सुविधा चाहिए वो प्राप्त हो जाएगी। आप 02761-223901, 222419, 222857 या 02762-250929 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ट्रस्टी
श्री हाटकेश्वर महादेव
संस्थान वडनगर (गुज.)

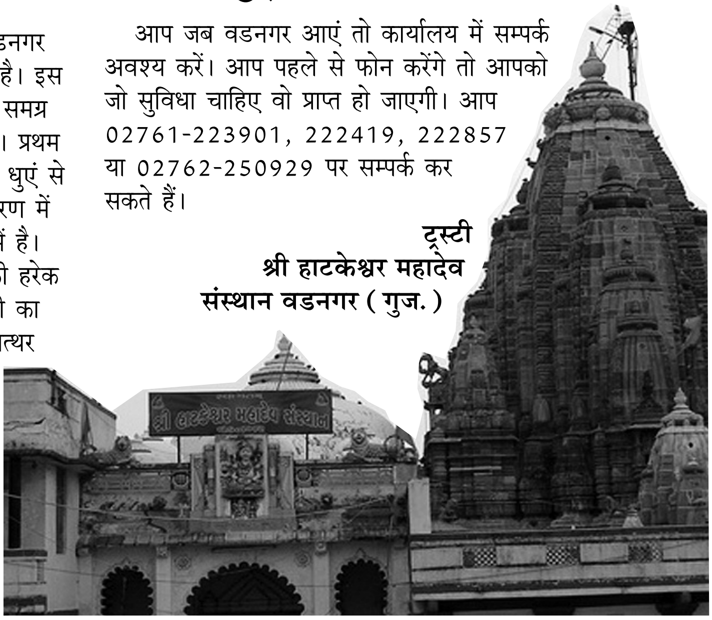

सिकंदराबाद में युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं यज्ञोपवित संस्कार का आयोजन

सिकंदराबाद (आंध्रप्रदेश)। स्वर्णिम गुजरात के उपक्रम में श्री दक्षिण भारत गुजराती ब्रह्म समाज के नेतृत्व में श्री गुजराती ब्रह्म समाज (आ.प्र.) द्वारा हैदराबाद, सिकंदराबाद में समस्त गुजराती युवक-युवती परिचय सम्मेलन तथा सामूहिक यज्ञोपवित कार्यक्रम का आयोजन आगामी 27-28 जून 2010 को रखा है।

गुजरात के लोकप्रिय हास्य कलाकार टीवी के माध्यम से देश-विदेश में बसे हुए गुजरातियों के दिल पर राज करने वाले गुजरात और गुजराती भाषा के प्रखर हिमायती श्री सांईराम दवे के द्वारा मनोरंजन से भरपूर 'हास्य दरबार' कार्यक्रम रखा गया है। यह कार्यक्रम 27 जून रविवार को शाम 6 बजे हरिहर कला भवन (आडिटोरियम) में आयोजित किया गया है।

पांचवा युवक-युवती परिचय सम्मेलन

गुजरात से अन्यत्र बसे हुए गुजरातियों की संतानों के लिए योग्य-पात्र का चयन करना दुर्गम होता जाता है, इसका ध्यान रखते हुए श्री गुजराती ब्रह्म समाज (आंप्र) श्री गुजराती सेवा मंडल हाल जीरा, आर.पी. रोड सिकंदराबाद में 27 जून 2010 रविवार को सुबह 8 बजे युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया है। परिचय मेला ऐसा स्टेज है, जिसमें एक-दूसरे का परिचय होता है, प्रत्यक्ष देखने का अवसर तथा विचारों का आदान-प्रदान होता है। हमारे चौथे परिचय सम्मेलन में 15 युवक-युवतियों ने विवाह कर नवजीवन प्रारंभ किया। आशा है ज्यादा से ज्यादा युवक-युवती इस परिचय सम्मेलन का लाभ लेंगे। परिचय सम्मेलन के अवसर पर एक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। ये फार्म सम्पूर्ण जानकारी भरकर 10 जून 2010 तक हैदराबाद-सिकंदराबाद पहुंचाना जरूरी है। रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 501 डिमांड ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा ही भेज सकते हैं। जो गुजराती ब्रह्म समाज (आंप्र) के पक्ष में बने हों।

ग्यारहवां सामूहिक यज्ञोपवित कार्यक्रम

मनुष्य जीवन के सोलह संस्कार में से एक मुख्य संस्कार है यज्ञोपवित, यज्ञोपवित के तीन धागों में से एक ब्रह्मा, दूसरा विष्णु, तीसरा महेश का प्रतीक है, इन्हें धारण करने की विधि को उपनयन संस्कार कहते हैं। इस उपनयन संस्कार के कार्यक्रम में अन्य ब्राह्मण भी हिस्सा ले सकते हैं। यह कार्यक्रम 28-06-2010 को सुबह 6.30 बजे सोमवार श्री गुजराती सेवा मंडल हॉल, जीरा, आर.पी. रोड पर होगा। इस कार्यक्रम की रजिस्ट्रेशन फीस निम्नानुसार रहेगा। नागर ब्राह्मण बटुक 2100 रुपए, अन्य ब्राह्मण 3100 रुपए। इस हेतु आवेदन पत्र पूर्व में भरकर भेजना होंगे। जिसमें सम्पूर्ण जानकारी भरकर शुल्क (नकद, चेक, डिमांड ड्राफ्ट) निम्न पते पर 10 जून 2010 तक पहुंचा देवें।

श्री विपीनभाई दवे
जग्स एंड कं., 5-5-14, रानीगंज सिकंदराबाद
मो. 09490020000

नोट

परिचय सम्मेलन एवं यज्ञोपवित के आवेदन जय हाटकेश वाणी कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

इलाहाबाद की खबरें

- पानीपत निवासी श्री सत्यप्रकाश नागर के सुपुत्र श्री बालेश्वर नागर एवं स्व. सौ. अर्चना नागर के सुपुत्र श्री अतुल नागर एवं सौ. दीक्षा नागर को दिनांक 6 अप्रैल 2010 को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।
- श्री सत्यप्रकाशजी नागर को प्रपौत्र प्राप्ति एवं श्री बालेश्वरजी नागर को पौत्र प्राप्ति पर नाना-नानी, मामा, मामी, मासाजी की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

नित्यानंद नागर

पांच दिवसीय समारोह सम्पन्न

पूजन-अर्चन के साथ सम्मान एवं सांस्कृतिक आयोजन

बांसवाड़ा। नमामी नाटकेश ने भजामी हाटकेश ने... के जयघोष के साथ पांच दिवसीय हाटकेश्वर बाबा का पाटोत्सव कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ 29 मार्च को सम्पन्न हुआ। ब्रह्म मुहूर्त से ही गुरु महाराज श्री केशवाश्रमजी द्वारा स्थापित प्राचीन शिवलिंग का जलाभिषेक प्रारंभ हुआ। बाद में भव्य मनोहारी शृंगार के पश्चात महाआरती आरंभ हुई और समय से पूरा नागर समाज हाटकेश्वर बाबा के चरणों में नतमस्तक था। भजनों का दौर चला और भक्तगण भावविभोर हो गये। इसके तुरंत पश्चात नागर समाज के स्वयंभू श्री निलकंठेश्वर महादेव में आरती का दौर चला। देवालय में इतने भक्तों के खड़े रहने का स्थान नहीं है इसलिए पूरी सड़क त्योहार मनाने आये भक्तों से भरी हुई थी। एक-दूसरे को बधाई का दौर समाप्त कर सभी अपने हम उम्र लोगों की टोली के रूप में प्रस्थान किया। दोपहर में पुनः आचार्य कृष्णकांतजी के निर्देशन में सभी विप्रवरों ने रूद्राभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न करवाया। सायं पुनः नागरवाड़ा स्थित हाटकेश्वर मंदिर से गाजेबाजे के साथ वरघोड़ा (सवारी) निकाला गया। श्रद्धालु शिवभजन करते हुए गणेश मंदिर, श्रीजी मंदिर, निलकंठेश्वर मंदिर, पीपली चौक, रामदरबार मंदिर, दुर्लभ विलासी मंदिर, रूद्रेश्वर और केशवाश्रम मंदिर होते हुए पुनः हाटकेश्वर मंदिर में महाआरती के लिए एकत्रित थे। महाप्रसाद का कार्यक्रम नव शृंगारित दुर्लभवाटिका में आयोजित हुआ, जिसमें परम्परानुसार सभी पीताम्बर और मोगरे की माला धारण उपस्थित हुए, वहीं महिलाओं ने गजरे धारण कर महाप्रसाद की आनंद लिया। कार्यक्रम की इस शृंखला में शायद ही किसी के मन में विश्राम का विचार आया होगा। यही हमारे आराध्य की आराधना का जुनून और जोश था। नागरवाड़ा गेट और हाटकेश्वर मंदिर तक और मंदिर परिसर में रंग-बिरंगी फर्रियों नन्ही लाइट और फूलों से अद्भुत सजावट की गई थी। कार्यक्रम ग्यारस से पूर्णिमा तक प्रातः -सायं महाआरती का तय रहता था।

प्रस्तुति- मंजू प्रमोदराय झा, बांसवाड़ा

पीपलरावां में नवनिर्मित सभागृह का शुभारंभ पं. श्री नागरजी करेंगे

पीपलरावां।नागर परिषद शाखा पीपलरावां के अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर (पत्रकार) के अनुसार स्थानीय नागर धर्मशाला में नवनिर्मित विशाल सभागृह का शुभारंभ मालवा माटी के सपूत, नागर रत्न पं. श्री कमलकिशोरजी नागर श्री हाटकेश्वर धाम (सेमली आश्रम) के कर कमलों द्वारा 13 जून 2010 (रविवार) को समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा है। समारोह की अध्यक्षता श्री अमिताभ मंडलोई (पूर्व निदेशक भारी उद्योग मंत्रालय भारत सरकार) करेंगे। इस हेतु व्यक्तिशः निमंत्रण -पत्र पृथक से प्रेषित किये गये हैं।

कार्यक्रम

प्रातः 9 से 11 तक	इष्ट देव श्री हाटकेश्वर पर गोदुग्धाभिषेक एवं आरती।
प्रातः 11 से 12 तक	श्री हाटकेश्वर के मुखौटे की शोभायात्रा
मध्यान्ह 12 से 1 तक	बाल सांस्कृतिक कार्यक्रम
मध्यान्ह 1 से 4 तक	सभागृह का शुभारंभ, स्मारिका का विमोचन एवं दानदाताओं का सम्मान समारोह।
अपरान्ह 4 से	महाप्रसाद (भोजन) एवं विदाई।

स्थान - नागर (ब्राह्मण) धर्मशाला पीपलरावां

त्रिभुवनलाल मेहता — **उपाध्यक्ष**
राजेन्द्रकुमार शुक्ला — **कोषाध्यक्ष**
हरिनारायण नागर — **अध्यक्ष**

प्रत्येक नगर की निर्देशिका प्रकाशित करने की प्रेरणा

उज्जैन। श्री हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण मंडल दिल्ली द्वारा दिल्ली नागर ब्राह्मण दिग्दर्शिका 2010 का अत्यंत ही प्रभावशाली प्रकाशन हुआ। सम्पादक श्री विनोदकांत नागर डी-56 न्यू सरस्वती सैक्टर 9, रोहिणी दिल्ली द्वारा मुझे डायरेक्टरी प्राप्त हुई। इस दिग्दर्शिका में दिल्ली, मेरठ, नोएडा, गाजियाबाद एवं फरीदाबाद (हरियाणा) के नागरों के घरों के पते तथा फोन नंबर सहित विस्तृत जानकारी है। इस डायरेक्टरी में लगभग 443 परिवारों के पते हैं। दिल्ली के नागरबंधु इस कार्य के लिए प्रशंसा ही नहीं प्रेरणा के पात्र भी हैं।

सम्पादक श्री विनोदकांत नागर ने पत्र के द्वारा मुझे कहा है कि आप जयहाटकेशवाणी मासिक पत्रिका इंदौर द्वारा समाज के समाजसेवियों से कहें कि वे भी अपने-अपने नगर की एक ऐसी डायरेक्टरी तैयार करें, ताकि किसी भी नगर के नागर बंधु की जानकारी प्राप्त हो सके। श्री विनोदकांतजी ने यह भी बताया कि पूरे भारत में जैसे हाटकेश्वर जयंती मनाई जाती है। वैसे ही नरसिंह मेहता जयंती भी प्रतिवर्ष पूरे भारत में एक साथ एक ही दिन प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सप्तमी को मनाई जावे तो समाज की एकता प्रदर्शित होगी।

डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता
एम-1/7, एम.बी.ए. क्वाटर्स
विक्रम विश्वविद्यालय परिसर उज्जैन

आईस्क्रीम बनाना सीखा और जीवदया का संकल्प लिया

रतलाम। नागर महिला मंडल शाखा रतलाम ने 17 अप्रैल को महिला मंडल की अध्यक्ष सुश्री मंगला दवे एवं समस्त महिला मंडल की उपस्थिति में विभिन्न प्रकार की आइस्क्रीम एवं कुल्फी बनाने की विधि श्रीमती बिंदु प्रदीप मेहता एवं श्रीमती कल्पना विभाष मेहता के द्वारा बताई गई। जिसमें सभी महिलाओं ने विशेष रुचि के साथ भाग लिया। इस अवसर पर नागर महिला मंडल की अध्यक्ष द्वारा पक्षियों के लिए दाना-पानी के लिए सभी महिलाओं को सकोरे वितरित किए गए तथा उनके भोजन के लिए अन्न बाजरा एवं अनाज के पैकेट्स श्रीमती बिंदु मेहता द्वारा सभी महिलाओं को वितरित किए गए। इस अवसर पर सुश्री दवे ने कहा कि पक्षियों से दोस्ती कर जीव की रक्षा करें तथा पक्षियों के दाना-पानी हेतु सभी समाजजन अपने घरों में सकोरे की व्यवस्था कर दाना-पानी की व्यवस्था करें और इसे अपनी जिम्मेदारी समझें। यदि आपने जिम्मेदारी समझ ली तो कोई भी पक्षी भूखा, प्यासा नहीं मरेगा। सभी ने दाना पानी का संकल्प लिया। सुश्री दवे ने कहा कि संसार में सभी प्राणियों को जीवित रहने का अधिकार है तथा भगवान ने धरती पर रहने का अधिकार दिया है। सबसे अधिक मनुष्य ही भाग्यशाली हैं, हम मनुष्य हैं और हमें सबकी सेवा का मौका मिला है, इसलिए पशु-पक्षियों की सेवा करना चाहिए। उनके लिए जल व भोजन उपलब्ध कराना हमारा कर्त्तव्य है। महिला मंडल के कार्यक्रम में समाज की वरिष्ठ महिलाओं एवं युवा महिलाओं ने बड़ी संख्या में रुचि के साथ भाग लिया।

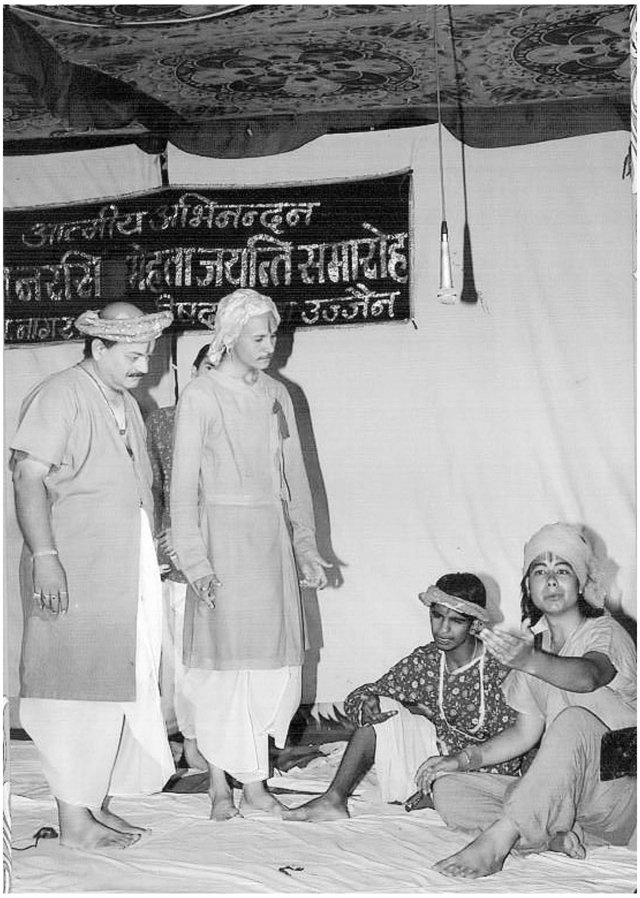

संत नरसी जयंती पर महानाट्य का मंचन

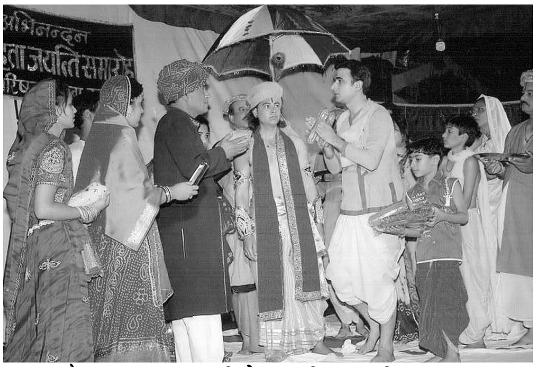

उज्जैन। प्रवर संत नरसी मेहता की 604वीं जयंती म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा उज्जैन के तत्वावधान में दिनांक 27 मई 2010, गुरुवार को नागर धर्मशाला, उर्दूपुरा पर विभिन्न धार्मिक आयोजन के साथ मनाई गई। सर्वप्रथम बम्बा खाना ट्रस्ट अध्यक्ष डॉ. जी.के. नागर, परिषद अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, हरसिद्धि ट्रस्ट सचिव डॉ. रामरतन शर्मा, महिला मंडल अध्यक्ष डॉ. अरुणा व्यास, युवक परिषद अध्यक्ष मनीष मेहता, बाल व्यास भागवताचार्य श्री राधारमण नागर, डॉ. नरेन्द्र नागर ने भगवान हाटकेश्वर के मुखौटे व संत नरसी मेहता के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन व पूजन-अर्चन किया। इसके पश्चात बाल व्यास भागवताचार्य श्री राधारमणजी नागर एवं उनके साथियों ने भजन प्रस्तुत किये। जब आचार्य श्री नागर भजन प्रस्तुत कर रहे थे, तब परिसर में उपस्थित सभी नागर बंधु झूम उठे व भक्ति में ओत-प्रोत हो गये। (आचार्य श्री राधारमणजी नागर ने उज्जैन व भारत वर्ष के हर कोने में भागवत कर धर्म का प्रचार किया। इनकी वाणी में अद्भुत जादू है।) भजन के पश्चात मुख्य अतिथि सांसद श्री प्रेमचंद गुड्डू ने भगवान हाटकेश्वर पर पुष्प माला अर्पित की व उसके पश्चात पं. मनोहर शुक्ल द्वारा वैष्णवजन भजन की प्रस्तुति दी गई। सांसद श्री प्रेमचंद गुड्डू का स्वागत श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, डॉ. जी.के. नागर, डॉ. रामरतन शर्मा, डॉ. अरुण व्यास, मनीष मेहता द्वारा किया गया। मोक्ष अकादमी द्वारा भक्त नरसी मेहता के जीवन चरित्र पर नहानाट्य का मंचन किया गया, जिसके निर्देशक श्री गजेन्द्र नागर थे जो कि मोक्ष अकादमी के निदेशक भी हैं।

महादेव मंदिर में गणेश प्रतिमा की स्थापना

रतलाम। अलकापुरी स्थित लीलाधर महादेव मंदिर में गणेश प्रतिमा की स्थापना निनोर निवासी श्री महेश व्यास-सौ. हेमा व्यास द्वारा की गई। इस दौरान 7 दिवसीय धार्मिक आयोजन सम्पन्न हुए, जिसमें नानी बाई का मायरा। गाय-केड़े की शादी, गंगाजल, गांव के दो बच्चों का यज्ञोपवित स्वर्गीय आनंदीलालजी एवं शकुंतलादेवी की स्मृति में किया गया।

राजा-महाराजाओं की तरह हुआ सामूहिक ब्याह

नागर समाज के तीन जोड़े भी सम्मिलित हुए

इंदौर। सर्वब्राह्मण परिणय उत्सव समिति द्वारा आयोजित 101 कन्याओं के साक्षी गणमान्य नागरिकों सहित 50 हजार से अधिक विप्र बंधु रहे। चल समारोह में सभी वर घोड़ी पर सवार थे, जबकि कन्याएं बग्घियों में बैठी थीं। हजारों की संख्या में बाराती बैंड की धुन और ढोलक की थाप पर रास्ते भर थिरकते चल रहे थे। विवाह स्थल पर बने विशाल पांडाल में ही सभी जोड़ों के फेरे अलग-अलग बनाए गए मण्डपों में 101 विद्वान पंडितों ने सबकी कुल परम्परा के अनुसार फेरे कराए। देर रात बारात व वर-वधू की सजी हुई टेक्सी से विदाई की गई। खास बात यह कि नागर समाज के छह परिवार अर्थात कुल तीन जोड़े भी इस विवाह समारोह में सम्मिलित हुए तथा राजसी परिवेश में हुए विवाह समारोह का लाभ लिया।

सामूहिक विवाह की विशेषताएं

- ❐ 50 हजार से अधिक ब्राह्मण बने साक्षी।
- ❐ 101 मण्डपों में बनी 101 बेदी पर 101 पंडितों ने कराए 101 जोड़ों के फेरे।
- ❐ मंत्रोच्चार से गूंजा विशाल पांडाल।
- ❐ 101 युगलों ने पहनाई एक-दूसरे को वरमाला।
- ❐ ढाई किमी लम्बा निकला ऐतिहासिक चल समारोह।
- ❐ स्वागत मंच, वंदनवार से सजा चल समारोह मार्ग।

१५१ से अधिक ग्रह उपयोगी वस्तुओं की भेंट

❐ दो तोला सोने के आभूषण भेंट किए, जिसमें मंगल सूत्र, कंगन, टॉप्स, नाक का कांटा, टीका, चांदी की पायल, बिछुड़ी, रंगीन टीवी, 51 से अधिक बर्तन, पलंग, बिस्तर, आलमारी, सिलाई मशीन, गैस कनेक्शन, फ्रीज, वाशिंग मशीन, मिक्सर, भगवान का सिंहासन, दीवार घड़ी, कूलर, वाटर जग, शृंगारदान आदि सम्मिलित हैं।

❐ सभी 101 दूल्हों को सूट का कपड़ा।

❐ सभी कन्याओं को तीन-तीन हजार रु. का वेश (साड़ी)।

१०१ टेक्सी कारों को सजाकर दूल्हा-दुल्हनों को विदा किया

आयोजन में सक्रिय भूमिका पं. चंद्रमोहन दुबे, पं. सत्यनारायण शर्मा, पं. ललित प्रसाद शास्त्री, पं. सुरेश शर्मा पालदा, पं. दिनेश शर्मा, पं. राजेन्द्र शर्मा, पं. ललित दुबे, पं. कमलेश शर्मा, पं. कमल शर्मा, पं. हरिशंकर जोशी, पं. सुरेश काका, पं. विजय अड़ीचवाल, पं. दिनेश दवे ने निभाई।

नागर महिला मंडल की बैठक १२ जून को

इंदौर। नागर महिला मंडल की आगामी बैठक 12 जून को 2010शनिवार को अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे के निवास स्थान मनसा 20/7 साउथ तुकोगंज (फोन 0731-2516626) पर आयोजित होगी।

सचिव श्रीमती मीना त्रिवेदी (फोन 0731-3257887) ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस विशेष मासिक बैठक में मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. रेणुका मेहता उपस्थित होंगी तथा खासकर छोटे बच्चों के पोषण एवं स्वास्थ्य के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी सदस्यों को प्रदान करेंगी। सभी महिला सदस्यों से आग्रह है कि वे इस प्रकाशित सूचना को ही निमंत्रण मानकर पधारें तथा अपने आसपास निवासरत बहनों को भी सूचना कर देवें।

परशुराम जयंती की शोभायात्रा में नागर समाज की सहभागिता

इंदौर। दिनांक 16 मई 2010 को परशुराम जयंती के अवसर पर बड़ा गणपति से राजवाड़ा तक निकली भव्य शोभायात्रा में नागर परिषद के अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी, सचिव केदार रावल सहित बड़ी संख्या में नागर बंधुओं ने हिस्सा लिया। खास बात यह है कि ब्राह्मण एकता की प्रतीक इस शोभायात्रा का स्वरूप साल-दर-साल निखरता जारहा है तथा सहभागियों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। शोभायात्रा के निमंत्रण के साथ नागर परिषद शाखा इंदौर द्वारा जारी अपील में कहा गया है कि इंदौर जिले के नागर बंधुगण अपनी सदस्यता नवीनीकरण का शुल्क 502 रुपए समाज के कार्यालय 12/1, डॉ. सरजूप्रसाद मार्ग इंदौर पर जमा करा दें। अथवा अ.भा. नागर परिषद शाखा इंदौर के सेविंग खाता क्र. 53013529527 स्टेट बैंक आफ इंदौर यशवंत निवास रोड शाखा इंदौर में सदस्यता सहयोग राशि जमा कर सूचना देने का कष्ट करें।

जय हाटकेश वाणी के आप अभी तक सदस्य बनें या नहीं? आकर्षक रुचिकर उपयोगी तीनों विशेषताओं से परिपूर्ण

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं...

पूरा पता (पिनकोड सहित)..

....

....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/c नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय
मासिक जयहाटकेश वाणी
20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर
फोन-0731-2450018, 0731-2459026
मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

सुयश

श्री आमोद नागर उपमहाप्रबंधक नियुक्त

इन्दौर। श्री आमोद नागर की नियुक्ति इन्दौर में तिकोना डिजिटल नेटवर्क्स में उपमहाप्रबंधक के पद पर हुई है। वे भारत में वायरलेस ब्रॉडबैंड सेवा प्रदान करने वाली अग्रणी टेलिकॉम कंपनी के मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के सर्कल हेड भी रहेंगे।

श्री नागर अभी तक पुणे में टेलिकॉम इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी, इंडस टॉवर्स लि. में महाराष्ट्र सर्कल हेड के पद पर कार्यरत थे। इससे पूर्व वे टेलिकाम क्षेत्र की अग्रणी कंपनियों भारती, एयरटेल, रिलायंस आदि में विभिन्न उच्च पदों पर इन्दौर, भोपाल, नागपुर, चैन्नई में सेवाएं दे चुके हैं। बेहतर कार्य निष्पादन के आधार पर उन्होंने इन कंपनियों की ओर से थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका आदि की यात्राऐं भी की हैं। श्री आमोद नागर, हाल में दिवंगत उज्जैन के स्व. रामवल्लभजी नागर एवं श्रीमती मधु नागर के सबसे छोटे सुपुत्र हैं।

डॉ. संजय नागर का अमेरिका की वैज्ञानिक सूची में नामांकन

डॉ. संजय नागर (सुपुत्र डॉ. विष्णुदत्त नागर, इन्दौर) विभागाध्यक्ष बायोटेक्नालॉजी, आई.पी.एस. एकेडमी, इन्दौर को उनके Plant Biotechnology पर किये गये शोध में योगदान एवं विभिन्न अंतराष्ट्रीय सेमीनार/कान्फ्रेन्स में शोधपत्र वाचन एवं प्रस्तुति पर न्यूर्याक प्रशासन द्वारा प्रकाशित Global who's who Directory में विशिष्ट वैज्ञानिक के रुप में सम्मिलित किया है, एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया गया है। दिनांक 20-25 जुलाई 2010 को पेरिस (फ्रांस) में आयोजित बायोटेक्नालॉजी एवं नेनोटेक्नालॉजी विषय पर आयोजित अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में अपने शोध पत्र वाचन के लिये आमंत्रित किया है। ज्ञातव्य है कि 2-5 अगस्त 2010 को क्रेम्ब्रीज विश्वविद्यालय लंदन द्वारा आयोजित अंतराष्ट्रीय सेमीनार में भी अपना शोध पत्र प्रस्तुत करेंगें। इन उपलब्धियो पर आई.पी.एस. एकेडमी के प्रेसीडेंट श्री अचल चौधरी, डायरेक्टर डॉ. जी.व्ही. कुलकर्णी, जैव प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार, म. प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास, महासचिव श्री राजेन्द्र नागर ने बधाईया एवं शुभकामनाएँ दी है। **प्रस्तुति - पवन शर्मा,इन्दौर**

चि. प्रसून नागर को प्रथम रैंक

चांचौड़ा (जिला गुना) चि. प्रसुन नागर (सुपुत्र श्री संजीव नागर) को जवाहर नवोदय विद्यालय बजरंगगढ़ (गुना) में कक्षा 9वीं में 90 प्रतिशत अंकों के साथ विद्यालय में प्रथम रैंक प्राप्त हुई। चि. प्रसून की इस उपलब्धि से परिवार एवं समाज गौरवान्वित हुए हैं।

उत्सव मेहता प्रावीण्य सूची में

रतलाम। स्व. श्री लक्ष्मीकांत/ललिता देवी मेहता के सुपौत्र एवं श्री

विभाष-कल्पना मेहता रतलाम के सुपुत्र उत्सव मेहता ने शा. धंवंतरि आयुर्वेद महाविद्यालय उज्जैन से बीएएमए परीक्षा अक्टूबर 2009 में प्रथम श्रेणी 70.48 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण कर विक्रम विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त कर नागर समाज का गौरव बढ़ाया। श्री उत्सव मेहता ने स्थानीय श्री गुरुतेग बहादुर हायर सेकंडरी स्कूल से कक्षा 12वीं बायलाजी समूह में विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था एवं म.प्र. नागर प्रतिभाशाली समिति उज्जैन द्वारा आयोजित प्रतिवर्ष सम्मान समारोह में कक्षा 12वीं (सन् 2002) में सर्वोच्च प्रतिभा सम्मान प्राप्त किया था। श्री उत्सव मेहता नागर की बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा है। सामयिक विषयों पर समय-समय पर इनके पत्र समाचार-पत्र एवं नागर पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। उनकी इस उपलब्धि पर समस्त मेहता परिवार, नागर परिवार उज्जैन मय परिवार एवं श्री संजय मेहता, संजय दवे, विष्णुदत्त नागर, ओम त्रिवेदी,सुशील नागर, नवनीत मेहता, धर्मेन्द्र नागर, श्री रविशंकरजी दवे, श्री हेमंतजी दवे,सुश्री मंगला दवे, श्रीमती इंदिरा रावल आदि ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

नीलेश व्यास का स्थानांतर पदोन्नति के साथ

पीपलरावां । स्व. श्री डॉ. शिवेशचंद्रजी व्यास के सुपौत्र एवं सौ. प्रेमलता-प्रमोद व्यास के सुपुत्र श्री निलेश व्यास सेल्स मैनेजर हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि. का स्थानांतर पदोन्नति के साथ बीकानेर राजस्थान से मैनेजर इम्पोर्ट फैसेलिटी सी पोर्ट मेंगलोर कर्नाटक हो गया है।

अभय मेहता की उपलब्धि

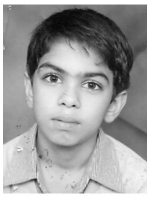

उज्जैन। क्रिस्ट ज्योति कान्वेंट स्कूल में अध्ययनरत अभय मेहता सुपुत्र श्री गजेन्द्र-सौ सीमा मेहता ने कक्षा छठी में 90.67 प्रतिशत अंक प्राप्त कर ए डबल प्लस ग्रेड की उपलब्धि हासिल की। परिवार एवं समाज उनकी उपलब्धि से गौरवान्वित हुआ।

आशीष नागर कक्षा में द्वितीय

पचोर। सरस्वती शिशु मंदिर में अध्ययनरत आशीष नागर (सुपुत्र श्री विष्णुप्रसाद नागर) ने 7वीं की परीक्षा 85.38 अंकों के साथ उत्तीर्ण कर कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उनकी इस उपलिब्ध पर परिवारजनों ने उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की।

शैलेन्द्र शर्मा पचौर

मोहित को सुयश

बैंगलौर । जैन विद्यालय में अध्ययनरत मोहित नागर (सुपुत्र अश्वीन-नीता नागर) ने एल.के.जी. में विशेष योग्यता प्राप्त की। मोहित ने अपने बुद्धिकौशल एवं वाकचातुर्य से सभी को मोहित किया।

मो. 9900495321

श्री रवि नागर गोदरेज में जनरल मैनेजर पदोन्नत

मुंबई। रवि नागर सुपुत्र सोहन नागर-डॉ. श्रीमती कुमुद नागर इंदौर जो मुंबई में देश की विख्यात कंपनी गोदरेज कन्ज्यूमर्स प्रोडक्ट्स लिमिटेड में कार्यरत है, हाल ही में उनकी पदोन्नति जनरल मैनेजर के पद पर हुई है। उल्लेखनीय है कि इतनी कम उम्र में इस पद पर पहुंचने का यह एक बिरला उदाहरण है। उन्हें इस विलक्षण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई। वे मध्यप्रदेश नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष व प्रवेश के वरिष्ठ पत्रकार प्रेम नारायण नागर के पौत्र हैं।

कु. रक्षा को चार विषय में विशेष योग्यता

इंदौर। कु. रक्षा सुपुत्री श्री आशीष-सौ. नेहा मेहता ने 12वीं में 4 विषय में विशेष योग्यता के साथ 83.6 प्रतिशत अंक हासिल कर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

फोन - 0731-2910244

चि. विनीत नागर कंपनी सेक्रेटरी बने

बांसवाड़ा। श्री सतगुरु महाराज की कृपा एवं स्व. चंद्रमणि नवनीतलालजी त्रिवेदी दादी-दादा के आशीर्वाद से चि. विनीत नागर पुत्र श्रीमती रंजना सुनील नागर के प्रथम प्रयास में कंपनी सेक्रेटरी बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य का शुभकामनाएं।

कु. यशस्वी शर्मा को सुयश

इंदौर। कु. यशस्वी शर्मा सुपुत्री सौ. संगीता-दीपक शर्मा ने सीबीएसई कक्षा 10वीं में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए तथा स्थानीय केंब्रिज इंटरनेशनल स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

कु. श्रुति शर्मा को सुयश

इंदौर। कु. श्रुति शर्मा सुपुत्री सौ. दुर्गा-पवन शर्मा ने गुजराती स्कूल में सीबीएसई कक्षा 7वीं की परीक्षा में 71 प्रतिशत अंक हासिल कर गौरवशाली उपलब्धि प्राप्त की।

कु. कुशा याज्ञिक को सुयश

श्रीमती कुसुम जुगल मोहन याज्ञिक की पोती एवं श्रीमती प्रीति संजय याज्ञिक की सुपुत्री कु. कुशा ने आईसीएसई बोर्ड की एसपीडी एक्स परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

वैवाहिक

युवक

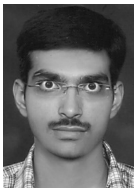

शरदचंद्र पुनीत कुमार शर्मा

जन्म 23/11/1982 प्रातः 3.30 बजे
शिक्षा- बी. टेक (इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन) **कार्यरत** लखनऊ में
सम्पर्क- 09415424484

कबीर रवीन्द्रकुमार जोशी

जन्म दिनांक 26 अक्टूबर 1983
शिक्षा बी.टेक आईआईटी (मद्रास)
कार्यरत- दुबई के शास. बैंक में प्रबंधक
सम्पर्क (011) 45024606, मो. 0997133972

अर्पण जोशी

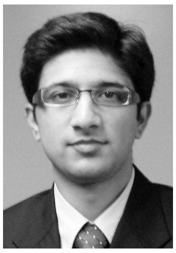

जन्म 2-10-1982 **प्रातः** 6.35 इंदौर
शिक्षा बीएससी कम्प्यूटर साइंस एमएस (इंफर्मेशन सिस्टम) युएएस
कार्यरत- सिएटल वाशिंगटन यूएसए में ग्लोबल लीडर कं. में सीनियर आईटी आडिटर
आय रु. 35 लाख वार्षिक से अधिक
सम्पर्क 98261-61234
(वांछित– कम्प्यूटर प्रोफेशनल एमसीए, सीए, एमबीए, इंग्लिश मीडियम)

प्रणव शर्मा

जन्म दिनांक 29 जून 1983 **समय** 8.00 प्रातः भोपाल
शिक्षा एम.ए, एमबीए
कार्यरत डाबर इंडिया में सेल्स आफिसर
आय रु. तीन लाख वार्षिक से अधिक
सम्पर्क डॉ. प्रद्युम्न कुमार शर्मा झालावाड़ (राज.)
मो. 994141 93946

डॉ. शशांक कुलशेखर नागर

जन्म 07-05-1981 **समय सुबह** 2 बजे स्थान मेरठ
योग्यता- बीडीएस (डेंटल सर्जन) काशीपुर में ऊंचाई 6 फीट
सम्पर्क - कुल शेखर नागर 18/132, लाहोरियन स्ट्रीट पीओ काशीपुर फोन- 244713 जि. उधमसिंह नगर (उत्तराखंड)
मो. 09760862615 09319999992

युवती

शिखा पुनीत कुमार शर्मा

जन्म दि. 22/9/1984 **प्रातः** 4.30 बजे
शिक्षा - बीटेक (मैकेनिकल)
कार्यरत - लखनऊ में
सम्पर्क - 09415424484

कु. स्वाति ज्वालाप्रसाद शर्मा

जन्म दिनांक 15-10-1985 **सायं** 17.05
शिक्षा - बी. काम., एम.ए. (हिन्दी साहित्य) पीजीडीसीए अध्ययनरत
सम्पर्क- प्रेस कॉलोनी पचौर जिला राजगढ़ (ब्यावरा) मो. 94072 53969, 9424465799

कु. डिम्पल राजेश नागर (मेहता)

दिनांक 13-5-1987 **समय** 8.10 ए.एम. (मेघनगर)
शिक्षा बी. कॉम, ग्रेज्युएट, डिप्लोमा इन कम्प्यूटर अकाउंटिंग
सम्पर्क- नागर बुक बाईंडर्स राजवाड़ा चौक, जगमोहनदास मार्ग, झाबुआ
मो. 94251-02276, 94240-64104

बधाई...

तृतीय जन्मदिवस

त्वरित नागर (टुकटुक)

सुपुत्र- श्री मनोज-सौ. तृप्ति नागर

दिनांक 27-06-2007

शुभाकांक्षी - समस्त नागर परिवार, तराना, उज्जैन, इंदौर

फोन 0734-2521424, मो. 9424878493

कु. हर्षिता त्रिवेदी

(सुपुत्री श्री अनुराग-चेतना त्रिवेदी)

दिनांक 24 जून 2001

शुभाकांक्षी- समस्त परिवार बड़ा राम मंदिर खजराना एवं मामाजी परिवार पीपलरावां

जन्मदिन की बधाई

पवन शर्मा

3 जून 1974

तनय शर्मा

(सुपुत्र पवन-वर्षा शर्मा)

3 जून 2008

शुभाशीर्वाद- श्री महंत रामचरणदासजी (दादाजी) एवं समस्त परिवार

श्री हंसदास हायर सेकंडरी स्कूल

लोहारपट्टी, इंदौर 94250-62441

याद रहें- जन्म दिन है प्रकाशमय उज्ज्वलता लिए

बधाइयां

30.5.2010 **श्रीमती ऋचा-डॉ. जे. क्लांसी क्लिमेंस** (बेटी डॉ. गणेशराम पुराणिक) इंडिया पोलिस (अमेरिका)

1-6-2010 **कु. शिवानी बेटी** स्व. सत्यम जोशी पोर्टलैंड (अमेरिका)

15-6-2010 **कु. वंदना पुरुषोत्तम जोशी,** इंदौर

24-6-2010 **डॉ. रेणुका प्रदीप मेहता,** इंदौर

26-6-2010 **डॉ. दयाशंकरजी ओ. जोशी,** इंदौर

पी.आर. जोशी एवं परिवार

528, उषानगर एक्सटेंशन, इंदौर (म.प्र.)

विवाह वर्षगांठ—बधाई

श्रीमती उषा भगवतीलालजी भट्ट

20 मई 2010

शुभाकांक्षी- मिथलेश-सौ सीमा भट्ट पिंकेश भट्ट, लोकेश भट्ट

समस्त भट्ट परिवार रतलाम, नागर परिवार, राऊ

विवाह वर्षगांठ

श्री एस.डी. पाठक एवं श्रीमती सरला पाठक (नागर)

को 55वीं वैवाहिक वर्षगांठ की बधाई

दिनांक 16 मई 2010

शुभाकांक्षी -नागर परिवार, झाबुआ

१६वीं विवाह वर्षगांठ

श्री संजय-तनू मिश्रा

28 जून 2010

मो. 9993111287

विवाह की सत्रहवीं सालगिरह

श्री संजीव-सौ. अलका नागर

दिनांक 13 मई 2010

समस्त चांचोड़ा (चम्पावती) परिवार

मो. 9893636993

विवाह वर्षगांठ की बधाई

श्री गणेशशंकरजी मेहता एवं श्रीमती प्रभा मेहता (अनुपशहर)

विवाह की ५०वीं वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

5 मई 2010

मो. 09836448601

विवाह में हाटकेश वाणी की सदस्यता का उपहार

झाबुआ। विगत 15 मई को सौ. कं. गीतिका (सुपुत्री श्रीमती इंदिरा-विजयकुमार नागर उज्जैन) एवं चि. विजय (सुपुत्र श्रीमती निर्मला-शंकरलालजी दशोरे) खिरकिया के विवाह अवसर पर श्री राजेश नागर झाबुआ ने उन्हें जय हाटकेशवाणी के त्रेवार्षिक सदस्यता का उपहार दिया।

तुम जियो हजारों साल...

मुक्ति मेहता

31 मई

कु. आस्था मेहता

(सुपुत्री अमित शंकर मेहता-सौ. मुक्ति मेहता)

17 जुलाई

शुभाकांक्षी समस्त परिवार,
स्नेहीजन हुगली (प.बंगाल)
मो. 09903037393

विवाह की २५वीं वर्षगांठ

श्री राजकुमार झा
श्रीमती आशा झा
जून २०१०

३८वीं विवाह वर्षगांठ

श्री श्रीपति शंकर मेहता
श्रीमती नीरा मेहता

शुभाकांक्षी - अमित मेहता, मुक्ति मेहता, कु. आस्था मेहता
51/65, एन.एस. रोड, रिसडा,
हुगली पं. बंगाल
मो. 9903037393 033-26724806

माँ चारों धाम है...

हास्य कवि ओम व्यास ओम की यह मार्मिक रचना उनके प्रति आदरांजलि देते हुए

माँ, माँ-माँ संवेदना है, भावना है अहसास है
माँ, माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है,
माँ, माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है,
माँ, माँ मरूथल में नदी या मीठा सा झरना है,
माँ, माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है,
माँ, माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है,
माँ, माँ आँखों का सिसकता हुआ किनारा है,
माँ, माँ गालों पर पप्पी है, ममता की धारा है,
माँ, माँ झुलसते दिलों में कोयल की बोल है,
माँ, माँ मेहँदी है, कुमकुम है, सिंदूर है, रोली है
माँ, माँ कलम है, दावत है, स्याही है,
माँ, माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है,
माँ, माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है,
माँ, माँ फूँक से ठंडा किया हुआ कलेवा है,
माँ, माँ अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है,
माँ, माँ जिंदगी के मोहल्ले में आत्मा का भवन है,
माँ, माँ चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधों का नाम है,
माँ, माँ काशी है, काबा है और चारों धाम हैं,
माँ, माँ चिंता है, याद है, हिचकी है,
माँ, माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है,
माँ, माँ चूल्हा-धुआं-रोटी और हाथों का छाला है,
माँ, माँ जिंदगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है,
माँ, माँ पृथ्वी है, जगत है धूरी है,
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है,
तो माँ की ये कथा अनादि है,
ये अध्याय नहीं है
और माँ का जीवन में कोई पर्याय नहीं है,
तो माँ का महत्व दुनिया में कम हो नहीं सकता,
और मां जैसा दुनिया में कुछ हो नहीं सकता,
और माँ जैसा दुनिया में कुछ हो नहीं सकता,
तो मैं कला की ये पंक्तियाँ माँ के नाम करता हूं,
और दुनिया की सभी माताओं को प्रणाम करता हूं।

संकलन- प्रबल शर्मा
इंदौर मो. 8109615071

विघ्न-बाधाओं के बीच श्रीमद् भागवत कथा सम्पन्न

प्रभु कृपा से ही मंगल कार्य होते हैं

उज्जैन। मेरे परम हितैषी एवं सबका मंगल सोचने व करने वाले श्रीकृष्ण गोपाल व्यास पर भगवान ने ऐसी कृपा बरसाई कि वे अनेक संकटों के बावजूद श्रीमद् भगवान कथा सम्पन्न करा सके। वास्तव में 73 वर्षीय व्यासजी ने जीवन में दूसरों का ही हित किया। अपने लिये वे श्रीमद् भागवत कथा सम्पन्न कराकर धन्य महसूस कर रहे हैं। भरी गर्मी में निरंतर दो माह तक बाजार जाना व व्यवस्था होना वे प्रभु की कृपा को मान रहे हैं।

जीवन में अनेक संघर्षों से घबराए व्यासजी एक दिन अपने गुरुजी पं. बृजेन्द्रजी नागर (मेहता) के पास अपनी समस्याओं को लेकर गये वहां उनके अनुज पं. बालकृष्णजी मेहता भी उपस्थित थे। पत्रिकाएं देखकर पहले यह निर्णय हुआ कि नव चंडी के पाठ करवाना चाहिए, फिर यह कहा गया क्या आप श्रीमद् भागवत सप्ताह करवा सकते हैं? क्योंकि श्रीमद् भागवत में स्वयं वासूदेव परमात्मा श्रीकृष्ण विराजित हैं। श्री व्यासजी ने तुरंत अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। दि. 22 अप्रैल से 28 अप्रैल 2010 का समय निर्धारण हुआ।

जब व्यासजी ने अपने ईष्ट मित्रों से यह चर्चा की तो कुछ ने समर्थन व कुछ ने इसमें परिवर्तन की बात कही, परंतु श्री व्यासजी अपने निर्णय पर प्रभु श्रीराम की कृपा से अडिग रहे। 19 अप्रैल 2010 को इनके पुत्र आशीष व्यास गाड़ी से गिर गये व दायें हाथ में तीन जगह फ्रैक्चर हुआ व 22 अप्रैल 2010 को ही इधर कथा हो रही थी व उधर चि. आशीष के हाथ का आपरेशन कर राड डाली जा रही थी। इतना कुछ होने पर भी श्री व्यास का विश्वास नहीं डगमगाया व वे निर्भयता से कथा श्रवण व ॐ नमो भगवते वासूदेवाय मंत्र का जाप करते रहे। वैशाख अधिक मास में श्रीमद् भागवत सप्ताह व्यासजी के निवास पर होना भी उपयुक्त रहा।

श्रीयुत पं. बृजेन्द्र जी नागर द्वारा श्रीमद भागवत कथा के अठारह हजार श्लोकों का नित्य पाठ किया गया। शाम 5 से 7 बजे तक कथा रूपी अमृत की वर्षा हुई। श्रीयुत पं. बालकृष्ण मेहता द्वारा नित्य प्रातः व सायं नवचंडी का पाठ व श्री गोपाल सहस्त्र नाम का पाठ हुआ। श्री पं. अंकित शुक्ला द्वारा 21000 महामृत्युंजय मंत्र का जाप हुआ एवं पं. श्रीयुत कैलाश शुक्ल द्वारा नित्य सभी देवी देवताओं का पूजन व हवन करवाया गया। इनके साथ ही पं. श्रीराम नागर व पं. श्री धनीरामजी द्वारा वेद मंत्रों का उच्चारण हुआ। इसी बीच श्री व्यासजी के जमाईजी श्री विनायकशंकरजी नागर को भी अहमदाबाद में गिरने से चोट आई, परंतु व्यासजी विचलित नहीं हुए।

व्यासजी के अनुज श्री बालमुकुंद व्यास वाराणसी से आकर इनके संग ऐसे लगे रहे जैसे श्री रामचंदजी के साथ लक्ष्मणजी। इनकी बड़ी बहन श्रीमती पुष्पादेवी व्यास इंदौर व भाई श्री राधारमणजी व्यास अस्वस्था से नहीं आ सके, परंतु राजगढ़ से श्री गोविंद नारायणजी नागर व बहन अ.सौ. शान्ता आठों दिन इनका उत्साहवर्धन करते रहे। अंत में इनके घर से धननारायण धर्मशाला तक भव्य यात्रा निकली। व्यासजी सभी आत्मीयजनों के आभारी हैं, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग एवं शुभकामनाएं प्रदान की साथ ही अपने कई इष्टमित्रों व रिश्तेदारों से क्षमा चाहते हैं, जिन्हें समयाभाव, स्थानाभाव व मानसिक तनाव के कारण निमंत्रण नहीं दे सके।

अंत में श्रीव्यासजी का विश्वास है कि श्रीमद् भागवत कथा बिना प्रभु कृपा के एवं पूर्वजनों के आशीर्वाद बिना नहीं हो सकती है। सद्गुरु श्री 1008 हरिॐ तत्सतजी के आशीर्वाद से ही यह पुण्यकार्य सम्पन्न हो पाया।

-रामचंद्र जोशी, उज्जैन

वरिष्ठ पत्रकार श्री विनोद नागर के सान्निध्य में हुआ समारोह

पीपलरावां (निप्र)। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी नागरों के ईष्टदेवता भूत भावन भगवान श्री हाकटेश्वर की जयंती सोमवार को समारोहपूर्वक विविध कार्यक्रमों के साथ सानंद सम्पन्न हुई। समारोह की अध्यक्षता नागर परिषद पीपलरावां के अध्यक्ष पत्रकार श्री हरिनारायण नागर ने की, जबकि मुख्य अतिथि थे दूरदर्शन केंद्र भोपाल के समाचार विभाग के उपसंचालक श्री विनोद नागर। भगवान श्री हाटकेश्वर पर गो-दुग्धाभिषेक, आरती तथा प्रसाद वितरण आचार्य पं. नरेन्द्र पांडे (खूंटखेड़ा) ने करवाया। पश्चात श्री

हाटकेश्वर के मुखौटे की नगर में शोभायात्रा निकाली गई। जो वापस नागर धर्मशाला में आकर एक साधारण सभा में परिवर्तित हो गई।

पश्चात परिषद के उपाध्यक्ष त्रिभुवनलाल मेहता का परिषद के प्रति की जा रही उनकी सेवाओं के लिए हार, शाल, श्रीफल, प्रशस्ती-पत्र, स्मृति चिन्ह तथा नकद मुद्रा भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। समारोह को डॉ. धर्मेन्द्र नागर एवं सम्मानित उपाध्यक्ष त्रिभुवनलाल मेहता ने संबोधित करने के बाद अध्यक्ष श्री नागर ने अपने उद्बोधन में सामाजिक गतिविधियों में सभी सदस्यों के सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की। मुख्य अतिथि विनोद नागर ने नागर जन को नागरत्व को बनाए रखने के साथ वर्तमान में मीडिया की स्थिति पर भी विस्तार से विचार रखे। समारोह का संचालन श्री गोपालकृष्ण व्यास ने किया तथा आभार प्रदर्शन एडव्होकेट श्री सुशील नागर ने किया।

शाजापुर के मध्य विराजते हैं

श्री ठाकुरजी प्रभु गोवर्धननाथजी

विंध्य सतपुड़ा व अरावली की शैल मालाओं की छत्र छाया में स्थित शश्य श्यामला मालवा भूमि में बसी शाजापुर नगरी जहां से कर्क रेखा गुजरती है, अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं एवं गौरवमयी इतिहास से पहचानी जाती है, जो अद्‌भुत प्राकृतिक सौंदर्य की छटा को अपने में समेटे हुए हैं। नगर के मध्य सोमेश्वर महादेव मार्ग में पुरातन पुष्टि सम्प्रदाय की अति प्राचीनतम हवेली में बिराजे हैं ठाकुर प्रभु श्री गोवर्धननाथजी।

मालवांचल में फैले हुए नागर समुदाय का अधिकांश भाग शाजापुर क्षेत्र के आसपास पांच गांव तथा छन्नु बावीसा नागर समाज के गांव स्थित हैं, इसी वजह से शाजापुर को नागरों का गढ़ कहा जाता है।

यदि हम अतीत में जावें तो नागरों में जहां पं. सोमनाथजी शास्त्री, संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित का नाम आदर से लिया जाता है, वहीं मेहता परिवार के सबसे वरिष्ठ पितामह (नासकावाले) मुखिया स्व. मोतीलालजी मेहता बा सा. को भी नहीं भुलाया जा सकता। पूज्य पितामह पाराशर गौत्र के होकर नागरों में प्रख्यात विद्वान होकर प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य, कर्मकांडी, भागवतमर्मज्ञ, सामुद्रिक ज्योतिष के ज्ञात थे। कहा जाता है कि पूज्य स्व. बा सा. को स्वप्न के दौरान श्री ठाकुरजी की निधि के दर्शन हुए और उन्होंने समाज से लगभग 400 वर्ष पूर्व हवेली का निर्माण कराया, जिसमें पुष्टमार्गीय परम्परा, श्री अखण्ड मंडल भू मंडलाचार्य श्री महाप्रभु श्री 1008 श्री वल्लभाचार्य के अनुसार ठाकुर प्रभु श्री की पुष्टि सेवा प्रारंभ की जो आज तक चली आ रही है। भारत वर्ष में लगभग 12000 से अधिक पुष्टि हवेलियां विराजित हैं। शाजापुर की पुष्टीमार्गीय हवेली नागर समाज का गौरव हैं तथा समस्त वैष्णवजनों की आस्था का केंद्र हैं। हवेली में विराजित प्रभु श्री ठाकुरजी के नित्य पांच दर्शन होते हैं, जिसका लाभ समस्त वैष्णवजन उठा रहे हैं।

मुखिया स्व. श्री मोतीलालजी बा सा. के गौलोकवास होने के पश्चात उनके पुत्र स्व. मुखिया गोवर्धनदासजी मेहता ने उक्त सेवा परम्परा को आगे बढ़ाया। मुखिया स्व. गोवर्धनदासजी मेहता पुष्टी सेवा के मर्मज्ञ व्यक्तित्व के थे। आपने प्रभु श्री कृष्ण सेवा को भागवत ग्रंथानुसार प्रतिपादित कर शाजापुर में पुष्टी सम्प्रदाय की ध्वजा फहराई थी। तत्पश्चात उनके द्वय पुत्र मुखिया स्व. कृष्णदास मेहता कीर्तनकार एवं सामग्री विशेषज्ञ थे एवं स्व. मुखिया मनमोहनदास मेहता ने बड़ी लगन एवं परिश्रम से प्रभु श्री ठाकुरजी की सेवा में रत रहे। मुखिया स्व. मनमोहनदासजी 13 वर्ष की उम्र में श्रीमदभागवत एवं गीतापाठ प्रारंभ कर दिया था। प्रभु ठाकुरजी की सेवा में अपने को लीन कर लिया था। श्री ठाकुरजी के शृंगार, भोग का विशेष ध्यान रखते थे। प्रभुश्री के पान के बीड़े भोग लगाकर वैष्णवों में प्रसादी बांटना उनकी पुष्टी प्रेम एवं मीठा सम्भाषण प्रभुकृपा थी। पुष्टी सम्प्रदाय के अनेक श्री वल्लभ वंशज गुरु श्री मुखियाजी का बहुत सम्मान करते थे।

वर्तमान में हवेली में पुष्टीमार्गीय परम्परा जारी रखते हुए उनके पुत्रगण मुखिया नरेन्द्र मेहता, ब्रजगोपाल मेहता, सुरेन्द्र मेहता, सुरेश मेहता, मुकेश मेहता, निकुंज मेहता तथा योगेश मेहता प्रभु श्री ठाकुरजी की सेवा में रत हैं। प्रभु श्री ठाकुरजी की हवेली मुखिया परिवार की निजी स्वामित्व की हवेली होकर प्रसिद्ध मंदिर हैं। जहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में प्रभुश्री के पांचों दर्शन मंगला, शृंगार, राजभोग, उत्थापन व शयन के दर्शन हेतु वैष्णव आते हैं। श्याम शिला पर प्रभु श्री गोवर्धननाथजी का बालस्वरूप निधि अष्टभुजाधारी हैं। गोवर्धननाथजी के सौम्य मुखारबिंद एवं तिलक दर्शन होते हैं। अष्टभुजाओं में शंख, चक्र, गदा, पदम, बांसुरी, गिरराज धरण, गौ चरण, गोप-गोपिकाओं के साथ में दर्शन होते हैं। प्रभुश्री का सुंदर एवं मनोहारी स्वरूप अनूठा है। एक बार दर्शन करने के पश्चात बार-बार मंदिर में आने की वैष्णवजनों की अभिलाषा बनी रहती है। प्रभु श्री ठाकुरजी गोवर्धन नाथजी के दरबार में पांचों समय के दर्शन में संकीर्तन से वातावरण गुंजायमान रहता है। कृष्ण भक्ति के सुमधुर भजनों से वैष्णवजन अमृतलाभ लेते हैं। प्रभु श्री ठाकुरजी के सायं शयन दर्शन के पूर्व अष्टाक्षर महामंत्र श्री कृष्ण शरणम्मम् का जाप चलता है। साथ ही नित्यपाठ कृष्णाक्षय, मधुराष्टकम श्री सर्वोत्तम स्त्रोत, श्री यमुनाजी के पदपाठ आरती आदि समय-समय पर होती रहती हैं। महिला वैष्णव भक्त मंडल द्वारा नियमित भजन कीर्तन से वैष्णवजन आत्म विभोर हो जाते हैं। सुरताल का संगम कीर्तनों पर अष्टछाप पड़ी हुई है।

शेष अगल अंक में

प्रस्तुति-सुरेश दवे मामा

वाणी का भोपाल नागर कुंभ इतिहास बन गया

पुराण/वेदों एवं उपनिषदों में यह बताया गया है कि समुद्र मंथन से अमृत कुंभ निकला था। अमृत कुंभ की प्राप्ति के लिएसुर एवं असुर में संग्राम हुआ था और अंततोगत्वा अमृत कुंभ सुरों अथवा देवताओं के हाथ लगा। वेदों में यह कथन है कि समुद्र मंथन से निकले अमृत कुंभ के छिनने के कारण अमृत के छींटे अलग-अलग स्थानों पर छलके। इसलिए भारत भूमि में नासिक, हरिद्वार, इलाहाबाद, प्रयाग, राजीम (रायपुर) आदि स्थानों पर कुंभ तथा उज्जैन में सिंहस्थ का मेला सुनिश्चित तिथियों एवं वर्षों से सनातनकाल से लगते आ रहे हैं। इन कुंभ मेलों की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि होती है।

कुंभ में साधु-संतों, मनीषियों एवं ऋषियों के अखाड़े शिविर लगाते हैं। जहां धर्म-अधर्म, संस्कार एवं संस्कृति पर चर्चा एवं संभाषण होते हैं। जिनका लाभ लाखों-करोड़ों धर्मप्राण जनता को प्राप्त होता है। परंतु इन मेलों में जो भी संत-ऋषियों के उपदेश होते हैं उनको जनता श्रवण अवश्य करती है, किंतु उन उपदेशों को आचरण, चरित्र व्यवहार में नहीं लाती है। अन्यथा आज समाज स्वर्ग तुल्य बन जाता। धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो गया होता और मनुष्य में देवत्व का उदय हो जाता और एक नये युग का निर्माण हो जाता। समाज में भाईचारे की मिसाल उत्पन्न हो जाती। सुख एवं शांति की अमृतधारा प्रवाहित होने लगती। आदमी देवता बन जाता, परंतु ऐसा हुआ नहीं। अन्यथा आज समाज में इतनी विकृतियां एवं अवांछनीयता नहीं रहती।

जय हाटकेश वाणी का भोपाल में आयोजित एक दिवसीय नागर ब्राह्मण समाज का यह नागर कुंभ भी ऐसे ही कुंभ के रूप में आयोजित हुआ, जो अनेक अच्छाइयों का सृजन करके नागर ब्राह्मण समाज के इतिहास में एक नया अध्याय/पृष्ठ बनकर सिद्ध हुआ। नागर कुंभ में अमृत रूपी अनेक सद्विचार चिंतन की परम्परा उदय हुई, जिससे समाज की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को समाज में सही जीवन जीने की राह मिलेगी। नई सृजनात्मक गतिविधियों के क्षेत्र में तथा कला के निरूपण की दिशा में वाणी ने मिसाल (ऊंचाई) प्रस्तुत की।

नागर कुंभ के आयोजन का उद्देश्य केवल समाज जनों को एक स्थान पर एकत्रित करना ही नहीं अपितु एकत्रित समाज के भाई-बहनों में परस्पर मिलाप, भेंट, विचार मंथन, समाज में व्याप्त रूढ़ीवादी विचारों का उन्मूलन, संस्कृति एवं संस्कारों का आदान-प्रदान, चिंतन चरित्र एवं व्यवहार की नई दिशा देने, भटके हुओं को सही मार्ग पर चलाने आदि सुप्रवृत्तियों के उदय एवं विकास और समाज के विभिन्न घटकों (विसनगरा, वडनगरा, कृष्णनोरा, प्रश्नोरा, दशोरा, साठोदरा नागर समाज) को एक मंच पर लाने आदि उद्देश्य को लेकर जयहाटकेशवाणी का यह ऐतिहासिक भव्य अद्वितीय विशाल आयोजन प्रदेश की राजधानी भोपाल में 9 मई 2010 को रवीन्द्र भवन में बड़े भाईचारे एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

वैसे यह बताना प्रासंगिक होगा कि नागर कुंभ अर्थात नागर सम्मेलन करने का यह विचार जय हाटकेश वाणी की संस्थापिका स्व. प्रभाबेन एवं उनके पति स्व. श्री शिवप्रसादजी शर्मा (नागर) ने बहुत पहले ऐसे आयोजन आयोजित करने की बात उनके षष्ठीपूर्ति प्रसंग के समय प्रकट की थी। उनके इस विचार को मूर्त रूप देने एवं नागर कुंभ जैसे आयोजन को सफल साकार करने में उनके सुपुत्र श्री दीपक, पवन एवं मनीष शर्मा ने महती भूमिका का निर्वाह किया। सर्व प्रथम नागर कुंभ का सूक्ष्म रूप इंदौर एवं देवास स्थानों में आयोजित करके एक नई श्रृंखला को जन्म दिया, जिसे भोपाल में उसका बड़ा स्वरूप उभरकर आया।

नागर कुंभ का मूल उद्देश्य जय हाटकेश वाणी के माध्यमसे नागर ब्राह्मण समाज को संगठित कर नागर (श्रेष्ठ) समाज को पुनः स्थापित करना है। पृथक-पृथक अस्तित्व लिए, बिखरे हुए समाजजनों को एक मंच पर लाकर उनकी जनगणना करना और उनकी एक निर्देशिका (डायरेक्टरी) प्रकाशित करना ताकि उसके माध्यम से समाज एक-दूसरे को पहचाने और अपने विचारों एवं संस्कारों से नई पीढ़ी के लिए एक दिशा दे सके।

नागर ब्राह्मण समाज का यह कुंभ मेला भोपाल में पहली बार आयोजित हुआ। भोपाल में नागर कुंभ के आयोजन के पीछे प्रमुख उद्देश्य भी यही रहा कि राजधानी में ऐसे आयोजन से न केवल नागर ब्राह्मण समाज के सभी भाई-बहन एकत्रित होकर समाज के उत्थान के लिए ऐसे विचारों को आदान-प्रदान करें, ताकि समाज में नई पीढ़ी को अपने भावी जीवन जीने के लिए एक परिष्कृत दिशा प्राप्त हो सके।

भोपाल में आयोजित नागर कुंभ में मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से लगभग 1500 से अधिक नागर बंधु उपस्थित हुए। नागर कुंभ निर्धारित समय से प्रारंभ होकर सुनिश्चित समय पर ही सम्पन्न हुआ। आयोजकों ने सभी आगंतुकों के लिए स्वल्पाहार एवं मधुर स्नेह से परिपूर्ण भोजन की व्यवस्था की।

नागर कुंभ की एक विशेषता यह थी कि इस कुंभ में कोई भी बंधु विचलित न हो इस हेतु आयोजकों ने समाज के बच्चों द्वारा ऐतिहासिक मनमोहक, आँखों एवं दिलों को प्रफुल्लित करने वाले विविध सौपानों से भरपूर सांस्कृतिक कार्यक्रम (नाच, गाने, चुटकुले, व्यंगपूर्ण प्रस्तुति आदि) प्रस्तुत किए। इसके लिए संचालनकर्ता श्री अशोकजी व्यास ने अपने कुशल संचालन से चार चांद लगा दिए, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में समाज के कलाकार कु. महिमा शर्मा, अक्षत मेहता आदि ने अपनी कला का प्रदर्शन किया, जिसे सभी ने पसंद किया और तालियों की गड़गड़ाहट से कलाकारों को प्रोत्साहन दिया गया।

नागर कुंभ में एक सबसे बड़ी बात यह थी कि जय हाटकेश वाणी के संपादकों, सहयोगियों द्वारा नागर समाज के वरिष्ठ गणमान्य, अनुभवी महानुभावों का सम्मान, स्वागत आयोजन अद्वितीय था, जिसका संचालन जय हाटकेश वाणी के चि. प्रबल एवं कु. श्रद्धा ने ओजस्वी एवं बड़े मनोरम शब्दों के साथ किया।

इस अवसर पर प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं ऊर्जा मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने समाज के अनुभवा लोगों को शाल एवं श्रीफल एवं पुष्पमाला पहनाकर सम्मानित किया जो सम्मानित हुए उनके नाम इस प्रकार हैं- श्री श्रवणेश्वर-मनोरमा झा, डॉ. बी.डी. मेहता, श्रीमती मेहता, रमेशचंद्र-आशा दवे, महेश-शकुंतला दवे, डीएस झा-श्रीमती झा, बी.आर. मेहता-श्रीमती सुशीला मेहता, त्रिलोकीनाथ-स्नेहलता पंचोली, गोविंद-श्रीमती ठाकोर, मनु-सरला व्यास, कैलाशनारायण-

श्यामा नागर, बसंतकुमार-कला मेहता, मनोहर रजनी नागर, आदि सभी वंदनीयजनों के फोटो एवं नाम रंगीन एलबम में अवश्य देखें।

इसी प्रकार वाणी के प्रचार-प्रसार में जिन समाजजनों का योगदान रहा उनको भी सम्मानित किया गया। सम्मानितों में सर्वश्री सरोज जोशी, श्रीमती ममता नागर, योगेश शर्मा, राजेश नागर, कृष्णकांत शुक्ल, कुलेन्द्र नागर, प्रदीप मेहता एवं बाबूलाल नागर के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा नागर कुंभ के संयोजक वरिष्ठ पत्रकार एवं समाज में जाने-माने भाई ओमप्रकाश एवं श्रीमती आशा मेहता, म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति के सचिव अशोकजी व्यास, राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण परिषद के उपाध्यक्ष आशीष त्रिवेदी, म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास, युवा प्रवचनकार सुश्री वर्षा नागर, भोपाल नागर परिषद के अध्यक्ष श्री बालकृष्णजी मेहता आदि को सम्मानित किया गया।

भोपाल नागर कुंभ में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री शिवराजसिंह चौहान मुख्यमंत्री, राजेन्द्रजी शुक्ल ऊर्जा एवं खनन मंत्री, प्रशांतजी मेहता (आईएएस), वीरेन्द्र व्यास, आशीष त्रिवेदी विशेष रूप से उपस्थित थे। आयोजन कार्यक्रम की अध्यक्षता दैनिक अवंतिका पत्र समूह के प्रधान सम्पादक श्री सुरेन्द्र मेहता सुमन ने की। आभार प्रदर्शन श्री सुभाष एन. व्यास ने किया।

कुल मिलाकर भोपाल नागर कुंभ के आयोजन की निम्न विशेष उपलब्धियां रहीं-

1. नागर समाज के विभिन्न 6 घटकों के वरिष्ठ व्यक्ति एक मंच पर एकत्रित हुए।

2. नागर ब्राह्मण समाज का संगठनात्मक पक्ष मजबूत हुआ।

3. समाज के विभिन्न कलाओं में प्रवीण बालक-बालिकाओं को अपनी कला का प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त हुआ।

4. नागर ब्राह्मण समाज के प्रायः सभी सदस्यों को परस्पर मिलन, विचारों में आदान-प्रदान करने एवं जानकारी का लाभ प्राप्त हुआ।

5. नागर ब्राह्मण समाज में विलुप्त हो रही संस्कार एवं संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित होने का अवसर मिला।

6. समाज की प्रकाशित पत्रिकाओं के नये सदस्य बनने एवं उनके प्रचार-प्रसार हेतु एक दिशा मिली।

7. हाटकेश वाणी द्वारा समाज हित में बचत करने के संकल्प की नई विधा प्रारंभ हुई।

अंत में जय हाटकेश वाणी की सम्पादिका श्रीमती संगीता दीपक शर्मा, पवन शर्मा, मनीष शर्मा का समाज की ओर से विशेष सम्मान किया गया। श्री सुभाष व्यास, अशोक व्यास, विनोद नागर, रवीन्द्र शर्मा, ओ.पी. दशोरा, बालकृष्ण मेहता, मदनमोहन नागर, मुकेश नागर ने समाज के सभी बंधुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। नागर कुंभ में उपस्थित सभी भाई-बहनों को जय हाटकेश वाणी की ओर से उपहार स्वरूप बेग प्रदान किये गये। शांति पाठ एवं भोजन प्रसादी के पश्चात भोपाल नागर कुंभ का समापन हुआ।

प्रस्तुति- डॉ. रामरतन शर्मा
उज्जैन,
फोन- 0734-2516603,
मो. - 98267-23870

शतायु होने के चरक के सात सूत्र

चरक ने उन सूत्रों की रचना मानव समाज को दी है, जिनका पालन कर हर व्यक्ति अपने जीवन में सौ वर्षों की आयु प्राप्त कर सकता है। चरक के अनुसार सात स्वर्णिम सूत्र निम्न हैं, जिनका पालन पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है।

1. दिन में एक समय भोजन करना चाहिए और उसमें भी आधे से ज्यादा भोजन उबली हुई सब्जियों का होना चाहिए, साथ ही साथ महीने में दो सर्वथा उपवास करें।

2. बिना इच्छा के भी खूब पानी पीयें, यह पानी स्वच्छ, निर्मल व प्राकृतिक हो, फ्रीज का या बर्फ से ठंडा किया हुआ पानी उचित नहीं है।

3. नित्य पांच व्यायाम अवश्य ही किये जाने चाहिए, प्रातः काल उठकर सूर्य नमस्कार व्यायाम, भोजन से पहले उत्तानपाद आसन, भोजन के बाद सुप्त वज्रासन, शाम को लगभग चार बजे मयूरासन तथा रात्रि में सोते समय बालासन -ये पांच आसन प्रत्येक पुरुष और स्त्री के लिए अनिवार्य हैं।

नित्य एक घंटा शांत चित्त से प्रभु के समीप बिताना चाहिए, जल्दी उठना, स्नान आदि से निवृत्त होना और पद्मासन में बैठकर निर्मल चित्त से प्रभु का ध्यान करना दीर्घजीवी बनने के लिए आवश्यक तत्व है.

प्रातः शौच जाने से पूर्व काग आसन में बैठकर एक किलो पानी पीना उचित है, यह पानी रातभर ताम्बे के बर्तन में भरा हुआ हो और सुबह इसको पी लिया जाये, इससे शरीर के अंदर के समस्त अंगों की सफाई हो जाती है।

प्रातःकाल उठकर 60 बार लम्बी-लंबी सांस लेना, तेज गति से एक किलोमीटर चलना, भोजन और नींद के बीच एक घंटे का अंतर रखना, लकड़ी के पट्टे पर सोना और मादक पदार्थों से बचना इनका पालन करने से शरीर स्वस्थ व दीर्घजीवी बनता है।

क्षमा भाव रखना, द्वेष, ईर्ष्या, जलन विरोध के विचार छोड़ देना चाहिए, प्रसन्नचित्त रहना व जोरों से अट्टाहस करना दीर्घ जीवन के लिए आवश्यक है। चरक के शब्दों में इन सात सूत्रों का पालन करने पर व्यक्ति के पास रोग नहीं फटकता और वह पूर्ण स्वस्थ बना रहता है, ऐसा व्यक्ति निश्चय ही सौ वर्षों से ज्यादा आयु प्राप्त करता है।

मांगीलाल मिश्रीलाल नागर (गोलू)

प्रेस अपना पत्रिका दूसरों की

कलम अपनी
बात यारों दूसरों की
मंच अपना
माल अपना
छवि और तालियां दूसरों की।
दुकान अपनी
गद्दी अपनी
पर फैक्ट्री है दूसरों की।
समाज अपना
सहयोग अपना
पर गड़बड़ी है दूसरों की
पोस्ट अपनी
किल्लतें है दूसरों की
पद असुर से हो गए हैं।
क्योंकि प्रॉबलम और
दखलंदाजी दूसरों की।
रंग अपना
व्यंग्य अपना
पर हंसी औ' तिलमिलाहट है दूसरों की।
काव्य उनका
लव्हर प्यारे दूसरों की
कर रहे हैं ये सजावट
पर झांकी, दूसरों की
पंथ उनका
रफ्तार यारों दूसरों की
कम्पोजीटर, प्रूफ रीडर, एडीटर अपने
पर पत्र-पत्रिका याद रखिए दूसरों की।
(एक पल को भी ना बिसारे को भी अपना नहीं है स्वार्थ में फेविकोल से सब जुड़े हैं।)

गड़बड़ नागर
191, सत्य सुख सेठी नगर उज्जैन
मो. 9630111651

कमजोर वर्ग को सशक्त बनाना ही सच्ची सेवा

हमारे प्राचीन ग्रंथों में सेवा का बहुत महत्व प्रतिपादित किया गया है। सेवा भी विभिन्न प्रकार की होती है, प्रभु सेवा, देश सेवा, जनसेवा,समाजसेवा आदि सामान्यतः सेवालीन प्रकार की मानी गई हैं, जो निम्न हैं- (1) तन सेवा, (2) मन सेवा (3) धन सेवा। तीनों प्रकार की सेवा यदि पूर्ण समर्पण त्याग भाव के साथ परमेश्वर को समर्पण कर देतो हम उसे प्राप्त कर सकते हैं, और यही सेवा देश व समाज को समर्पण कर दें तो देश व समाज का सर्वांगीण विकास होकर उसे नई दिशा मिलती है। इसमें किंचित भी संदेह नहीं है।

उक्त तीनों में तन (शरीर) का प्रथम स्थान है।उसके बाद मन व धन का है। यदि हम स्वस्थ हैं तो स्वस्थ मन होता है। दोनों में सक्रियता है लगन व त्याग दीर्घ आकांक्षा है, तो धन तो सहज ही प्राप्त हो जाता है। कहा भी है- **पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया।**

तन-मन स्वस्थ है तो उसके लिए सम्पूर्ण विश्व स्वस्थ है। इसलिए तन, मन की सेवा सेवक बनकर सेवा करना उत्तम कहा गया है। श्री रामचरित मानस में भरतजी इसी विषय को महत्व देते हुए कहते हैं-

सिर भर जाऊँ उचित अस मोरा।
सबते सेवक धरम कठोरा।

सेवा का धर्म भरतजी ने कठोर माना है।

इसलिए आज समय की मांग है कि हम समाज के लिए तन, मन और धन से सेवा करने के लिए तैयार हो जायें। हमें इस विषय में गहन और आत्मीयता से विचार करना होगा।अन्ततोगत्वा पुनः हम संकीर्णता त्यागकर समाज की प्रगति की ओर उन्मुख हों, समाज में हम सब समान हैं। समाज में कमजोर वर्गों को ऊपर उठाने का सफल प्रयत्न करेंगे तो वह दिन दूर नहीं, जब हम कृष्ण भक्त नरसी मेहता के वंशज उनके ही समान सम्पन्न वैभवशाली भक्त बनकर नागर समाज की उज्ज्वल कीर्ति विश्व में फैलाने का प्रयत्न करेंगे। भगवान हाटकेश्वर की अनवरत कृपा समाज पर बनी रहे, इसी मंगलमय कामना के साथ उनसे विनय करते हैं।

शुभम।

आचार्य पं. यदुनंदन नागर
सदाशिव आश्रम
झण्डावद नलखेड़ा, जिला शाजापुर
मो. 9630164151
फोन- 07361-206079

विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून पर विशेष

गोबर के कंडों पर शवदाह के लाभ

अब उत्तर बिहार ने गोबर के नए उपयोग ढूंढ लिए हैं। शव को जलाने के लिए आम की लकड़ियों के बजाय सूखे गोबर का उपयोग प्रशंसनीय कदम है। यहां इस सूखे गोबर को 'गोरह' कहा जाता है। 'दीजू' आम का प्रकार। इसकी लकड़ी में भारी कमी आ जाने के कारण इस विशेष तकनीक का आविष्कार किया गया है।इसे समय की आवश्यकता कहा जाए या मजबूरी यह कदम सबके लिए अनुकरणीय है। पिछले मानसून में आई बाढ़ इसका सबसे बड़ा कारण है। चूंकि 'दीजू' की मांग सदियों से भारी मात्रा में रही है, क्योंकि इसकी लकड़ी का फर्नीचर बहुत मजबूत होता है। इसकी कमी के कारण गोबर की मांग बढ़ी है। बाढ़ के कारण बिहार में केवल 7 प्रतिशत ही वन रह गए हैं तथा उत्तर बिहार में मात्र 2 प्रतिशत वनों को काटने का कानून सख्त होने के कारण भी यहां गोबर का प्रचलन बढ़ा है।

मशहूर प्रोफेसर विश्वनाथ झा ने यह खोज की है कि यह तकनीक सफल है, क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुसार गोबर को शुद्ध माना गया है और कम प्रदूषण के साथ यह दोगुनी तेजी से काम करता है। एक नई तकनीक में लोग एक बड़ा गड्ढा खोदकर उसमें लंबी लकड़ी की तरह गोबर को आकार देकर 3-3 के जोड़े से रखते हैं। नीचले भाग में तीन 'गोरख' को रखकर उसके ऊपर गीली मिट्टी जमा दी जाती है। इसके ऊपर फिर 3 गोरख रखकर शव रख दिया जाता है तथा आखरी गोरख रखने से पहले देख लिया जाता है कि प्रकाश जाने की जगह हो। तथा नीचले भाग तक आग पहुंच सके। इसके बाद शव दाह किया जाता है।

बिहार में शवदाह के लिए किए जा रहे इस प्रयोग को हमारे क्षेत्र में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।इससे लकड़ी की बजत की जा सकेगी तथा कम प्रदूषण होने से पर्यावरण भी बचाया जा सकेगा। बिहार में लगातार बाढ़ के चलते नावों में शवदाह किया जाता था। ज्यादा मात्रा में मौत होने के कारण नावों में सूखे गोबर से भरी नावों के बीच में शव रखकर तथा उन्हें जलाकर नदी में फेंक दिया जाता था।

संकलन- नवीन झा, इंदौर मो. 94250-62415

दुख को भगवान का प्रसाद समझें

मानव जीवन में कितनी ही तकलीफ आए परंतु उसे ईश्वर का प्रसाद समझकर उसे कभी गलत न मानकर भक्ति से भरा हुआ रखना चाहिए। कृष्ण भगवान, रामजी जैसे अनेक अवतारों और कबीर, गुरुनानक जैसे संतों पर विपत्तियां आई, परंतु वे अपने दुःख से दुःखी नहीं हुए। सुख और दुख तो जीवन में लगे ही रहते हैं। हमेशा सुख भी अच्छा नहीं है, क्योंकि हमेशा मिठाई खाएंगे तो बीमार पड़ जाएंगे, कभी मीठा तो कभी नमकीन तो कभी व्रत करना चाहिए। सुख-दुख तो आते रहते हैं। हमें उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए। इसी का नाम तो दुनिया है। किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को घबराना नहीं चाहिए।मैं बहुत परेशान हूं, मैं बहुत दुःखी हूं, मेरा कोई नहीं है। ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए। हममें भी ऐसी शक्ति है, जिसे चैतन्य शक्ति कहते हैं उसे दुनिया का कोई भी व्यक्ति नहीं छीन सकता। ऐसा विचार कभी मन में आने ही न दो, जिससे मन में दुख हो, भय हो, चिन्ता हो और यदि मन में आ जाए तो यही समझो कि ये मेरे नहीं। ये तो मन के हैं। दुःख कब होता है, जब मन में इच्छा रखते हैं, और वह नहीं मिलती। कभी होता है, मुझे ये मिले, वो मिले और मिल जाता है तो सुख ही सुख लगता है। लालच बढ़ जाता है। आदमी की तृष्णा नहीं मिटती। आदमी का मन उसके वशिभूत हो तो अच्छा होता है। जैसे बत्तीस दांत हैं यदि उसमें से 31 दांत रह जाते हैं तो उसे 31 दांत की पड़ी नहीं होती, वो पूरा ध्यान एक दांत जो गिर गया है उसी में लगाए रखता है। जैसे किसी के घर में कोई फर्नीचर देखा, पसंद आ गया तो इसी चिंता में रहता है कि अरे मैं भी ऐसा लूंगा।

अरे जो है उसका तो आनंद ले, जो नहीं पा सकता उसके पीछे क्यों दौड़ता है। होड़ करने में ही अपना जीवन खोता रहता है। इसीलिए कहा है - जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहीये। तभी ईश्वर की प्राप्ति सहज रूप से हो सकती है।

सौ. अर्चना आशुतोष याज्ञनिक, बड़ौदा

वाद-विवाद प्रतियोगिता-10

विषय - समाज के लिए धर्मशालाएं बनें या आधुनिक मैरेज गार्डन?

परिवर्तनशील समय में धर्मशालाओं से मोह भंग होने के कारणों पर पहले नजर डाल लें। वर्षों पूर्व बनी अनेक धर्मशालाएं आज वाहन-पार्किंग की व्यवस्था न होने से अनुपयोगी हो गई हैं। आज हर कोई व्यक्ति आधुनिक मैरेज गार्डन में विवाह-समारोह करना चाहता है- (1) खुली जगह होने से, (2) वाहन पार्किंग की जगह होने से। (3) यह स्टेटस सिम्बल भी है। वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने मैरिज गार्डनों के लाभ-हानि गिनाए हैं। मैरिज गार्डन खुले होने से निश्चित रूप से मौसम खराब होने से कार्यक्रम में बाधा पड़ती है। इसके उपाय हेतु आजकल मैरिज गार्डन में भी अस्थाई शेड लगाने की व्यवस्था है। चूंकि धर्मशाला के बजाय गार्डन विकसित करने में कम खर्च लगता है, साथ ही नई पीढ़ी को धर्मशाला के बजाय गार्डन ही अधिक पसंद हैं, अतः नागर समाज के लिए मेरा सुझाव है कि वे कम खर्च से निर्मित होने वाले मैरिज गार्डन ही बनाएं, जहां समाजजनों के मंगल प्रसंग के साथ नियमित धार्मिक आयोजन जैसे हाटकेश्वर जयंती, नरसी मेहता जयंती, नवदुर्गोत्सव के गरबे सम्पन्न हो सकें। साथ ही जब वह स्थान अपने समाज के कार्यक्रमों से रिक्त हो तो अन्य समाजों को देकर आय का साधन बना सकें। समाज के लिए कम खर्च में अधिक आय का साधन मैरिज गार्डन हो सकते हैं।

धर्मशाला निर्माण में चूंकि अधिक व्यय होता है तथा आर्थिक सम्पन्नता के युग में उनका आकर्षण भी कम होता जा रहा है। यहां स्थान विशेष पर उपयोग-अनुपयोग में अंतर हो सकता है। जैसे उज्जैन में धर्मशालाएं जरूरी हैं, क्योंकि वहां सिंहस्थ के साथ ही तीर्थ यात्रियों का आवागमन वर्षभर बना रहता है। ओंकारेश्वर में भी धर्मशाला जरूरी है, किंतु इंदौर में धर्मशाला की अब कोई उपयोगिता नहीं है। यहां मैरिज गार्डन ही उपयुक्त है, जहां हमारे समाज के आयोजन हो सकें, साथ ही धर्मशाला के बजाय छात्रावास का निर्माण कराया जाए। क्योंकि यहां बड़ी मात्रा में विद्यार्थी बाहर से आते हैं। मेरा सुझाव है कि स्थान विशेष पर आवश्यकतानुसार धर्मशाला या मैरिज गार्डन का निर्माण कराया जाए, ये समाज की धरोहर हमारे उपयोग के साथ-साथ आय का साधन भी बन सके।

-सम्पादक

आगामी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है ।

क्या 'माँ' का देहावसान हो जाने के बाद उनके मायके परिवारों का प्रेम कम हो जाता है?

वाद-विवाद प्रतियोगिता 9 के विजेता
पी.आर. जोशी, इंदौर

समाज के लिए आधुनिक गार्डन बने

आज विश्व 21वीं सदी में तेजी से गुजर रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने आमूल परिवर्तन कर दिया है। आज समाज का दायरा अत्यधिक विस्तृत हो गया है। पहले समाज के सांस्कृतिक-धार्मिक कार्यों में परिवार एवं निकटतम रिश्तेदारों को ही निमंत्रित किया जाता था। वे ही समाज के सुख-दुःख में इकट्ठा होते थे। विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिक संचार एवं यातायात के साधनों ने क्रांति कर दी है। समाज से जुड़ने वाले लोगों में जाति, मोहल्ले के, जहां आप नौकरी करते हैं वहां तथा अन्य आपके परिवार के सदस्यों का बड़ी संख्या में सम्पन्न एवं व्यवहार है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को एकत्रित करने वाली धर्मशालाएं है ही कितनी?

परिवार के विवाह समारोह में चाहे कितनी भी दूर कार्यक्रम हो तथा जिनके उस परिवार से संबंध हैं तो वे स्वयं का या किराये के यातायात के साधनों का जैसा कार, आटो रिक्शा, बस आदि का उपयोग कर कार्यक्रम स्थल पर पहुंच ही जाते हैं। धर्मशालाओं के आसपास इतनी भूमि खाली नहीं है कि वहां इन आने-जाने वाले यातायात के साधनों को पार्किंग किया जा सके। आधुनिक गार्डनों में पार्किंग व्यवस्था सबसे सुंदर व व्यवस्थित होती है। धर्मशालाओं प्रातः कुएं पेयजल के लिए तथा टंकियां होती हैं वे वर्षों से साफ-सफाई न होने से पेयजल जल दूषित रहता है। प्रातः गार्डनों में ट्यूबवेल होते हैं, जिसमें शुद्ध पेयजल प्राप्त होता है। धर्मशालाओं में छोटे-छोटे कमरे रहते हैं, जिनमें प्रायः पंखे, एसी, टीवी, टेलीफोन एवं कूलरों का अभाव रहता है।

आधुनिक गार्डनों में गर्मी व वर्षा से बचाव हेतु कमरों व हॉल की व्यवस्था रहती है। गार्डनों में संचार व्यवस्था कमरों में उपलब्ध होने से व्यक्ति कार्यक्रम के आनंद के साथ ही साथ अपने महत्वपूर्ण व्यस्त जीवन का पूरा-पूरा लाभ लेता है।

अधिकांश शहरों में धर्मशालाएँ महीनों खाली न पड़ी रहें इसलिए उनमें अनेक जगह विद्यालय स्थापित कर दिये गये हैं। जब कोई समाज का कार्यक्रम वहां होता है तो बच्चों के स्कूल की छुट्टी कर दी जाती है। इससे बच्चों का शैक्षणिक नुकसान होता है। धर्मशालाओं के कमरे व शौचालयों का अधिक समय तक उपयोग न होने से विवाह के समय ही साफ-सफाई होती, जो स्वास्थ्य के हित में नहीं है।

धर्मशालाओं में जगह कम होने से बैठकर भोजन वअयवस्था करना पड़ती है। जिसमें श्रम व धन का अपव्ययहोता है। बैठकर भोजन व्यवस्था में महिलाओं एवं पुरुषों की पंक्तियां अलग-अलग होती हैं। इससे परिवार सहित भोजन करने का आनंद प्राप्त नहीं होता तथा बाहर बैठकर पंक्तियों की साफ-सफाई के पश्चात भोजन प्राप्त होता है। इससे व्यस्ततम जीवन में समय नष्ट होता है।

आधुनिक गार्डनों में एक साथ ही अन्य परिवारों के साथ चर्चा कर भोजन करने से आनंद प्राप्त होता है। धर्मशालाओं में सुरक्षा व्यवस्था अप्राप्त होती है। अतः चोरियां भी होती रहती हैं। आधुनिक गार्डनों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था होती है। सुरक्षा कर्मचारी प्रत्येक आने-जाने वाले व्यक्ति पर कड़ी नजर रखता है।

धर्मशालाओं में एक बहुत बड़ी संख्या वाले कार्यक्रम हेतु बर्तन, जल, कुर्सियां, विद्युत साज-सज्जा एवं टेंट की स्वयं की व्यवस्था नहीं होती है। गार्डनों के पास इस समस्या का समाधान है। उनके पास पर्याप्त साधन व कर्मचारी की एक फौज रहती है। धर्मशालाओं में भीड़ ज्यादा होने से कोई दुर्घटना घटित हो जाने से भीड़ में भगदड़ होने पर वृद्ध, महिलाओं एवं बच्चों को दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है। कार्यक्रम प्रायः धर्मशालाओं

की छतों पर रखे जाते हैं तथा नीचे हाल में दुल्हा-दुल्हन का आशीर्वाद समारोह चलता रहता है।

धर्मशालाएं शहर के मध्य बनाई गई हैं। इसके आसपास बाजार होने से यातायात प्रभावित होता है। गार्डन में भोजन व्यवस्था खड़े-खड़े होती है। अतः जूते एवं चप्पल खोने व चोरी का भय नहीं होता है। अनेक धर्मशालाओं में लगभग कोई न कोई मंदिर अवश्य होता है तथा हमारी संस्कृति इनकी मर्यादा पालन हेतु जूते-चप्पल बाहर रखकर अंदर जाते हैं, जिससे मुख्य द्वार के पास जूते-चप्पलों का ढेर हो जाता है। गार्डन में बच्चों के लिए विशेष रूप से खेलकूद, झूले, फिसल पट्टी आदि की व्यवस्था रहती है। इस प्रकार आज के समय की मांग जनसंख्या वृद्धि के कारण गार्डनों के उपयोग हेतु विवश है।

नरेन्द्रकुमार मेहता
एम-1/7, एमबीए क्वाटर्स
विक्रम विश्वविद्यालय केम्पस देवास रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2510708

धर्मशाला सुरक्षित, गार्डन असुरक्षित

मेरे विचार में समाज के लिए धर्मशाला का निर्माण करना ही उचित है। आधुनिक गार्डन नहीं। कारण यह है कि धर्मशाला में समाज के कार्य सुरक्षित ढंग से सम्पन्न किये जा सकते हैं। एक वाकया जो मेरे सामने आया उससे भी मुझे यही एहसास हुआ कि समाज के लिए भी धर्मशाला बनना उचित है। जो वाकया मेरे सामने आया वह कुछ इस प्रकार था कि हमारे मोहल्ले में एक परिवार में लड़की की शादी थी। मुझे भी निमंत्रण मिला था। उस परिवार ने एक गार्डन में आमंत्रित लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था की थी। काफी स्टाल लगाये गये थे, जिनमें कई प्रकार के आयटम थे। मैं करीब 8 बजे वहां पहुंचा। काफी लोग आये थे और खाना भी प्रारंभ हुआ ही था। मैंने भी प्लेट उठाई और अपने पसंद की सामग्री लेकर खाना चालू किया। मुश्किल से एक-दो ग्रास ही लिए होंगे कि अचानक इतनी जोर से पानी आया कि प्लेट का सारा खाना खराब हो गया, वैसी की वैसी प्लेट वेस्टेज बाक्स में पटकी और एक छोटा शेड गार्डन में बना था उस ओर भागा, काफी गीला तो हो ही गया था। वहां भगदड़ मच गई और सारे लोग छोटे से शेड की तरफ भागे, परंतु लोग अधिक होने से लोगों की हालत खराब हो गई। स्टालों का खाना भी खराब हो चुका था। सिर्फ दस मिनट पानी गिरा होगा, लेकिन सारी व्यवस्था बिगड़ गई। पानी बंद होने के बाद उस परिवार ने फिर से कुछ आयटम, सब्जी, पूड़ी की व्यवस्था की, परंतु फिर जोरदार पानी आ गया। इस प्रकार कुल मिलाकर तीन बार पानी आया। सारा खाना खराब हो गया तथा हजारों रुपए का नुकसान उस परिवार का हुआ तथा आमंत्रित कई लोगों को भूखा ही घर जाना पड़ा। यह घटना बिल्कुल सत्य घटना है।

अतः मैं सफलता हूं कि आधुनिक गार्डन समाज के कार्यों के लिए सुरक्षित स्थान नहीं कहा जा सकता है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि गार्डन के लिए पानी जैसी महत्वपूर्ण वस्तु का अपव्यय अधिक होता है। रोजाना हजारों लीटर पानी गार्डन को तरोताजा रखने के लिए बहाना पड़ता है। आज पानी कितना बहुमूल्य है, यह सभी जानते हैं, जान गये होंगे कि पानी कितना कीमती होता है। अतः समाज के लिए धर्मशाला ही उचित और सुरक्षित स्थान होता है।

श्री सुरेन्द्र शर्मा (नागर, 106, अलकापुरी, देवास मो. - 9303228767

धर्मशाला में व्यापक हित

भारतीय संस्कृति में सर्वहिताय, सर्वजनाय की सुखद परिकल्पना की गई है। उसी तरह नीति वाक्यों में कहा गया है- सर्वेजना सुखिनो भवन्तु।

भारतीय संस्कृति में स्वहित के स्थान पर समग्र मानवता के सुख-शांति की कामना की जाती है, हमें गुजरात के प्रसिद्ध संत नरसिंह मेहता के शब्द याद आते हैं, जिनको महात्मा गांधी ने संपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेरक शब्दों के रूप में प्रयुक्त किया। वे शब्द निम्न हैं- वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे। इस तरह उपरोक्त वाक्यों को उद्धृत कर हम ये दर्शाना चाहते हैं कि समाज के प्रति हमारे कुछ दायित्व हैं और समाजहित हमारे लिए सर्वोपरि है। हम हमारे सुख-दुःख तक ही सीमित रहें यह उचित नहीं है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता-10 के शीर्षक 'समाज के लिए धर्मशालाएं बनें या आधुनिक गार्डन' के संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगी कि बाग-बगीचों को लगाने के स्थान पर धर्मशालाओं का निर्माण करना व्यापक परिपेक्ष में समाज के हित में है। इसका अर्थ यह नहीं है कि बाग-बगीचे लगाने के मैं विरुद्ध हूं। बाग-बगीचे होने चाहिए समग्र रूप से इनका विस्तार और विकास पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इससे शहर की सुंदरता में वृद्धि होती है। बच्चे, वृद्ध और समाज के सभी वर्गों को बगीचे में जाने से सुकून मिलता है और ये मनोरंजन के अच्छे स्थल होते हैं, फिर भी जहां तक प्राथमिकताओं का सवाल है या विकल्पों की बात है, वहां मैं बगीचों के स्थान पर धर्मशालाओं को बनाने की प्राथमिकता देती हूं।

आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व हर बड़े और मध्यम दर्जे के शहरों में प्रायः सेठ-साहूकार, धर्मशालाएं बनवाते थे। प्रत्येक तीर्थस्थलों पर पांच-छह धर्मशालाएं हुआ करती थी। हर बड़े अस्पतालों के पास भी धर्मशालाएं हुआ करती थी। औद्योगिकीकरण और उदारीकरण के युग में लोगों का सोचने का तरीका व्यावसायिक होता जा रहा है। आज अमीर व्यक्ति धर्मशाला के स्थान पर बड़े-बड़े मॉल्स, फाइव स्टार जैसी होटलों का निर्माण कर रहे हैं, जहां साधारणजन ठहरने की हिम्मत नहीं कर सकते। महंगे, आलीशान, वातानुकूलित होटलों में ठहरना आम जनता के लिए संभव नहीं है। गलाकाट प्रतियोगिता के युग में धर्मशालाओं का निर्माण समाज के हित में है। कम लागत में खाने और ठहरने की व्यवस्था होने के कारण समाज के साधारणजन इसका अधिक से अधिक लाभ ले सकेंगे। हमारे परम्परागत तीर्थ जैसे अंबाजी, जूनागढ़, बड़नगर आदि स्थानों पर लोग आ-जा सकेंगे, जिससे सम्पर्क बढ़ेंगे। एक-दूसरे के नजदीक आएंगे और समाज के हित में कई लाभकारी योजनाएं बना सकते हैं इसलिए बगीचों के निर्माण में, मैं सहमत होते हुए भी धर्मशाला के निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता देती हूं, क्योंकि इसमें समाज के व्यापक हित निहित हैं।

विनती नागर
घंटाघर के पास, नागरवाड़ा
बांसवाड़ा (राज.) मो. 9460409654

वाद-विवाद प्रतियोगिता-10

निर्माण कम... आय ज्यादा

पुराने समय में धर्मशाला बनाने का उद्देश्य धर्म के कार्यों, विवाह व अन्य सामाजिक या पारिवारिक कार्यों हेतु भवन बनाना होता था। धर्मशाला में कुछ कमरों में विद्यार्थियों को रहने या किसी परिवार को किराये से रखने से धर्मशाला के रख-रखाव का खर्च निकल जाता है। सामान्यतः धर्मशाला में कुछ कमरों के साथ बड़े हॉल तथा रसोईघर का निर्माण किया जाता है। आजकल बंद स्थान में समारोह कम पसंद किया जाता है। क्योंकि यहां समारोह में इच्छानुसार सजावट व खुली हवा नहीं होती है। धर्मशाला में किराया भी कम मिलता है। अतः धर्मशाला बनाना समय के अनुसार उचित नहीं है। गार्डन का निर्माण करना उचित है। जहां कुछ कमरों, रसोईघर बनाने के बाद शेष स्थान को गार्डन के रूप में विकसित किया जाता है। गार्डन में भी शेड वाला स्थान बनाना चाहिए, ताकि धूप व बारिश से बचने की व्यवस्था रहे। गार्डन में पार्किंग की भी पर्याप्त व्यवस्था होना चाहिए।यदि सर्वसुविधायुक्त गार्डन बनता है तो आय भी धर्मशाला की तुलना में अधिक होती है और निर्माण कार्य कम करना पड़ता है, जिससे खर्च कम होता है और आजकल के समय के अनुसार पसंद भी किया जाता है। अतः अधिक उपयोग होता है।

अल्पना दवे,
259, सी राजेन्द्र नगर, इंदौर, 2321470

धर्मशाला ज्यादा उपयोगी है

सदियों से हमारे समाज में यह परम्परा रही है कि निराश्रित को आश्रय देकर अपने सामाजिक, धर्म का पालन किया जाए। इसी के चलते राजाओं और नगर सेठों द्वारा धर्मशालाओं का निर्माण की परम्परा शुरू हुई। धीरे-धीरे समय के साथ-साथ इन्होंने आधुनिक रूप धारण कर शुरू कर दिया है और इसे मैरिज गार्डन का नाम दे दिया है। अब अगर हम इन दोनों की उपयोगिता पर विचार करें तो हमें लगता है कि निम्न कारणों से धर्मशाला ज्यादा उपयोगी है-

मैरिज गार्डन की अपेक्षा धर्मशाला बहुत किफायती होती है।

इसका उपयोग किसी भी मौसम और समय में किया जा सकता है। धर्मशाला गार्डन की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक होती है। इसमें कोई अधिभार नहीं होने के कारण सभी वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी होती है।

धर्मशालाएं अधिकतर शहरी सीमा में होने के कारण सभी लोगों की पहुंच में होती हैं। धर्मशाला का उपयोग सभी छोटे-बड़े कार्यक्रमों के लिए किया जा सकता है।

उपरोक्त उपयोगिताओं को देखते हुए लगता है कि धर्मशालाओं को सभी वर्ग के लोग एवं सभी छोटे-बड़े कार्यों के लिए ज्यादा उपयोगी है। अतः हमारे समाज को भी धर्मशालाएं बनाने पर अधिक ध्यान देना चाहिए न कि मैरिज गार्डन, क्योंकि धर्मशालाओं का चलन सदियों से रहा है एवं सदियों तक रहेगा।

सोनाली पंडित
43-सी, पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
99772-35009

व्यंजन विधि प्रतियोगिता-9

मौसम के अनुसार जूस बनाने की विधियां आपके लिए प्रस्तुत की हैं। विगत प्रतियोगिता में विजेता रही हैं श्रीमती सुधा देवीदास गुरु (खंडवा)। आगामी व्यंजन प्रतियोगिता का विषय स्वीट कॉर्न से बनने वाले व्यंजनों की विधि आप तुरंत २५ जून से पहले लिखकर भेज देवें।

फालसा जूस

सामग्री- 125 ग्राम फालसा, आधा कप नीबू का रस, 150 ग्राम शक्कर, मीठा रंग, नमक/काला नमक/चाट मसाला स्वाद के अनुसार।

विधि- थोड़ा पानी लेकर उसमें फालसा डालें एवं लगभग दो घंटे बाद मिक्सर में पीसें। चावल छानने की छलनी से छान लें। शक्कर की एक तार की चासनी बनाएं। उसमें नींबू का रस डाल दें, फिर फालसे के पेस्टको उसमें डालकर 10 मिनट तक गर्म करें। ठंडा होने पर रंग डालें और बोतल में भरें, जब कभी सर्व करना हो तो 2/3 टेबल स्पून डालकर ठंडा पानी, शक्कर, नमक आदि डालकर बर्फ के टुकड़ों के साथ सर्व करें।

सोनाली पंडित
43-सी, पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
99772-35009

फ्रूट पंच (जूस)

सामग्री- 1 कप ताजा नारंगी का रस, 1 कप अनानास (पाइनेपल) का रस, 1/4 कप नीबू का रस, 1 कप पानी, 5 चम्मच (चाय के) शक्कर, 1/2 बोतल सोडा वाटर या गोल्ड स्पाट, सजावट के लिए सेव के टुकड़े, पुदीने के पत्ते एवं केले/आम के टुकड़े

विधि- 1/2 कप पानी में शक्कर घोलकर उसे उबालकर ठंडा कर दें और बाकी बचा हुआ पानी एवं सभी रस मिलाकर फ्रीज में ठंडा कर दें। सर्व करने से पहले सोडा वाटर/गोल्ड स्पाट से 1/2 भरे ग्लास में यह फ्रूट पंच डालकर उसके ऊपर ग्लास में पुदीने के पत्ते/फलों के टुकड़े डालकर एकदम ठंडा सर्व करें।

सीमा पंडित
43-सी, पार्श्वनाथ नगर, इंदौर
99268 74892

ट्रिपल टेस्ट

क्या चाहिए- 1 कब उबली केरी का गूदा, 1 संतरा पाइनपल का गूदा, 1 कप पिसी शक्कर, छोटा चम्मच नमक, थोड़ी-सी हरी गुलाब कतरी, आधा कप कूटी हुई बर्फ।

ऐसे बनाएं- संतरे को छीलकर बीज निकाल दें। अब कैरी, पाइनपल का गूदा और संतरे की फांक मिक्सी में डालें। गिलास पानी डालकर अच्छी तरह मिलाएं और मोटी छलनी से छान लें। पिसी शक्कर, नमक और खुटी हुई बर्फ मिलाकर एक बार फिर मिक्सी में अच्छी तरह से मिलाएं। मिश्रण को गिलास में डालें और हरी गुलाब कतरी के टुकड़े ऊपर से डालकर सर्व करें।

नाम- आयुषी नागर
ब्यावरा (म.प्र.)
मो. 9826238434

ग्रीन मैंगो स्क्वैश

सामग्री- कच्ची कैरी 1 किलो, पुदीना 250 ग्राम, अदरक 50 ग्राम, शक्कर 1 किलो, काला नमक 20 ग्राम, सोडियम बैंजोएट 5 ग्राम, ग्रीन मैंगो एसेंस, ग्रीन कलर।

विधि- केरी को धोकर, छीलकर किस लें और थोड़ा सा पानी डालकर मिक्सर में पीस लें। इसके साथ साफ किया हुआ पुदीना तथा अदरक छीलकर, टुकड़े करके पीस लें। पीसे हुए मिश्रण को छान लें। शक्कर में थोड़ा सा पानी डालकर गोली वाली चाशनी बनाएं।

चाशनी गैस से उतारकर उसमें छना हुआ रस डाल दें। इसमें काला नमक, सोडियम बैंजोएट, ग्रीन मैंगो एसेंस की कुछ बूंधें व एक चुटकी ग्रीन कलर डालें। ग्रीन मैंगो स्क्वैश तैयार। एक चौथाई स्क्वैश व तीन चौथाई ठंडा पानी व बर्फ के टुकड़ों के साथ सर्व करें। यह स्क्वैश पेट व गर्मी की तकलीफ व लू से बचाने के लिए रामबाण औषधि का कार्य करता है।

अल्पना दवे
259-सी राजेन्द्र नगर, इंदौर

चीकू का ज्यूस

सामग्री- 5 चीकू, 1 बड़ा कप दूध, 1 कटोरी शक्कर, 2 बड़े चम्मच काजू, पिस्ता,

विधि- सबसे पहले चीकू को धोकर छिलका उतार लें फिर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके उसमें शक्कर, दूध, बर्फ डालकर 7-8 मिनट तक मिक्सर में डालकर ज्यूस बना लें। एक ग्लास में डालकर ऊपर से काजू, पिस्ता डालकर सर्व करें। **साधना नागर**

एप्पल ज्यूस

सामग्री- 5 बड़े एप्पल, 5 चम्मच शक्कर, 1 कटोरी दूध, 7-8 बर्फ के टुकड़े

विधि- सबसे पहले एप्पल को छालकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। फिर उसमें शक्कर, दूध व बर्फ के टुकड़े डालकर मिक्सर में डालकर उसका ज्यूस बना लें और ठंडा-ठंडा सर्व करें।

व्योमा नागर

मैंगो की रबड़ी

सामग्री- दूध 5 कप, आम दो मध्यम आकार के, मावा आधा कप, हरी इलायची एक छोटा चम्मच चीनी, आधा कप पिस्ता सजाने के लिए।

विधि- आम के छिलके निकालकर एक आम को बारीक-बारीक काट लें, तथा दूसरे आम को काट कर मिक्सी में पेस्ट बना लें। अब दूध को गैस पर चढ़ाएं तथा तब तक उबाले जब तक दूध थोड़ा गाढ़ा हो जाए। जब दूध गाढ़ा हो जाए तो उसमें मावा, पिसी इलायची, चीनी डालकर कुछ देर और पकाएं और फिर कुछ समय बाद गैस बंद कर दे। जब मिश्रण थोड़ा ठंडा हो जाए तो इसमें मैंगो पेस्ट डालकर अच्छी तरह मिलाएं। तैयार रबड़ी को बारीक कटे आम और पिस्ता कतरन से सजाकर सर्व करें। **कु. अक्षता भट्ट**
मो. 9753799389

आपरेशन से बचाया होम्योपैथी ने

स्वास्थ्य संबंधी टीवी चैनल हेल्पलाइन पर एलोपैथी, आयुर्वेदी और होम्योपैथी के अनुभवी डॉक्टरों को अपनी चिकित्सा पद्धति से रोगों का निदान सुझाते हुए आपने भी देखा होगा, परंतु कई लोगों के मस्तिष्क में यही विचार आता है, बातचीत में कहते हैं कि होम्योपैथी की साबुदाने की छोटी-छोटी गोलियां इतने बड़े शरीर में क्या असर करती होगी? परंतु मैं अपने अनुभव से इस चमत्कारी चिकित्सा पद्धति की कायल हो गई हूं। इंदौर में नाती के जन्मोत्सव पर

आनंदोत्सव का वातावरण था और उसमें बच्चे में अचानक हार्निया रोग के दर्शन हो गये, परंतु बालरोग विशेषज्ञ श्री राकेश अग्रवाल से सम्पर्क किया तो दो माह के इस बालक को आपरेशन करवाकर उसका निदान करवाने की सलाह दी। बच्चे का परेशानी से रोना असहनीय था। डॉक्टर ने दर्द निवारक दवाएं दीं। आपरेशन के लिए उन्हीं के माध्यम से दूसरे डॉक्टर से समय भी लिया गया, परंतु इस बीच होम्योपैथी के चमत्कारों को आजमाने का विचार किया। इंदौर में डॉक्टर तो ढेरों थे, परंतु बांसवाड़ा में 1939 से लगातार 70 वर्षों से जीवन धारा होम्यो केयर जो नागरवाड़ा के चौरा चौक पर संचालित हो रहा है उनसे सम्पर्क किया गया। डॉ. मेहुल त्रिवेदी का आश्वासन जादुई असर कर गया। उन्होंने दवाई दी और पूरी आस्था के साथ समय से खिलाने की हिदायत के साथ हम विदा हुए और आपरेशन का विचार छोड़ दिया। बिटिया को ससुराल तो जाना ही था। वह अहमदाबाद में अपने पति के साथ टीकाकरण के सिलसिले में जब भी डॉ. निरव वेणानी के वहां जाती तो उसे तुरंत आपरेशन करवा लेने का सुझाव दिया जाता। एक अवसर पर तो डॉक्टर ऐसे उत्तेजित हो गए कि मुझे तुम्हारे डॉक्टर का फोन नंबर दो मैं कहूंगा कि क्यों किसी को गलत उम्मीद में रखे हो। यह विश्वास नहीं अंधविश्वास है। परंतु बिटिया और दामाद अब तक आश्वस्त हो चुके थे कि आपरेशन की नौबत नहीं आएगी और इलाज चालू रखा। आखिर सफलता मिली। इस दौरान आपरेशन करवा चुके पालकगण भी परेशान थे कि उन्होंने बेकार में ही आपरेशन करवाया था। डॉ. मेहुल त्रिवेदी को जब बधाई देने क्लीनिक पहुंचे तो उन्होंने अपने रिकार्डसे कई अनोखे करिश्मे बताए। पथरी से परेशान 6 माह के बच्चे की पथरी निकालने का सफल प्रयोग वाले दम्पति से मुलाकात करवाई। गैस, एसीडीटी जैसे साधारण और चर्मरोग, बांझपन, सेक्स रोगियों को भी रोग मुक्ति दिलाई। उन्होंने बताया कि यह संस्थान डॉ. सेवकरामजी (दादाजी) ने कलकत्ता से गोल्ड मेडल के साथ डिग्री प्राप्त कर आरंभ की थी । उनके पश्चात उनके सुपुत्र और मेरे पिताश्री गिरधारीलाल त्रिवेदी ने इसके माध्यम से रोगियों का विश्वास जीता। उन्हीं के आशीर्वाद और मार्गदर्शन में लोगों को ऐलोपैथी के दुष्प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास कर रहा हूं। उनके पिताश्री के समयकी घटना है कोलकाता में एक प्रसंग में भाग लेने 20-25 नागर के निकट परिवार के लोग जा रहे थे कि सागर से एक दम्पति कोम्प्लीकेटेड प्रसव के लिए तत्काल बड़े शहर रेफर किए गए। वे ट्रेन में चढ़े, परन्तु 2-3 घंटे में ही ट्रेन में लेबर पेन आरंभ हो गया। स्थिति बिगड़ती गई। ट्रेन में डॉक्टर तलाशने गये। मगर कस्तूरबाग्राम इंदौर की एक नर्स ही उपलब्ध हो पायी। दस-दस मिनट में तीन पुड़िया दी गई और सुरक्षित प्रसव सम्पन्न हुआ। लेडिस कम्पार्टमेंट आपरेशन थिएटर बना हुआ था। कॉटन के कपड़े के अभाव में मुसाफिरों से ही कॉटन साड़ियां और पेटिकोट उपयोग में लाये गये। अगले स्टेशन रेलवे में एंट्री करवाकर टीकाकरण करवाकर प्रसुता पुत्री शिप्रा नामकरण के साथ विदा किया। बच्चों को होम्योपैथी दवाई देना भी आसान है, तो ऐसी पद्धति को क्यों नहीं अपनाया जाये? आवश्यकता उचित डॉक्टर के चयन की और धैर्य और आस्था के साथ उपचार करने की है।

श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा
20, आशीर्वाद
अम्बामाता मंदिर के पीछे कॉलेज रोड, बांसवाड़ा।

एक आशीर्वाद- मोबाईलमय भव्

कहते हैं आशीर्वाद में बड़ी ताकत होती है। बड़े बुजुर्गों का आशीष लिया जाए तो जीवन आनंदमयी हो जाता है। तो बात कहते हैं 'बात' की। प्राचीन समय में वार्तालाप या संदेश भेजने एवं प्राप्त करने के साधन देखें तो वे थे, बादल, कबूतर चंदा, डाकिया आदि। इसका प्रयोग हिन्दी सिनेमा में भरपुर हुआ जैसे 'जारे कारे बदरा बलम के पास, कबूतर जा जा जा, डाकिया डाक लाया... आदि। लेकिन इन माध्यमों से संदेश भेजना व प्राप्त करना कठिन होता था और जोखिमभरा भी। विशेषकर प्रेमियों के लिए। इस विषय में एक हिन्दी फिल्म में गाना फिल्माया गया कि 'खता हो गई मुझसे कासिद मेरे, रकीबों को पैगाम क्यों दे दिया।' तो लोगों ने सोचा होगा कि बुजुर्गों का आशीर्वाद मिले तो सुरक्षित हो और कारगर भी हो। बुजुर्गों का आशीष जैसे 'आयुष्मान भव, दीर्घायु भव, चिरंजीवी भव, यशस्वी भव, विजयी भव, सौभाग्यवती भव आदि का असर देर से होता है, तात्कालिक नहीं और उपयोगी भी नहीं। जैसे एक आशीर्वाद दूधो नहाओ और पूतो फलो, इस युग में क्या काम का जहां नहाने-धोने के लिए पर्याप्त पानी ही नहीं हो और दूध भी 28-30 रु. लीटर हो तो कौन दूध से नहाएगा और पूतो फलो तो किसी काम का नहीं, क्योंकि सरकार ही कहती है कि हम दो हमारे दो। वरन नौकरी नहीं और चुनाव में टिकट नहीं। ये सभी आशीर्वाद अब कॉमन हो गये हैं। ऐसी चीज का आविष्कार हो और आशीर्वाद मिले ताकि रूबरू घंटों बात होती रहे और बात करते-करते चलते जाएं तो बात भी होती जाए और बाबा रामदेवजी के कथनानुसार चलने-फिरने का व्यायाम भी हो जाए। (मोबाइल पर बात करते अक्सर लोग चलते हैं) शायद इन लोगों की व्यथा स्व. धीरूभाई अंबानी ने सुनी और उन्होंने प्रयास किया और आशीर्वाद दिया कि 'मोबाईलमय भवं' करलो दुनिया मुट्ठी में। तभी से कदाचित हर बुजुर्ग अपने से छोटे प्राणियों को यही आशीर्वाद देने लगा कि हे चिरंजीव मोबाईलमय भव। तो यह आशीर्वाद एकदम सार्थक हो गया, क्योंकि एक कर्मयोगी पुरुष ने शुरू किया और क्या हर व्यक्ति, बच्चे, महिला, विद्यार्थी को यह आशीष मिला और आकाशवाणी हुई कि एक आइडिया जो बदल दे आपकी दुनिया, वास्तव में दुनिया लोगों की मुट्ठी में (मोबाइल के रूप में) बंद हो गई और लोगों की दुनिया भी बदल गयी कि जिसको देखो उसके हाथ में मोबाइल। कार चालक हो या मालक, दूध वाला हो या माली, अधिकारी हो या कर्मचारी,सब्जी वाला हो या वाली, सफाई वाला हो या वाली, कारखाने वाला हो या अटाला वाला कोई नहीं बचा, मानो सभी बुजुर्गों का आशीर्वाद (मोबाइल मय भव) फलीभूत हो गया हो।

तो हम बात कर रहे थे 'बात' की कि अचानक सड़क पर धड़ाम की आवाज आई। लोग एकत्रित हो गये और मालूम हुआ कि कार-बाईक में भिड़ंत हो गई और बाईक सवार घायल हो गया। कारण पता चला कि बाइक चालक शीश कंधे पर झुकाकर मोबाइल को दबाकर बात करते हुए एक हाथ से बाईक चला रहा था और कार चालक कार चलाते हुए वाईफ से बात कर रहा था और हो गया हादसा। तो यह भी आशीर्वाद का फल ही समझा जाएगा कि आशीर्वाद 'मोबाइल मय भव' सार्थक हो गया, क्योंकि कार चालक एवं बाईक चालक दोनों पुलिस की मोबाइल वैन में थाने पहुंच गये।

ऐसे कई उदाहरण हैं, जिसका उल्लेख करें तो शायद 'जय हाटकेश वाणी' के संपादक मंडल को इसे प्रकाशित करने के लिए एक विशेषांक ही जारी करना पड़े।

मोबाइल का आशीर्वाद लोगों पर इस कदर छा गया कि मोबाइल कंपनियों के भी वारे न्यारे हो गई और उनके टैरिफ में भी होड़ शुरू हो गई कहां 3-6 रुपए के पल्सरेट से बात होती थी पर अब 5-10 पैसे पर बात शुरू हो गई। पान की, फोटो कॉपी की, एसटीडी बूथ की गुमटियां तो थी हीं अब मोबाइल और रिचार्ज की भी गुमटियां उग गई। अच्छा है पढ़े-लिखे लोगों को रोजगार तो मिले, पर क्या किसी ने इस बात पर गौर किया कि मोबाइल को शर्ट की जेब में रखने से वह हृदय को छू जाएगा तो हृदय धीर-धीरे डिस्चार्ज हो जाएगा, कान से ज्यादा देर लगा रखा तो कान का पर्दा 'बे पर्दा' हो जाएगा, गलत संदेश आने से दिमाग पर बोझ बढ़ेगा कि किसने और क्यों संदेश भेजा,संदेश यदि अश्लील है तो और भी खतरा, कटि प्रदेश में लटकाया तो सामने वाले को बात करने का मौका मिला कि मैडम आपका मोबाइल आ रहा है। सामने वाला होशियार हुआ तो मिस काल देकर उसके दिल की बात करेगा एवं आपका बिल बढ़ा देगा। बात उसको करनी है पर लोड़ आपके दिमाग पर होगा। सर्फ के विज्ञापन- उसकी साड़ी, मेरी साड़ी से ज्यादा सफेद क्यों की तर्ज पर किसी के मन में विचार आएगा कि उसका मोबाइल मेरे मोबाईल से ज्यादा बड़ा या अच्छा क्यों? और बढ़ गया टेंशन। मोबाइल के विज्ञापन ने क्या जादू किया कि एक दिन संसार की जनसंख्या के बराबर लोगों के पास मोबाइल हो जाएंगे जिससे संदेश/शुभ संदेश भेजने के लिए ग्रीटिंग कार्ड्स कम, एसएमएस ज्यादा भेजे जाएंगे और कार्ड्स भेजने में जो आत्मीयता थी वो केवल एसएमएस में खो जाएगी। बहुत वर्षों पहले एक अर्थशास्त्री ने व्यंग्य में कहा था कि Exploitation of educated fools, by greating un-necessary demand is a business जो वास्तव में आज सटीक हो रहा है, क्योंकि जब मोबाइल नहीं था तो क्या व्यक्ति का जीवन सुचारु एवं सुलभ नहीं था? खैर यहीं विराम देता हूं, क्योंकि मोबाइल पर भी ट्यून आ रही है कि उठा ले, उठा ले, मेरे दद्दू क्यों भाव खारिया है, मिसकॉल नहीं है। धन्य है आशीर्वाद मोबाईलमय भव

यशवंत नागर (भारासे)
सहायक आयकर आयुक्त (सैनि)
21, स्वाति विहार नानाखेड़ा, उज्जैन
फोन - 0734-2533151

आप और मैं, मैं और आप एक ही कश्ती के सवार हैं हम दोनों,
एक ही हश्र है दोनों का, फिर क्यों बेकरार हैं दोनों।।

वर्षा (रेन) ऋतु चर्या में विहार

इस ऋतु में वर्षा प्रारंभ हो जाती है। यह आदान काल का समय होता है। इस काल में मनुष्यों का शरीर दुर्बल रहता है और दुर्बल शरीर में जठराग्नि भी दुर्बल रहती है। वर्षा ऋतु में

1. भूमि से निकलने वाले वाष्पों से, 2 पानी बरसने से, 3 जल का अमल विपाक होने से जब अग्नि का बल क्षीण हो जाता है तब वातादि दोष प्रकुपित हो जाते हैं इसलिए वर्षा ऋतु में साधारण रूप से सभी विधियों का पालन करना चाहिए।

वर्षा ऋतु में आहार-

इस ऋतु में भोजन या पेय पदार्थों को सुसंस्कृत करके तथा थोड़ी मात्रा में, शहद मिलाकर लेना चाहिए। वर्षा एवं झंझावत के कारण जिन दिनों में विशेष ठंडक हो उन दिनों में वातजन्य विकास की शांति के लिए प्रधान रूप से अम्ल लवण रस भूयिष्ट घृतपक्व या तैलपक्व स्निग्ध भोजन करना चाहिए। अपनी जठराग्नि को व्यवस्थित रखने के लिए पुराने जौ, गेहूं का आटा, पुराने चावल को हींग जीरा, लहसुन आदि से छोके हुए दाल सूप के साथ खाना चाहिए। वर्षा काल में जल को थोड़ा गर्म करके पीना चाहिए।

वर्षा काल में विहार-

वर्षा ऋतु में शरीर को भिगोये हुए वस्त्र से रगड़ना चाहिए, उबटन लगाना चाहिए। पहनने वाले वस्त्र साफ हल्के और श्वेत होना चाहिए। झंझावत के समय मोटे वस्त्र पहने जा सकते हैं।

त्याज्य :-

1. जल मिला हुआ सत्तु
2. दिन में सोना
3. ओस में बाहर रहना
4. भारी एवं रुका हुआ नदी के जल का सेवन
5. भारी व्यायाम करना
6. धूप का सेवन करना
7. मैथुन करना
8. सीलन वाले स्थान पर रहना त्याज्य है।

(क्रमशः)

प्रस्तुति
डॉ. ब्रजेन्द्रकुमार पौराणिक
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शल्य विभाग, शास. धन्वंतरि आयु.
महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, उज्जैन

माँ से बचपन में पाया गया ज्ञान जीवन भर आता है काम

स्त्री मां के रूप में बच्चे की गुरु है। बच्चा अपने जन्म के बाद जब बोलना सीखता है तो सबसे पहले जो शब्द वह बोलता है वह होता है माँ। बच्चे के मुख से निकला हुआ यह एक शब्द मात्र शब्द नहीं, सुफल है उस माता द्वारा नौ महीने बच्चे को अपनी कोख में पालने व उसके बाद होने वाली प्रसव पीड़ा का।

माता को जो अनुभव होता है वही बालक के जीवन पर प्रभाव डालता है। माता से ही वह संस्कार ग्रहण करता है। माता के उच्चारण व उसकी भाषा से ही वह भाषा ज्ञान प्राप्त करता है। यही भाषा ज्ञान उसके संपूर्ण जीवन का आधार होता है। इसी नींव पर बालक की शिक्षा-दीक्षा तथा संपूर्ण जीवन की योग्यता व ज्ञान का महल खड़ा होता है।

माता का कर्त्तव्य केवल लालन-पालन व स्नेह दान तक ही सीमित नहीं है। बालक को जीवन में विकसित होने, उत्कर्ष की ओर बढ़ने के लिए माँ ही शक्ति प्रदान करती है। उसे सही प्रेरणा देती है।

समय-समय पर बाल्यकाल में माता द्वारा बालक को सुनाई गई कथा-कहानियाँ, उपदेश व दिया गया ज्ञान, बच्चे के जीवन पर अमिट छाप तो छोड़ता ही है। साथ ही जीवन में ऐसा प्रभाव डालता है जो बड़ी से बड़ी पुस्तकों को पढ़कर भी प्राप्त नहीं होता। बचपन में दिया गया ज्ञान ही संपूर्ण जीवन उसका मार्गदर्शन करता है तथा बच्चे की प्रकृति का निर्माण करता है।

बच्चे के प्रति माता का यह स्नेह परमात्मा का प्रकाश है। मातृत्व को इस धरती पर देवत्व का रूप हासिल है। मातृत्व के प्रति उच्चकोटि की श्रद्धा रखे बगैर देवत्व की पूजा व साधना नहीं हो सकती। माता त्याग व उत्सर्ग की प्रतिमूर्ति है अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं, सुख-सुविधाओं तथा आकांक्षाओं का त्याग कर वह अपने परिवार को प्रधानता देती है और स्वयं गौंण बन जाती है।

एक विद्वान के अनुसार माता अर्थात देवी और देवी शब्द का तात्पर्य है कि देना, देना उसका स्वभाव है। उसका दान कभी समाप्त नहीं होता, वह सिर्फ देती है लेती नहीं। इस देन में ही वह अपने आपको पाती है। केवल भारत में ही नहीं, ब्रिटिश काउंसिल द्वारा 102 देशों में कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार भी 'मदर' अंग्रेजी भाषा का सबसे सुंदर शब्द है। यही नहीं नारी शक्ति के प्रति सम्मान की परंपरा आज भी भारतीय इतिहास और चरित्र की प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है। भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनसे माँ के बलिदान, प्रेरणा व साहस की कहानियां उजागर होती हैं।

हमारी जन्म भूमि भी हमारी माँ है, जो सब कुछ देकर भी हमारी प्रगति से प्रसन्न होती है। बढ़ते बाजारवाद व आधुनिकता की दौड़ ने हालांकि अब माँ शब्द को भी किसी वस्तु का पर्याय बना दिया है। झूठी चमक-दमक में भूमि पुत्रों की माँ के प्रति भावनाएं क्षीण होती जा रही हैं। फिर भी माँ के मन में विश्वास है कि उसके बच्चे एक न एक दिन अपनी जमीन व अपनी माँ की महत्ता की रोशनी में उक्त चमक को भुला देंगे। क्योंकि उसके सपूतों ने सदा ही उसकी भावनाओं की लाज रखी है।

सोहन नागर
19/6, मनोरमागंज, इंदौर

भवरोग से मुक्ति का उपाय

आत्म निरीक्षण करना अर्थात प्राप्त विवेक के प्रकाश में अपने दोषों को देखना।

की हुई भूल को पुनः न दोहराने का व्रत लेकर सरल विश्वासपूर्वक भगवान से प्रार्थना करना।

विचार का प्रयोग अपने पर और विश्वास का दूसरों पर करना अर्थात न्याय अपने पर और प्रेम तथा क्षमा अन्य पर करना।

जितेन्द्रियता, सेवा, भगवतचिंतन और सत्य की खोज द्वारा अपना निर्माण

दूसरों के कर्त्तव्य को अपना, दूसरों की उदारता को अपना गुण और दूसरों की निर्बलता को अपना बल न मानना।

पारिवारिक तथा जातीय संबंध न होते हुए भी पारिवारिक भावना के अनुरूप ही पारस्परिक संबोधन तथा सद्भाव अर्थात कर्म की विभिन्नता होने पर भी स्नेह की एकता बनाये रखना।

निकटवर्ती जन-समाज की यथाशक्ति क्रियात्मक रूप से सेवा करना।

शारीरिक हित की दृष्टि की दृष्टि से आहार-विहार में संयम तथा दैनिक कार्यों में स्वावलंबन रखना।

शरीर श्रमी, मन संयमी, बुद्धि विवेकवर्ती, हृदय अनुरागी तथा अहं को अभिमान-शून्य करके अपने को सुंदर बनाना।

सिक्के से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से विवेक तथा विवेक से सत्य को अधिक महत्व देना।

व्यर्थ चिंतन के त्याग तथा वर्तमान के सदुपयोग द्वारा भविष्य को उज्ज्वल बनाना।

संकलन-डॉ. सूर्यकांत पौराणिक
भौंरासा (देवास)
फोन 07270- 273321

हिन्दी की छोटी बहन है गुजराती लिपि

गुजराती लिपि देवनागरी लिपि पद्धति पर आधारित है, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजनों के साथ कुल 52 अक्षर हैं। इस लिपि में अक्षरों की क्रम व्यवस्था भी बहुत वैज्ञानिक है। अक्षरों की वर्गीकरण भी स्वर-व्यंजन, कोमल-कठोर, अल्पप्राण-महाप्राण, अनुनासिक्य-अंतस्थ- ऊष्मा के रूप में हैं। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है। देवनागरी की ही इस लिपि में दुनिया की तमाम भाषाओं के शब्दों को उनके मूल उच्चारण के साथ अभिव्यक्त करने की क्षमता है। यह बाएं से दाएं लिखी जाती है। इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है। देवनागरी लिपि के मुकाबले खास फर्क सिर्फ इतना ही है कि जहां देवनागरी में प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है, जिसे शिरोरेखा भी कहते हैं, वहीं गुजराती में शिरोरेखा नहीं खिंची जाती । एक और अंतर आधी मात्रा का भी है। जहां में आधा अक्षर () लगाकर या आधा लिखकर (जैसे ध्, ख, च आदि) व्यक्त किया जाता है। वहीं गुजराती में आधे अक्षर के लिए कोई स्पष्ट निर्देश न होते हुए इन्हें साथ-साथ चस्पा कर दिया जाता है। परिणाम स्वरूप पक्का शब्ददेवनागरी में पक्का लिखा जाएगा, वहीं गुजराती लिपि में पकका लिखा जाएगा। अब यह संबंधित भाषा की जानकार की मेधा पर निर्भर है कि वह उस शब्द का अपने तई उचित अर्थ निकाले। आर्य भाषाई परिवार क ीसदस्य होने के नाते भले ही गुजराती लिपि की पद्धति देवनागरी व्यवस्था का अनुसरण करे, लेकिन अधिकांश अक्षरों की अपनी अलग पहचान है। सभी स्वरदेशनगरी से बिल्कुल अलग हैं, किंतु मात्राएँ देवनागरी की ही तरह लगाई जाती हैं। व्यंजनों में ण और द को छोड़कर सभी मूर्धन्य और दंत्य अक्षर (यथा - ट, ठ, ड, ढ, त, थ, ध, न, ब, र, ल, व, श, ष, स, ह) गुजराती लिपि के अक्षरों से मिलते हैं। इनके अलावा कण्ठ्य वर्ग के ग, घ, ङ और ओष्ठय वर्ग के प, ब, म अक्षर भी देवनागरी से मिलते हैं, शेष अक्षर न सिर्फ अलग है, बल्कि गुजराती लिपि के कुछ अक्षर देवनागरी लिपि के दूसरे अक्षरों का आभास देते हैं। मसलन गुजराती लिपि का द हिंदी के ह से, गुजराती का ख हिन्दी के ज से मिलती है और हिंदी भाषी गफलत में आकर दवाखाना को हवाजाना पढ़ लेते हैं। इसी प्रकार गुजराती लिपि के अंकों से भी कई बार संभ्रम पैदा हो जाता है। जिस प्रकार जल्दबाजी में अंग्रेजी में लिखा गया छह (6) हिन्दी के सात (7) का आभास देता है, उसी प्रकार गुजराती का छह हिन्दी के पांच का आभास करा देता है। बावजूद इसके अपने व्याकरण और क्रम के कारण यह देवनागरी परिवार की ही सदस्य है और मराठी की तरह इसे भी हिन्दी की बहन कहा जा सकता है। फर्क है, तो बस इतना कि देवनागरी लिपि होने के कारण मराठी, हिन्दी की जुड़वां बहन लगती है, वहीं लिपि में थोड़ा-सा विपथन होने के कारण गुजराती लिपि को हिन्दी की छोटी बहन कहा जा सकता है।

संकलनकर्ता - दुर्गाशंकर शर्मा

तू चांद सा चमके

डरती हूं कहीं तेरी बदनामी न हो
मिटा देना चाहती हूं इस देह को
डोली न सजा मेरी, अर्थी ही उठा देना
हम जा रहे हैं तुझसे दूर, चिता में आग लगा जाना
बहुत चाहा कि कांटे न बीछे तेरी राहों में
खुदा से बढ़कर पूजा तुझे, पर पत्थर के सनम निकले
हमें तो मौत ने बुला लिया, पर तुम खुशनसीब निकले
डूब गई नाव हमारी, इस संसार सागर में,
पार लगा देते हमें, तुमने कश्ती डाली ही नहीं
संसार प्रलय में डूब जाएगा, पर प्यार न मिट पाएगा
अर्ज है खुदा से तुझे, हमेशा रोशन करे
तेरा हर दर्द हम ले जाएंगे
और तू चांद बनकर चमकता रहे

सौ. चारुमित्रा नागर, इंदौर
मो. 9826176059
फोन. -731-2595261

सुख दिखता है-दुःख नहीं

दुःख से उबरने का एकमात्र उपाय

सर्वोपरि एवं सर्वश्रेष्ठ सर्वशक्तिमान गायत्री मंत्र

ॐ भूभुर्व स्वः तत्सवितुर्रेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात॥

शब्दार्थ - भू (प्राणों के आधार), भुवः (दुःखों को दूर करने वाला, स्वः (सुख स्वरूप, तत वह सवितुः सृष्टिकर्ता परमेश्वर का (वरेण्य) श्रेष्ठ (भर्गः) तेज देवस्य (देव का) धीमहिं धारण करते हैं। (धियोः) बुद्धियों की (योनः) हमारी , प्रचोदयात प्रेरित करता है।

भावार्थ - उस प्राण स्वरूप दुःख नाशक सुख स्वरूप श्रेष्ठ तेजस्वी, पाप नाशक देव स्वरूप, परमात्मा को हम अपनी अंतर आत्माओं में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

महाभारत में एक भावपूर्ण प्रसंग है, जिस समय भीष्म पितामह बाणों की शैया पर लेटे हुए थे। युधिष्ठिर ने उनसे प्रश्न किया- पितामह हम आपके पास बैठे हैं, आप ज्ञान की ऐसी बात बताइए कि हमें कुछ मिल सके। इस युग में तारने वाली कोई शक्ति है, जिसका जाप करने से इंसान का बुरा से बुरा वक्त टल जाए, क्योंकि सभी के जीवन में सम्पूर्णता नहीं होती। कुछ न कुछ कमी रहती है। बाहर देखने में सबको लगता है कि इस घर में बहुत समृद्धि है। बहुत सुख है, लेकिन अंदर झांककर देखा जाए तो एक ओर सुख है, वहीं दूसरी ओर दुःख की गहरी खाई है। यदि धन है तो सेहत नहीं, सेहत है तो धन नहीं, धन है तो बच्चे ठीक नहीं कोई न कोई समस्या बनी रहती है। ऐसी परिस्थिति में धर्मात्मा युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा कि ऐसा कोई मंत्र है, जिसे जपने से इंसान अपना कष्ट-क्लेश दूर कर सकें तब भीष्म पितामह ने कहा था कि यह गायत्री मंत्र ही है, जिसे मैं स्वयं जपता रहता हूं तू भी मंत्र का जाप करना। जिससे तेरा कल्याण हो सकेगा।

इसी मंत्र का चारों वेदों में गुणगान किया गया है।

स्तुते मै वरदा वेद माता।
प्रमोदयंता पावमानी द्विजानाम॥
आयुः प्राण प्रजां पशुं कीर्ति द्रविणं।
ब्रह्म वर्य सं मध्यं दत्वाव्रजत ब्रह्म लोकम् ॥

अथर्ववेद (9/61/111)

वेदों की माता गायत्री अपने उपासकों को दीर्घायु स्वास्थ्य, सन्तति यश, कीर्ति गौ आदि पशु धन और ब्रह्म तेज प्रदान करती है। तथा अंत में ब्रह्मलोक में पहुंचाती है।गायत्री मंत्र महामंत्र है। यह सभी सिद्धियों को देने वाला है। गायत्री ही परमतत्व है और गायत्री ही परम मति है। गायत्री को ब्रह्म का स्वरूप माना है। इस महामंत्र की उपासना करने वाले उपासक को शीघ्र ही फल की प्राप्ति हो जाती है।

यथा अग्नि देवानां ब्राह्मणों मनुष्यानाम् ।
वसंत ऋतु ऋतुये गायत्री चस्ति धनसाम।

हर व्यक्ति में अपनी एक आग होती है और उसका स्वयं का प्रभाव भी होता है। किंतु जीवन उसी तीली का सार्थक है, जो जलकर बुझने से पहले किसी दीप को प्रज्ज्वलित कर दे।

इंसान खुद प्रफुल्लित रहे और दूसरों के होठों पर भी मुस्कराहट व खुशी दे सके। संसार से विदा होने पर उसकी मीठी यादें लोगों को आनंदित करती रहें। अगर आप चाहते हैं, जिंदगी के साथ और जिंदगी के बाद भी लोग हमें याद करें तो गायत्री मंत्र के जाप को निष्ठा के साथ नियमित रूप से करें। जब साधक सम्पूर्ण प्रकार का मौन रखकर शांत होकर उस सत्ता से जुड़ता है तो वीणा के झंकार की तरह गुंजती हुई स्वर लहरियों के प्रति उसका एकाधिकार होता है। गायत्री का अर्थ गय +त्र गय का अर्थ है इंद्रियां व प्राणों का बल और त्र का अर्थ है रक्षा करने वाला। यदि प्राणों में बल है तो इंसान मृत्यु को अपने वश में कर लेता है, जैसे भीष्म पितामह बाणों की शैया पर छह मास लेटे रहे और मृत्यु को तब तक नहीं आने दिया जब तक उत्तरायण काल नहीं आया। सूर्य के उत्तरायण में आने पर आत्मा को अपने प्राण के बल पर ब्रह्मरन्ध्र से योगियों की तरह निकाल दिया। वेदों में गायत्री मंत्र का स्थान सर्वोपरि है। चारों वेदों में गायत्री जैसा कोई मंत्र नहीं है। गायत्री वेदमाता है। इसमें उपासकों के पाप का नाश करके सभी मनोकामनाओं को पूरा करने की अपरिमित शक्ति है। गायत्री मंत्र का जाप करने वाले को दैविक और भौतिक सम्पदा के साथ सात्विक गुण सहज ही प्राप्त हो जाते हैं।

डॉ. जयदेव त्रिवेदी, इंदौर
फोन 2400344, मो. 94245 89430

भोपाल के समस्त नागर परिवारों की निर्देशिका का इंतजार खत्म... देखें जुलाई २०१० अंक

विज्ञान के दोहे

मटर उगाकर खेत में, दिया नया विज्ञान।
अनुवांशिकी के पिता मेंडल हुए महान।।
दूर बैठकर आपस में, बातें करता कौन।
ग्राहम बैल का शुक्रिया, दे गए टेलीफोन।।
नीले लिहमस पत्र को, कर देता वह लाल।
कहते हैं हम अमल उसे, अंग न लेना डाल।।
चाहे घर रोशन करे, कि सुनो ग्रामोफोन।
एडीसन सा और भला, आविष्कारक कौन।
कौन किसका पुरखा है, इसका मिला प्रमाण।
डार्विन के कारण हुई, विकास की पहचान।।
किस जीव का किस जगह होता है स्थान।
ऐसा लिनियस ने दिया, वर्गीकरण विज्ञान।।
इस वसुधापर हर कहीं है ये विराजमान।
धन्य ल्युवेन हॉकजी दिया जीवाणी ज्ञान।।
पेड़ लगाये हम कई हैं, मेरा प्रस्ताव।
वरना हो जाए न कहीं, औषजन का अभाव।।
स्टार फिश व जेली फिश अथवा हो डॉल्फिन।
भिन्न-भिन्न सब जंतु हैं, इनमें एक ना मीन।।
जिसको चाहे भेज दो, अब तुम टेलीग्राफ।
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम।
नीला उसने कर दिया, लिहमस जो था लाल।
क्षार विलयन में देता हाइड्राक्सिल निकाल।।
एचसीएल के संग मिला, एचएनओ श्री जाये।
सबसे घातक अम्ल फिर अम्लराज बन जाये।
खूब बनाई तालिका, तत्वों की क्रमवार।
मेंडलीफ श्रीमान का हम पर यह उपकार।।
कहीं पड़े सूखा कहीं बेमौसम है बाढ़
मानव अब तो छोड़ दे कुदरत से खिलवाड़।।
कैसी तारा की बस्ती था उनका आलोक।
गैलीलियो दिखा गया, देखकर टेलिस्कोप
फिल्म देखने का जिसे, सचमुच में हो शौक।
एडीसन ने पेश किया, उसको बायोस्कोप।।
चाहे तुम चड्डी सियो, या सिलवाओ जिन्स।
थिमोनियर देकर गये, ऐसी स्युइंग मशीन।

मनोज नागर
130, गणेशपुरी खजराना, इंदौर
8120974815

मोटापा घटाने सहित अनेक रोगों को दूर करने का एक उपाय

चमत्कारिक चूर्ण

250 ग्राम मेथी
100 ग्राम अजवाईन
50 ग्राम काली जीरी

उपरोक्त तीनों चीजों को साफ करके हलका-हलका सेंकना (ज्यादा नहीं सेंकना) तीनों को अच्छी तरह मिक्स करके मिक्सर में पावडर बनाकर अच्छी पैक डिब्बा-शीशी या बरनी में भर लेवें।
रात्रि को सोते वक्त आधी चम्मच पावडर एक गिलास पुरा कुनकुना गरम पानी के साथ लेना है। लेने के बाद कुछ भी खाना-पीना नहीं है। यह चूर्ण सभी उम्र के व्यक्ति ले सकते हैं। चूर्ण रोज- रोज लेने से शरीर के कोने-कोने में जमा पड़ी गंदगी (कचरा) मल और पेशाब द्वारा बाहर निकल जावेगा। पूरा फायदा तो 80-90 दिन में महसूस करेंगे, जब फालतू चरबी गल जायेगी, नया शुद्ध खून संचार होगा। चमड़ी की झुर्रियां अपने आप दूर हो जायेंगी। शरीर तेजस्वी, स्फूर्तिला व सुंदर बन जायेगा।

फायदे

❒ गठिया जैसा जिद्दी रोग दूर हो जायेगा
❒ हड्डियां मजबूत होंगी
❒ कार्य करने की शक्ति-स्फूर्ति बढ़ेगी
❒ आंखों का तेज बढ़ेगा
❒ बालों का विकास होगा
❒ पुरानी कब्जीयत से हमेशा के लिए मुक्ति मिलेगी।
❒ शरीर में खून दौड़ने लगेगा
❒ कफ से मुक्ति
❒ हृदय की कार्य क्षमता बढ़ेगी।
❒ थकान नहीं रहेगी। घोड़े की तरह दौड़ते ही जायेंगे।
❒ स्मरण शक्ति बढ़ेगी।
❒ कान का बहरापन दूर होगा।
❒ स्त्री का शरीर शादी के बाद बेडोल की जगह सुंदर बनेगा।
❒ भूतकाल में जो भी ऐलोपैथी दवा और भविष्य में जो लेना पड़ सकती है वो ऐलोपैथी दवा की साईड इफेक्ट से मुक्त होंगे
❒ दांत मजबूत बनेगा, इनेमल जीवंत रहेगा।
❒ शरीर की सभी खून की नलिकाएं शुद्ध हो जायेंगी
❒ खून में सफाई व शुद्धता बढ़ेगी
❒ नपुसंकता दूर होगी, बच्चा होवेगा वह निरोगी व तेजस्वी जन्मेगा।
❒ मलेरिया, पीलिया, टाईफाइड, कालरा, विविध प्रकार के दर्द-रोग के सामने प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।
❒ कोई भी उम्र के व्यक्ति उपयोग कर सकते है। जवान बने रहेंगे, बुढ़ापा नहीं आयेगा। आयुष्य बढ़ेगा।
❒ स्त्रियों की शादी के बाद होने वाली तकलीफें दूर होंगी।
❒ शादी के पहले होने वाली तकलीफों से भी मुक्ति मिलेगी।
❒ शरीर में पानी, हवा, धूप, तापमान, द्वारा होने वाली रोगों से मुक्ति
❒ हार्ट अटैक से मुक्ति व कोलस्ट्राल घट जायेगा ।
❒ चमड़ी के रंग में निखार आयेगा, चमड़ी सूख जाना झुर्रियां पड़ना व चमड़ी के लोगों से दूर रहेंगे।

डायबिटीज काबू में रहेगी, डायबिटीज की जो भी दवा लेते हैं वह चालू रखना है। इस चूर्ण का असर दो माह लेने के बाद से दिखने लगेगा, जिंदगी निरोग, आनंददायक, चिंता रहित, स्फूर्तिदायक और आयुष्वर्धक बनेगी। जीवन जीने योग्य बनेगा।

संकलन-राजेन्द्र नागर,
सारंगपुर

भारतीय जीवन बीमा निगम
कार्यालयः सिविल लाईन्स, खण्डवा 450 001 (म.प्र.)
उज्जवल एवं सुरक्षित भविष्य हेतु
भारतीय जीवन बीमा की अभिनव योजनाओं की विश्वसनीय जानकारी हेतु
संजय पंडित (अध्यक्ष क्लब सदस्य) 34-बी, सांईनाथ कालोनी ए सेक्टर तिलक नगर के पास, इन्दौर फोन 0731-2904072, मो. 94248-32201
शशिकांत पंडित एवं श्रीमती कामिनी पंडित विगत 29 वर्षों से कार्यरत
मो. 94259-50023, 96694-00322 काल मुखी (खंडवा)
दिव्यकांत पंडित एवं श्रीमती अपर्णा पंडित आंचलिक प्रबन्धक क्लब सदस्य
नागदा जिला उज्जैन मो. 94259-86344, 9827275268

यूँ बदलता है नजरिया

अपने जीवनकाल में उम्र के विभिन्न पड़ावों पर प्रत्येक व्यक्ति का अपने पिता ओर देखने का नजरिया (!)

चार वर्ष की आयु में - मेरे पिता महान हैं।

छह वर्ष की आयु में - मेरे पिता सब कुछ जानते हैं।

दस वर्ष की आयु में - मेरे पिता बहुत अच्छे हैं, लेकिन गुस्सा बहुत जल्दी होते हैं।

तेरह वर्ष की आयु में- मेरे पिता बहुत अच्छे थे, जब मैं छोटा था।
(टीनएज का प्रारंभ)

चौदह वर्ष की आयु में- मेरे पिता बहुत तुनक मिजाज होते जा रहे हैं।

सोलह वर्ष की आयु में -पिताजी जमाने के साथ नहीं चल पाते हैं, बहुत पुराने ख्यालाती हैं।

अठारह वर्ष की आयु में- पिताजी तो लगभग सनकी हो चले हैं।

बीस वर्ष की आयु में - हे भगवान अब तो पिताजी को झेलना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। पता नहीं माँ उन्हें कैसे सहन कर पाती है।

पच्चीस वर्ष की आयु में- पिताजी तो मेरी हर बात का विरोध करते हैं।

तीस वर्ष की आयु में - मेरे बच्चे को समझाना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। जबकि मैं अपने पिताजी से बहुत डरता था, जब मैं छोटा था।

चालीस वर्ष की आयु में- मेरे पिताजी ने मुझे बहुत अनुशासन के साथ पाला। मुझे भी अपने बच्चे के साथ ऐसा ही करना चाहिए।

पैंतालीस वर्ष की आयु में- मैं आश्चर्यचकित हूं कि कैसे मेरे पिताजी ने हमें बड़ा किया होगा।

पचास वर्ष की आयु में- मेरे पिता ने हमें यहां तक पहुंचाने के लिए बहुत कष्ट उठाए, जबकि मैं अपनी इकलौती औलाद की देखभाल भी ठीक से नहीं कर पाता हूं।

पचपन वर्ष की आयु में- मेरे पिता बहुत दूरदर्शी थे और उन्होंने हमारे लिए कई योजनाएं बनाई थी। वे अपने आप में बेहद उच्चकोटी के इंसान थे, जबकि मेरा बेटा मुझे सनकी समझता है।

साठ वर्ष की आयु में- वाकई मेरे पिताजी महान थे।

अर्थात पिता महान हैं इस बात को पूरी तरह समझने में व्यक्ति को छप्पन वर्ष लग जाते हैं।

प्रोफेसर- ऋषिकुमार शर्मा
मातृछाया, खंडवा

आइने का रुख बदल...

आइने का रुख बदल, चल चश्मा उतार के
ज्यादा भी मत मचल, दिन आयेंगे बहार के
इन्सानियत कहां है, हैवानियत के दौर में
अब इंसान बनके चल, दिन आयेंगे बहार के
सोचा था राहें-मुहब्बत होंगी बहुत आसां
वक्त फिर पढ़ रहा गजल,
दिन आयेंगे बाहर के
आइने की तरह हो जाये, फिर से तेरा आईना
अब इस वक्त को बदल दिन आयेंगे बहार के
घर को लगी है आग,
घर के ही इन चरागों से
भारती कल होगा अपना कल, दिन आयेंगे...

सुभाष नागर 'भारती'

गांठ

गांठ मन में लग गयी अहम की
खुल सकती है यदि प्रेम के काटें
से निकाला जाये।
भर सकती है मन की दरार,
यदि सांत्वना के सुर मन से निकले
अहम को मन से निकाले और प्रेम सभी को बांटें।
मन से निकाले ईर्ष्या को, भावना में
बहे नहीं। तो खुल सकती है मन की गांठ,
भर सकती है मन की दरार
नही तो एक दिन, गांठ से फोड़ा बन जायेगा
नासूर भी बन सकता है
निदान करना होगा नासूर का
नहीं तो जीवन नरक बन जायेगा
स्वयं अपनी ही गलती का परिणाम
भोगना होगा इन चीड़ियों के बच्चों को
अहम को त्यागना होगा प्रेम का
बीज बोना होगा।।
अभी तो समय है-
पानी सिर से निकला नहीं है।
डूब जायेंगे हम और आप,सुनामी के बवंडर में
जब भूचाल आयेगा कच्छ भूज की तरह
गिर जायेगी अहम की बड़ी-बड़ी इमारतें
और खंडहर में बदल जायेंगी
फिर गांठ खुल जायेगी अपने आप
और मन की दरार भी भर जायेगी
क्या बचेगा जब सब नष्ट हो जायेगा
दो आंसू बहाने के अलावा
तब मन बहुत पछतायेगा।
सोच लो अभी पानी सिर से निकला नहीं है।
गांठ मन में जो लगी है अहम की
खुल सकती है अभी भी समय बाकी है...
अलगाववाद से पीड़ित एक महिला ने अपनी मन की व्यथा कुछ उपरोक्त प्रकार व्यक्त की है।

रमेशचंद्र नागर
विज्ञान नगर, कोटा

श्री वल्लभजी नागर के सद्जीवन का प्रमाण

रिश्तेदारों तथा परिजनों की उपस्थिति में महाप्रयाण

उज्जैन। राज्य प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं सेवानिवृत्त उपसचिव म.प्र. शासन श्री रामवल्लभ नागर का 22 अप्रैल 2010 को उज्जैन में हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। उन्हें अपनी सास श्रीमती रुक्मणिबाई मेहता के द्वादश कर्म के दौरान हरसिद्धि पाल स्थित नागर धर्मशाला में अचानक दिल का दौरा पड़ने पर परिवार के लोगों ने उन्हें तुरंत संजीवनी हॉस्पिटल में भर्ती कराया, जहां आईसीयू में इलाज के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली। उसी दिन सायं राजस्व कालोनी स्थित निवास से निकली अंतिम यात्रा में उज्जैन, इंदौर, शाजापुर, रतलाम, बेरछा, भोपाल आदि स्थानों से आए निकट संबंधियों के अलावा बड़ी संख्या में गणमान्य लोग और समाजजन सम्मिलित हुए। चक्रतीर्थ पर हुई शोकसभा में नागर ब्राह्मण समाज उज्जैन के अध्यक्ष योगेन्द्र त्रिवेदी, हाटकेश्वर धर्मशाला के डॉ. रामरतन शर्मा, डॉ. विजयशंकर त्रिवेदी (पूव7 कुलपति विक्रम वि.वि.), नागर समाज इंदौर के अध्यक्ष प्रवीण त्रिवेदी, बेरछा नागर समाज के डॉ. मनोहरलाल शर्मा आदि ने अपनी श्रद्धांजलि में स्व. रामवल्लभजी नागर को एक कुशल प्रशासक, सहज एवं सरल व्यक्तित्व के धनी तथा बेहद मिलनसार एवं मददगार इन्सान निरूपित किया। श्रीनगर शिव उपासक एवं भगवान महाकालेश्वर के अनन्य भक्त थे।

श्री राम वल्लभजी नागर का जन्म शाजापुर के प्रतिष्ठित नागर परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री नारायणजी नागर ग्वालियर स्टेट में अम्बाह से शिक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। परिवार में रघु के नाम से पुकारे जाने वाले रामवल्लभजी सभी भाई-बहनों में सबसे छोटे होने के कारण सबके लाड़ले थे। उनके बड़े भाई राधावल्लभजी नागर और श्री वल्लभजी नागर ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई। जबकि कृष्णवल्लभजी नागर (से.नि. उपसंचालक पंचायत एवं समाजसेवा) ने अपनी हंसमुख एवं मिलसारिता के गुणों से तथा श्री ओमवल्लभजी नागर (सेवानिवृत्त आईएएस) ने अपनी कुशल प्रशासनिक क्षमताओं से परिवार की कीर्ति बढ़ाई। सबसे छोटे भाई के रूप में श्री रामवल्लभजी नागर ने राजस्व विभाग में नायब तहसीलदार के रूप में कैरियर की शुरुआत अशोक नगर से की थी। उन्होंने उज्जैन के

जन्म 31 मार्च 1931
अवसान 22 अप्रैल 2010

माधव कॉलेज तथा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बीए, एमए और एलएलबी किया था। बड़नगर, बदनावर, मनासा, मंदसौर और उज्जैन में वे तहसीलदार रहे। धार, सरदारपुर, बड़नगर, तराना में एसडीएम रहने के बाद 1979 में उनकी पदस्थापना भोपाल वल्लभभवन सचिवालय में अवर सचिव के पद पर हुई। वे पर्यटन विभाग में उपसंचालक तथा म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम के महाप्रबंधक भी रहे। 1991 में वे उपसचिव ऊर्जा विभाग के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के उपरांत उज्जैन में बसने के बाद भी सक्रिय रहे। 1992 में सिंहस्थ के दौरान पुराने अनुभवों का लाभ लेने के उद्देश्य से शासन ने विशेष कर्त्तव्यस्थ अधिकारी नियुक्त किया। बाद में वे उज्जैन संभाग की संभागीय सतर्कता समिति के सदस्य भी रहे। 1971 की राष्ट्रीय जनगणना में सराहनीय योगदान के लिए उन्हें राष्ट्रपति की ओर से कांस्य पद से सम्मानित किया गया था।

श्री रामवल्लभजी नागर उज्जैन के जाने-माने आयुर्वेद चिकित्सक वैद्य पं. वासुदेवजी शास्त्री (झोंकरवाले) के दामाद थे। उनकी पत्नी श्रीमती मधु नागर मृदुल स्वभाव की सुसंस्कारित धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं।

श्री रामवल्लभजी नागर के परिवार में चार पुत्र और एक पुत्री हैं। सबसे बड़े पुत्र विनोद नागर भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी हैं तथा वर्तमान में दूरदर्शन केंद्र भोपाल में उपनिदेशक (समाचार) के रूप में कार्यरत हैं। दूसरे पुत्र प्रमोद नागर गृह (पुलिस) विभाग में वरिष्ठ फारेंसिक विशेषज्ञ हैं। तीसरे पुत्र मनोज नागर (इंदौर में नर्मदा परियोजना के तृतीय चरण में सहा. परियोजना प्रबंधक हैं, जबकि सबसे छोटे पुत्र आमोद नागर (बंटी) तिकोना डिजिटल नेटवर्क में सर्किल हेड हैं।

श्री रामवल्लभजी नागर ने जीवन पर्यंत जिस सदाचार, ईमानदारी और नैतिक मूल्यों पर आधारित गुणों को अपनाया यह उसका प्रतिसाद था कि जीवन के अंतिम समय में महाप्रयाण के समय उनके सभी पुत्र-पुत्री एवं परिजन उज्जैन में घर पर उपस्थित थे। एक दिन पूर्व ही उन्होंने रामघाट पर अपनी सासुजी के ग्यारहवें में सभी नागरजनों, परिजनों और स्नेहियों से प्रत्यक्ष मिलने का सुयोग पाया था, जो अधिकांश के लिए आखिरी मुलाकात साबित हुई। पोते-पोतियों/नाती-नातिन के साथ भरा-पूरा सार्थक यशस्वी जीवन जीने वाले स्व. रामवल्लभजी नागर को जय हाटकेशवाणी परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

तृतीय पुण्य स्मरण

स्मृतियां कभी ओझल नहीं होती अन्तरमन के चक्षु पटल पर चित्रित होती रहती हैं

22 जून 2010

स्व.श्री सूर्यप्रकाश नागर

प्रोफेसर होलकर कालेज

आज पुण्यतिथि पर श्रद्धावत, दिल के साथ आंखें भर आई, स्मरण करते शांति के प्रति पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धापूर्ण नमन।

श्रीमती जया नागर व अपूर्व नागर
(54 प्रकाश नगर, इंदौर)
पी.आर. जोशी एवं परिवार 528, उषा नगर एक्सटेंशन, इंदौर

बहुआयामी रंगकर्मी कुमुद नागर

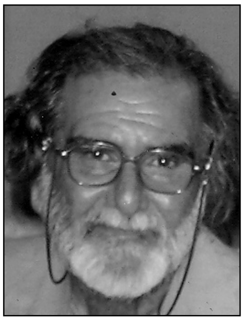

शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य की घरानेदारी की परम्परा तो सामान्यतः चलती ही है। उत्तरप्रदेश में संगीतएवं नृत्य के अनेक घराने विकसित हुए किंतु साहित्य, दृश्यकला तथा प्रदर्शनकारी कला की-त्रिवेणी को समर्पित घराने कदाचित विरले ही होंगे। ऐसे ही बहुआयामी एवं कला समर्पित विरल परिवारों में से प्रदेश का नागर परिवार भी है। अमृतलाल नागर, रतनलाल नागर तथा मदनलाल नागर बंधुओं की त्रयी ने क्रमशः साहित्य, छायांकन तथा चित्रकला के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। इसी परिवार के उज्जवल नक्षत्र थे पंडित अमृतलाल नागर के ज्येष्ठ पुत्र कुमुद नागर।

कुमुद नागर बहुआयामी कलाधर्मी । उन्होंने अपने पिता और चाचाओं की विधाओं को तो आत्मसात किया है, खेल-खेल में उन्होंने कला और अनेक विधाओं यथा संगीत, मूर्तिकला, कास्ट्यूम, डिजाइनिंग, अभिनय, रूपसज्जा आदि में भी निपुणता प्राप्त की। उनकी बहुआयामी कला-प्रतिभा का समुच्चय उनके नाट्यधर्म में परिलक्षित होता है। कुमुदजी को नाट्य के सभी माध्यम की केवल समझ ही नहीं, वरन उनमें उनकी गहरी पैठ भी थी। विगत प्रायः चार दशकों तक वे नाट्यकला के क्षेत्र में अपना स्थान अक्षुण बनाए रहे। रेडियो, टेलीविजन तथा रंगमंच तीनों ही क्षेत्रों में उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से सतत प्रयोग करके इन माध्यमों की नाट्य प्रस्तुतियों को नया मुहावरा प्रदान किया।

नाट्य कला के संस्कार यूं तो इस परिवार के रक्त में अनुवांशिक ही रहे हैं। लखनऊ में 1908-09 में स्थापित हिन्दू यूनियन क्लब में नाट्य कला के बीज का वपन करने वाले हिन्दी रंगमंच उन्नायक, कवि सेनानी पं. माधव शुक्ल से कुमुदजी के पितामह राजाराम नागरजी ने अभिनय कला के मंत्र सीखकर 1913 से 1922 तक नगर के श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में अपनी पहचान बनाई। कुमुदजी के उपन्यासकार पिता अमृतलाल नागर ने फिल्म जगत, रेडियो तथा रंगमंच के लिए भी अपनेलेखन से प्रतिष्ठा प्राप्त की तथा रेडियो एवं रंगमंच के कुशल निर्देशक के रूप में अपनी पहचान बनाई। स्वयं उन्हीं के शब्दों में- मेरा रंगमंचीय जीवन सन् 1953 में 18 वर्ष की आयु में अपने पिता श्री अमृतलाल नागर द्वारा निर्देशित नाटक गोदान के मंचन के समय नेपथ्य सहायक के रूप में आरंभ हुआ। आकाशवाणी जीवन की शुरुआत स्क्रिप्टराइटर के रूप में सन् 1958 में हुई, जहां सन् 60 में सुनामधन्य रेडियो प्रोड्यूसर श्री एस.एस.एस. ठाकुर के सम्पर्क में आया। उन्होंने नाटकों में मेरी रुचि देखकर मुझे नाटक विभाग से संबद्ध करा लिया। सन् 1965 में सहायक प्रोड्यूसर नाटक और 1971 में प्रोड्यूसर नाटक हुआ। 17 वर्ष तक आकाशवाणी की सेवा करने के उपरांत सन् 1975 में मैं दूरदर्शन लखनऊ में प्रोड्यूसर के ही पद पर आ गया। 1990 में सहायक केंद्र निदेशक हुआ और 1993 में 35 वर्ष का सेवाकाल पूरा कर सेवानिवृत्त हुआ।

कुमुद नागर ने अपने जीवन के लगभग 55 वर्ष नाट्यकला की सेवा में मनोयोग से समर्पित किए। आकाशवाणी के सेवाकाल में उन्होंने लगभग आठ सौ छोटे-बड़े नाटक अपने निर्देशन में प्रस्तुत किए। जिनमें से एक दर्जन से अधिक प्रस्तुतियां नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम के लिए थीं।

1975 में लखनऊ दूरदर्शन केंद्र की स्थापना के समय से ही कुमुद नागर ड्रामा प्रोड्यूसर के रूप में संबद्ध हुए और उन्होंने लगभग 175 नाटक प्रस्तुत किए।

रेडियो और दूरदर्शन के अलावा वे रंगमंच के क्षेत्र में कुमुद नागर 1953 से नेपथ्य रंगकर्मी, अभिनेता और निर्देशक के रूप में सक्रिय रहे। कुमुदजी एवं उनके अनुज सुख्यात रंगसमीक्षक संस्कृतिकर्मी व रंगतिहास के अध्येता डॉ. शरद नागर के साथ मिलकर लखनऊ में नाट्य संस्था नक्षत्र अंतरराष्ट्रीय की स्थापना की। चित्रकला, फोटोग्राफी एवं साहित्य के क्षेत्र में कुमुद नागर का योगदान उल्लेखनीय है। रेडियो के लिए उन्होंने लगभग 100 से अधिक नाटक एवं झलकियां लिखीं। उनकी पकड़ हास्य प्रधान नाटकों पर तो थी ही, किंतु उन्होंने अनेक मर्मस्पर्शी गंभीर रेडियो नाटक भी लिखे। हास्य प्रधान नाटकों में अलादीन-चिरादीन एंड कंपनी, हैप्पी बर्थडे, अर्के गुलगुल, सबेरे-सबेरे उल्लेखनीय हैं। गंभीर नाटकों में शून्य का आकार, महाशून्य और धूमकेतू, सुनहरी मछलियों का देश, कलाभ्रंश, प्रतिशोध आदि चर्चित हुए। दूरदर्शन के लिए भी अनेक नाट्य लेख लिखे। कविताएं और बच्चों के लिए कहानी और उपन्यास उनकी रचनाएं प्रायः सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं। प्रकाशित किशोरोपयोगी साहित्य में उल्लेखनीय है सूरज और अंधा देश, सिन्दबाद की आठवीं यात्रा, शीशे का आदमी। अपने टेलीविजन के दीर्घकालीन अनुभवों एवं दूरदर्शन की सेवा में निवृत्त होने के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय में मीडिया राइटिंग की कक्षाओं के अध्यापन के अनुभवों के आधार पर टेलीविजन लेखन, सिद्धांत और प्रयोग लिखी तथा अपने निजी संस्मरणों का संग्रह वटवृक्ष की छाया में रचना की। ये दोनों पुस्तकें प्रकाशित होकर चर्चित हुईं।उनका काफी साहित्य अब तक अप्रकाशित रहा। 7 जून 1935 लखनऊ में जन्मे इस प्रतिभा सम्पन्न समर्पित नाट्यकर्मी एवं बहुआयामी कलाधर्मी विलक्षण कलाकार का असामयिक निधन 17 फरवरी 2007 को हो गया।

प्रस्तुति- विभाग नागर
द्वारा डॉ. शरद नागर
अमृत प्रतिभा, 5/530, विकास नगर, लखनऊ फोन- 05222769424

श्रीमती शांतादेवी कुंज बिहारी नागर का निधन

नीमच। श्रीमती शांतादेवी नागर पति स्व. कुंजबिहारी नागर का दिनांक 4 मई को नीमच में देहावसान 86 वर्ष की आयु में हो गया है। आप स्व. डॉ. विजयकुमार नागर की माताजी थीं और अपने पौत्र विवेक नागर जो नीमच के विधि महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं, के पास रह रही थीं और पिछले कुछ समय से अवस्वस्थ थीं।

जशोदाबेन मंडलोई का निधन

खंडवा। श्री शिवकुमार मंडलोई की माताजी एवं श्री अरविंद व्यास की मौसीजी श्रीमती जशोदाबेन मंडलोई का स्वर्गवास दिनांक 30 अप्रैल को हो गया, जिनका अंतिम संस्कार ओंकारेश्वर तीर्थ में किया गया।

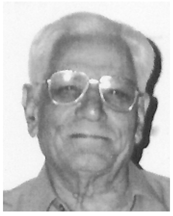

शब्दांजलि

परम स्नेही-परम पूज्य पिताजी श्री भगवतीलालजी रावल
जन्मतिथि 18 जून 1916
पुण्यतिथि 9 दिसम्बर 2007

बेडमिंटन के रहे खिलाड़ी, टेनिस में भी बाजी मारी
हम बच्चों को खेल-खेल में, खेलों में है रुचि जगाई
आउटडोर हो चाहे इनडोर, प्रोत्साहन में न कमी बताई
पहुंचे ऊंचाई पर जब हम, शाबासी की माला पहनाई।

बहुमुखी प्रतिभाएं विकसित हों,
अनुचित आचरण न हो पाए
संस्कार, शिष्टता पनप सकें, कितना मन में क्या दे पाएं।
आफिस से आए थके हुए या टूर से थककर चूर हुए
भाषण लिखवाने में तत्पर, अवसर न कभी जाने देते।

सपने देखे तुमने ओ पिता!
प्रियदर्शिनी बन के जग में चमकूं
सूरज न सही दीपक बनकर कुछ करूं, बनूं, सोचूं, समझूं
मैंने भी किया न निराश कभी,
कोशिश में सदा लगी ही रही
विधि के हाथों में भी जाकर,
खुश-खुश होकर जीती ही रही।

कितनी मेहनत और लगन से तुमने,
कृष्ण की तरह कार्य किया
फल मिलता है कितना कैसे? इसका न कभी विचार किया
आदर्श हो तुम हम सबके लिए,
सम्माननीय हो तुम हम सबके लिए
प्रियवर हो तुम हम सबके लिए,
प्रेरक हो तुम हम सबके लिए।

हम पंछी हैं तुम तुरुवर थे, हम धारा हैं तुम उद्गम थे
आशा करते थे, जीवन में तुम शतकवीर कहलाओगे
पर शेष रहे थे केवल नौ रन।
और ईश ने तुमको लपक लिया।
अब ये बच्ची, रानी बेटी, बचपन की यादों में खोई
माता-पिता के लाड़-प्यार को कभी भूल न पाएगी।
अब भी शाबासी की चाहत मन में हिलोर सी लेती है
पर सीख आपकी, बिना आपके जीवन जीना सीख लिया।

अगर जन्म हो दोबारा तो माता-पिता तुम ही होना
और तुमको मिले शांति-सुख,
सब कुछ जो न मिला इस जीवन में
दादी-नानी बन चुकी बेटियों की बस यही तमन्ना है।

उर्मिला मेहता
बी 21/17, महानंदा नगर, उज्जैन (म.प्र.)
मो. 9300115560, 0734-2526201

स्व. राधा मौसी के जीवन के बिम्ब-प्रतिबिम्ब

भूमिका- बिम्ब प्रतिबिम्ब की गूढ़-गहन अनुभूति विचार शृंखलानुसार लोढ़ी, काशी वंशपुर (बांसवाड़ा) नगरवासी स्व. मौसी के जीवन को धन्य सार्थक मानते हैं, क्योंकि ऐसी विभूति को मानवावतार रूप में प्राप्त किया, जिन्होंने यथा नाम तथा गुण सदगुण की पुष्टि की है। ऐसी गुणवती नारी मिलना दुर्लभ है। विशेषतः नागर समाज पूर्णतः कृतकृत्य हुआ है। नागर शब्द संकीर्णता से परे होकर औदर्य की सन्निकटता उपलब्ध किये हुए है। तत्वरूपेण नागर शब्दार्थ को इस प्रकार अभिव्यक्त कर रहा हूं- यस्मिन गरलम् नास्ति, सः नागर' अर्थात जिसमें विष (अवगुण) नहीं है, वही नागर कहा जाता है। यह नागर शब्द वसुधैव कुटुम्बकम को इंगित करता है। इसी को आंग्लभाषा में कहते हैं- द वर्ल्ड इस माय फैमिली।

बिम्ब-प्रतिबिम्ब- राधा मौसी ने गंभीर गहन सूत्र को आधारशीला समझ-मानकर जीवन निकेतन को रमणीयाकर्षक रूप प्रदान करने में सार्थक्य साफल्य प्राप्त की है।

राधा शब्द में दो वर्ण हैं (1) रा (2) धा। रा का आशय है स्नेह, स्नेह प्रेमानुराग। धा का अर्थ है धारण करना या रखना। मौसीजी ने अपने नामार्थ को गले का हार किंवा चोली दामन का साथ जीवन पर्यंत बना रखा था। राधा शब्द में लाक्षणिकता-प्रतीकात्मकता है। चिंतन-मनन-गुणन करके मैंने यह प्रतीक लक्षण मौसी में देखा। इससे मौसीजी का मनोभाव हिमवत श्वेत-धवल, उज्ज्वल रहा है। अर्थात किंचित मात्र भी उनमें दुर्गुणावलोकन कोई भी नहीं कर सका। जो कोई भी उनसे मिलने जाता वह गूंगे का गुड़ बनकर रह जाता।

न्यूनाल्प पदावलि में मैं मौसीजी के स्वामी प्राणनाथ पतिदव की हल्की झलकी प्रस्तुत करना चाहता हूं, जिनका नाम श्री हेमशंकर नागर था। मैं मौसाजी के नाम को दो शब्दों में विभाजित करता हूं (1) हेम (2) शंकर हेम का अर्थ है स्वर्ण। शंकर का अभिप्राय है -शमम् करोतियः सः शंकरः जो इंद्रियों को अपने वश में कर ले या अवगुणों को घुटने टिकवा दे- वही शंकर की संज्ञा प्राप्त करता है। मौसाजी सदगुण पथानुगामी बनना शिरोधार्य किया, जिसके फलस्वरूप स्वर्ण की भी महत्ता हस्तगत की थी। मौसीजी को इस दाम्पत्य सूत्रबद्ध होने मणिकांचन योग (सुहाना अवसर) प्राप्त हुआ है। धर्म-कर्म की सुदृढ़ता का विम्ब स्तुत्य-श्लाध्य है।

मौसी ने गुलाब पुष्प तोड़ने के पहले उसके (पुष्प के) समीपस्थ कंटक-चुभन को सहर्ष स्वीकार किया। वस्तुतः उनका जीवन कांटों का जीवन रहा। स्वयं कंटक पथ पर ही चलते रहे, परंतु शरणगतातिथि को अपने कांटों की अनुभूति नहीं होने दी। लगभग 80-85 वर्ष पहले बांसवाड़ा हाईस्कूल परीक्षा केंद्र नहीं था। इसलिए दसवीं की परीक्षा हेतु उदयपुर जाना पड़ता था। मौसी का निकेतन एक प्रकार से छात्रावास बना हुआ था। जहां खान-पानादि की व्यवस्था स्वयं मौसीजी ने बना रखी थी। यही उनका शरणागत वात्सल्य भाव प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुति- जयसुख राय झा
(भानजा)
निवासी बांसवाड़ा

पुण्य स्मरण

एक और यशोदा

आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व, रक्षाबंधन के दूसरे दिन की रात एक बच्चे का जन्म हुआ, कमजोर माँ का कमजोर बच्चा। जब वो बच्चा 5-6 माह था, तभी उसकी माँ को ऐसा रोग हुआ जिसका संक्रमण बच्चे को लग सकता था इसलिए बच्चे को माँ से दूर रखना आवश्यक था, ऐसे में बच्चे की मासी सामने आई और बच्चे की जिम्मेदारी ली। माँ से दूर होने में बच्चे व माँ दोनो को तकलीफ हुई मगर कुछ दिनों में बच्चा मासी को पहचानने लगा। मासी को अपनी बिमार बहन की देखभाल भी करनी थी, इसलिए वो बच्चे को लेकर उसके मामा-मामी के यहाँ गई और कुछ दिन रहकर उसे छोड़कर आ गई। बच्चा नये माहौल में अपने आप को ढाल नही पा रहा था, पहले माँ को छोड़ा फिर मासी को, वो बहुत चिड़चिड़ा और कमजोर हो गया और अपना आक्रोश सबको काट कर दिखाने लगा। उसे कुछ भी हजम नही हो रहा था तब उसके लिए एक गाय पाली गई, अपनी मामी के प्यार दुलार भरी देखभाल से बच्चा धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा और उन्हें ही अपनी माँ समझने लगा।

जब उस बच्चे ने बोलना सीखा तो अपनी मामी को मम्मी कहने लगा और मामा को मामा सा., मगर उसे लगता सब बच्चे तो अपने पिता को पापा, दादा या बाऊ जी अदि सम्बोधनों से पुकारते है, मैं अपने पिता को मामा सा. क्यों कहता हूँ।

बीमार पड़ने पर उस बच्चे की मामी ने कई-कई राते जागकर काटते हुए उसकी देखभाल की। आठ माह के बच्चे को सम्भालना कितना मुश्किल काम है मगर मामी ने उसे इतने प्यार से पाला कि बच्चे को कभी महसूस ही नही हुवा कि वो उसकी माँ नही है।

बच्चे ने स्कूल जाना शुरू किया, उसको खाने में बहुत नखरें थे। मामी रोज उसकी पसंद का खाना बनाकर लंच-बॉक्स में देती। मामी का इकलौता बेटा बाहर पढता था। वो जब भी छुट्टीयों में आता, उस बच्चे को लगता मेरे घर में ये दूसरा कौन आ गया और उस बच्चे को उनका आना अच्छा नही लगता। आप समझ सकते है उस बच्चे को कितना प्यार मिला होगा कि उसे वो घर केवल अपना ही लगता था। बच्चे का मुंडन संस्कार उसके पितृ गृह में किया गया, वहाँ सैंव बनाते वक्त मामी का हाथ कढाई में चला गया, बच्चे के मुंडन की खुशी में कोई विध्न न पड़े इसलिए मामी अपना हाथ साड़ी में छुपाकर सब काम करती रही और जलने की पीड़ा को चुपचाप पी गई।

बच्चा जब 7-8 साल का था तब उसका पैर सायकिल में आ गया और काफी चोट आई, मामी बच्चे को गोद में उठा-उठा कर बाथ-रूम ले जाती, नहलाती और रोज चोट की मरहम पट्टी करती।

बच्चा अपने मामा मामी की छत्रछाया में पलने लगा, जब नवी कक्षा में आया तब जहाँ उसके मामा रहते थे, वहाँ विज्ञान विषय नही था। इसलिए उसे अपनी जन्मदात्री के पास वापस जाना पड़ा। मामी उस वक्त वहाँ नही थी वरना वो शायद बच्चे को अपने से दूर जाने ही नही देती। मामी बहुत रोई बहुत तड़पी मगर बच्चे के भविष्य का सवाल था।

बच्चे को फिर जमीन से उखाड़ कर नई जगह रोपा गया वो समय उस बच्चे के लिए बहुत कठीन था। अपनी माँ व भाई-बहनों के प्यार के बावजूद वो घर उसे बहुत पराया सा लगता उसे बार-बार अपनी मामी और उस घर की बहुत याद आती जिसे वो बचपन से अपना समझता आ रहा था।

ये कोई कहानी नही, सत्य घटना है इसमें जो बच्चा है, वो मेरे पति (अनिल) है, मासी (स्व. पुष्पा नागर) और मामी (स्व. शांता नागर) है। मैं इन सब घटनाओं की प्रत्यक्षदर्शी नही हूँ मगर मैंने अपने पति, अपनी सास व मामी सास से जो सुना समझा है उन्ही भावनाओं को शब्द दे दिये है। मामी में और भी कई गुण थे वो बहुत सेवा भावी थी उनकी सास 10 साल तक बिस्तर पर रही और उन्होने उनकी सेवा में कोई कमी नही रखी। उनकी पाँच ननदें थी सभी के एक एक बच्चे का जन्म उन्ही के यहाँ हुआ, उन्होने उन सबकी भी बहुत सेवा की।

वो मिठाईयाँ भी बहुत अच्छी बनाती थी। ये गुण उन्हे विरासत में अपने पिता (बसंती लाल जी मेहता) से मिला था, जिनकी एक समय में शाजापुर में बहुत प्रसिद्ध मिठाई की दुकान थी।

छुट्टीयों में उनकी ननदे अपने बच्चों के साथ व भतीजे व भतीजियाँ उनके घर आते तब मामी सबका स्वागत इतने प्यार व आदर से करती कि बच्चों को अपने घर जाने का मन ही नही करता। सब बच्चे जो भी झुठा छोड़ते, मामी सब इकट्ठा करके अपनी थाली में रख लेती। आज हम अपने बच्चे का झुठा खाने में भी परहेज करते है मगर उन्होनें कभी अपने पराये का भेद नही किया, सब बच्चों को अपना माना। कितेन विशाल हृदय होगा उनका। सब कहते है अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है, उस मामी ने तो सब के लिए बहुत किया सब बच्चों को अपना माना फिर ईश्वर ने उनसे उनका इकलौता बेटा क्यों छीन लिया? मामी ने उस बच्चे की देखभाल माँ से बढ़कर की मगर कभी इस बात का एहसान नहीं दिखाया, न कभी उस बच्चे से कोई अपेक्षा की ना कोई अधिकार जताया।

सैकड़ो मीलों की दूरियाँ, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा नौकरी की जद्दोजहद के कारण वो बच्चा जल्दी जल्दी उनसे मिल नही पाता था मगर वो बच्चा आज भी अपनी यशोदा माँ को बहुत याद करता है आज भी उसके मुँह में उनके बनाये व्यंजनो का स्वाद है। आज वो मामी इस दुनिया में नही है मगर आज भी माँ का स्मरण करने पर उस बच्चे की आँखो मे देवकी माँ से पहले अपनी यशोदा माँ की छवि आती है।

आशा नागर (मंडला)

दीया जलता हो...

पता नहीं अब तेरे दीदार का,
दिल पत्थर है अब मेरे यार का,
रंगों-खुशबू बदलो, फिजाओं की
गुलची क्यों सोया है, गुलजार का
कल तक जो कश्ती के पतवार थे,
अब पता नहीं, उनके एतबार का,
गर्दिशों के दौर का डूबता सूरज,
काय है सुबह के इंतजार का,
भारती चल कहीं इस वीराने से,
दीया जलता है जहां प्यार का

सुभाष नागर 'भारती'

प्रख्यात पत्रकार स्व.श्री सदाशिव नागर की ३४वीं पुण्यतिथि १ जून पर विशेष

सेवा के संकल्प को सर्वोपरि रखकर कार्य करने वाले महान व्यक्तित्व थे स्व.श्री नागर

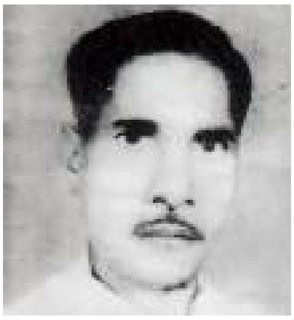

प्रमुख रूप से पत्रकारिता के माध्यम से जनसेवा के संकल्प को सर्वोपरि रखकर प्राथमिक रूप से कार्य को बखूबी अंजाम देने वाले महान व्यक्तित्व थे स्व.श्री सदाशिव जी नागर, जिन्हें सभी स्नेह व आदर के साथ नाना भी कहा करते थे। 1 जून 1976 को दैहिक रूप से हमारे मध्य से जा चुके स्व. श्री नागर की 34वीं पुण्यतिथि पर सहसा ही उनकी चिर स्मरणीय यादें हमारे मध्य प्रत्यक्ष हो जाती है। आज स्व.श्री नागर को हमारे मध्य से गुजरे 34 वर्ष हो चुके है किंतु प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से उनकी उपस्थिति हमें अनुभव प्रतीत होती है। उनके दैनिक जीवन के क्रियाकलाप ऐसे हुआ करते थे जो सिर्फ जनसेवा से ओतप्रोत होकर समर्पित भाव को दर्शाते थे। सिद्धांतों के विपरित किसी भी परिस्थिति से समझौता न करना स्व.श्री नागर की कार्यशैली में रहा है। वे भले ही कई बार परेशान रहते थे किंतु सच्चाई के साथ उनका संघर्ष सतत जारी रहता था। स्व.श्री सदाशिव नागर 'नाना' ने अपने जीवन में अपने नाम के अनुरूप सदा सेवा व समर्पण भाव को आत्मसात कर इस दिशा में संकल्पित रहे। स्व.श्री नागर ने अपने जीवनकाल 55 वर्ष में बाल्यावस्था के पश्चात अपनी जिम्मेदारियों को जिस बखूबी के साथ निभाया है अत्यंत ही सराहनीय कहा जाता है। उस दौर के इनके साथीगण इनकी प्रशंसा करते थकते नही है। प्रमुख रूप से पत्रकारिता के माध्यम से जनसेवा का विशेष जज्बा था स्व.श्री नागर में। नईसड़क स्थित अपनी छोटी क्षेत्रफल वाली साधारण सी प्रेस पर पत्रकारिता के माध्यम से सेवाएं देते रहने वाले स्व.श्री नागर यहाँ कम्पोजिंग से लेकर मशीन चलाने तक का कार्य करते थे। आपकी साधारण सी प्रेस पर जहाँ कुछेक टेबल-कुर्सी लगी थी शहर के प्रबुद्ध पत्रकारजन व संभ्रांत परिवार के लोगों का आना-जाना लगा रहता था। कारण साफ था कि आप सहज, सरल, मृदुभाषी व मिलनसार होने के साथ ही सभी के अच्छे-बुरे में प्रमुख रूप से सभी के साथ रहते थे। साथ ही यहाँ पर समस्या व अभावग्रस्त लोगों की आवाजाही भी लगी रहती थी क्योंकि स्व.श्री नागर जिन्होंने जीवनकाल में सतत संघर्ष किया वे अभाव व परेशानियों को नजदीक से जानते थे। स्वयं परेशान रहकर भी उन्होंने ऐसे लोगों की अपने स्तर पर हरसंभव मदद की, किसानों के हितैषी के रूप में भी स्व.श्री नागर को प्रमुख रूप से याद किया जाता है। छोटे-छोटे व मजबूर परेशान किसानों के हितार्थ आपने काफी संघर्ष किया है। कभी कलम के माध्यम से तो कभी प्रत्यक्ष रूप से उनकी समस्याओं के समाधान हेतु अग्रणी रहे है। आपने कांग्रेस से जुड़कर भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं जनहितार्थ दी है। आप कांग्रेस के निष्ठावान व संघर्षशील कार्यकर्ता के रूप में प्रमुख रूप से जाने जाते थे। आपने कांग्रेस के कई आंदोलन व अन्य कार्यक्रमों में प्रमुख रुप से हिस्सा लिया है। स्व.श्री नागर के हमारे मध्य से चले जाने के 34 वर्ष बाद भी उनकी चिर स्मरणीय कार्यशैली प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से उनकी उपस्थिति हमारे मध्य करा देती है। ऐसे महान व्यक्तित्व, समाज के प्रमुख आदर्श होकर मिसाल के तौर पर याद किए जाते है उनकी कार्यशैली व संघर्षशीलता हमारी पथप्रदर्शक हो सकती है। स्व.श्री सदाशिवजी नागर 'नाना' के परिवार में उनके छोटी पुत्र जयशंकर नागर व पोते निलेश नागर द्वारा पत्रकारिता के माध्यम से अपनी सेवाएं दी जा रही है। साथ ही अन्य परिवारजनों द्वारा भी अपने पितृपुरूष स्व.श्री नागरजी 'नाना' के पथचिन्हों पर चलकर समाजसेवा के साथ जीवन निर्वाह किया जा रहा है। स्व.श्री नागर जी 'नाना' को उनकी 34वीं पुण्यतिथि पर सादर-सादर श्रद्धांजलि... पुष्पांजलि... नमन!

-डॉ. रामरतन शर्मा उज्जैन

नवंबर में विवाह की ५०वीं वर्षगांठ मनाई और मई में अलविदा कहा...

श्रद्धांजलि श्रीमती भगवतीदेवी भट्ट

रतलाम। भाग्यवान किसे कहा जाता है... जो अपने जीवन के सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न कर लें तथा चलते-फिरते ही इस संसार को अलविदा कह दें। ऐसा ही श्रीमती भगवती देवी भट्ट धर्मपत्नी श्री रमेशचंद्र भट्ट ने अपने दोनों पुत्रों के विवाह पश्चात अपने पौतों के मुंह देखे, सभी तीर्थ स्थानों की यात्रा करने, अपने सभी रिश्तेदारों के यहां सुख-दुख में उपस्थित होने सहित सदा सुहागन रूप में इस संसार को अलविदा कह दिया, हाल ही नवंबर माह में उन्होंने अपने विवाह के पचास वर्ष भी पूर्ण किए थे।

जीवन में सुख और दुःख दो पहलू हैं... हुआ यह कि इनकी माताजी श्रीमती सरस्वतीबाई (सुपुत्री जानकीलालजी नागर सुखेड़ा) का देहावसान इनके जन्म के पश्चात ही हो गया था। फलस्वरूप इनका लालन-पालन सुखेड़ा में ही नानाजी श्री जानकीलालजी एवं मामाजी श्री महादेवप्रसादजी के यहां हुआ, इनका विवाह 16 वर्ष की आयु में उन्हेल निवासी श्री लक्ष्मीनारायणजी भट्ट के सुपुत्र श्री रमेशचंद्रजी भट्ट के साथ हुआ। वे अत्यंत धार्मिक एवं सामाजिक महिला थी तथा सभी तीर्थों.. बारह ज्योतिर्लिंगों की यात्राएं की... दोनों पुत्रों का विवाह सभ्रांत परिवारों में किया।

अपने सभी दायित्वों का निर्वाह करते हुए वे स्वस्थ जीवन जी रही थी कि काल को कुछ और ही मंजूर था, 26 मई को वे अचानक अस्वस्थ हुईं तथा 27 मई को इस संसार को अलविदा कह दिया। अपने जीवन में उन्होंने सद्कार्य किए इसीलिए मोक्ष बुद्धपूर्णिमा तथा भक्त नरसी मेहता जयंती के अवसर पर हुआ। आपकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों ने हिस्सा लिया। श्रद्धांजलि सभा में मंडल रेल प्रबंधक श्री संजय के. पाठक, अतिरिक्त मंडल रेल प्रबंधक, आर्य समाज प्रमुख भगवानदास अग्रवाल, वे.रे. मजदूर संघ अध्याक्ष प्रदीप बारोठिया, महामंत्री एच.सी. खट्टानी, नागर परिषद अध्यक्ष श्री संजय मेहता, श्री ओम त्रिवेदी, अवंतिका इंदौर के सम्पादक श्री दीपक शर्मा, श्री विष्णुदत्त नागर, श्री राजेन्द्र नागर सहित रतलाम नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। मुखाग्नि उनके सुपुत्र श्री गिरीश एवं हेमंत भट्ट ने दी। जय हाटकेशवाणी परिवार गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

विश्व प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ

तवांग

भारत तिब्बत सीमा पर पहाड़ियों के बीच सुन्दर शहर तवांग, अरुणाचल प्रदेश का जिला मुख्यालय है। यहां से लगभग 20 कि.मी. पर तिब्बत (चीन) सीमा लगती है। आसाम के तेजपुर शहर से एक मात्र सड़क मार्ग से 350 कि.मी. दूर यह शहर विश्व प्रसिद्ध बौद्धमठ के रूप में जाना जाता है। 17वीं शताब्दी में बना यह मठ एशिया का सबसे बड़ा दूसरा बौद्ध मठ है। 5वें दलाई लामा की पूजा स्थली मठ में प्रसिद्ध बौद्ध मन्दिर है। इसमें भगवान बुद्ध की 28 फीट ऊंची सुनहरी बौद्ध मूर्ति है। मूर्ति के दर्शन, पूजन, उपासना के लिए देश-विदेश के बौद्ध यात्री यहाँ आते है। 113 फीट लम्बे एवं 80 फीट चौड़े इस मठ में तीन मंजिला सभागृह बौद्ध साहित्य की लायब्रेरी, संग्रहालय, महायाना बौद्ध पाठशाला एवं बौद्ध लामाओं के निवास है। इस मठ में देशी-विदेशी बौद्ध अनुयायी आते है, उपासना करते है, शिक्षा प्राप्त करते है।

आसाम में तेजपुर शहर से सुबह 5 बजे निर्धारित जीपो के द्वारा 15 घंटे सफर कर तवांग पहुंचा जाता है। 1962 के पूर्व यह मार्ग पैदल यात्रा के लिये था, जिससे पैदल यात्रा का समय लगभग 1 माह हुआ करता था। भारत चीन युद्ध 1962 के समय चीन ने इस शहर और आसपास के पहाड़ी क्षेत्र के अपने कब्जे में कर लिया था। जसवन्त गढ़ की पहाड़ी पर दोनों सेनाओं का टकराव हुआ था। शैला पास पहाड़ी समुद्री सतह से 13500 फीट ऊंची है। शीत काल में पूरा पहाड़ी क्षेत्र बर्फ से ढंका रहता है। अप्रेल माह के अन्तिम सप्ताह पूर्वांचल क्षेत्र में आये साइक्लोन

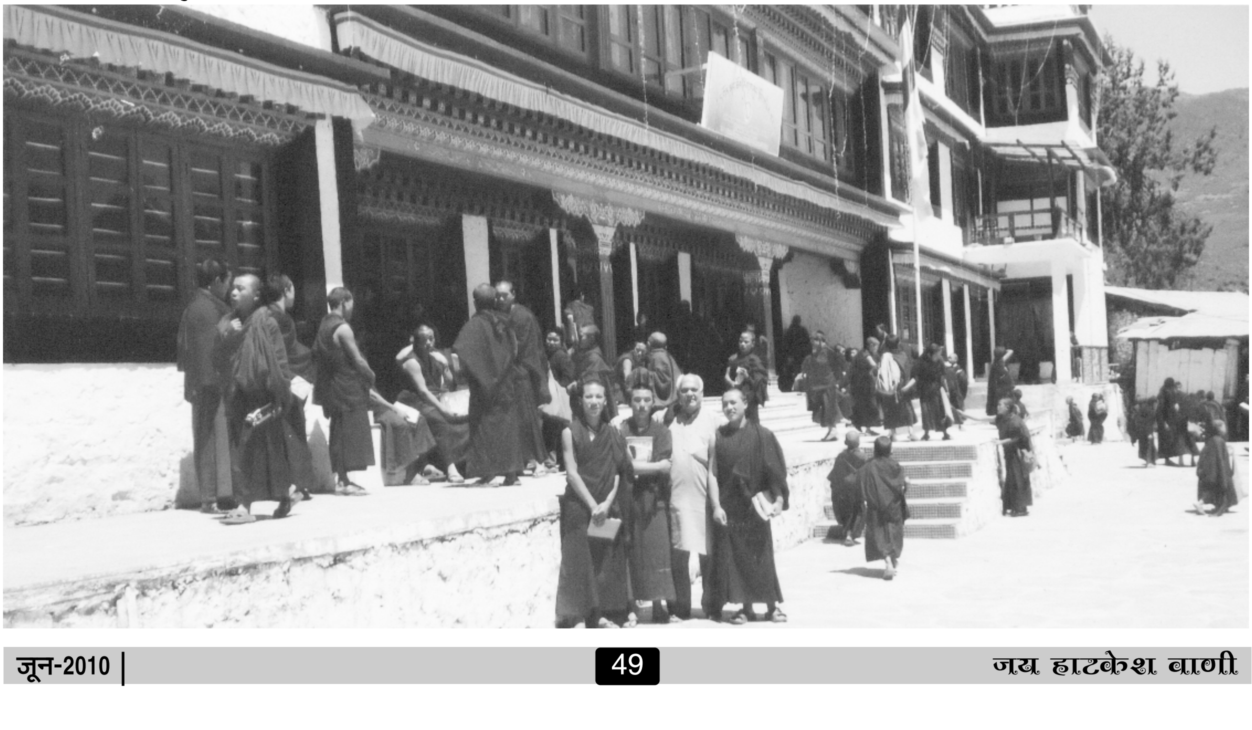

(म्ब्न्त्दहा) के कारण यह पहाड़ी पूरी बर्फ से ढकी थी। मेरी यात्रा में इन्ही तारीख में थी। एक युवा कार्यक्रम के सम्बंध में मुझे 23 अप्रैल का तवांग पहुंचना था परन्तु मौसम की अस्थिरता एवं गाड़ी रुकावट के कारण एक वाहन उपलब्ध न होने से मुझे तेजपुर में ही रुकना पड़ा। 26 अप्रैल को एक निजी वाहन द्वारा यात्रा की सुविधा मिली। बरसात के कारण पूरा रास्ता फिसलन भरा था। धीरे-धीरे वहन द्वारा 27 अप्रैल को सुबह शैला पास पहाड़ी पर पहुंचे। चारों और पूरे पहाड़ी क्षेत्र में बर्फ जमी थी। सड़क एवं पेड़ पौधों पर बर्फ जमी थी। लगभग 15 कि.मी. हमारा वाहन बर्फीले रास्ते पर धीरे-धीरे चलता रहा। रास्ते में उतरकर रास्ता साफ करते हुए हम आगे बढ़ते रहे। लगभग 2 घण्टे बर्फ पर रास्ता बनाते हुए बर्फीला मार्ग पार किया। यह दृश्य अद्‌भुत था। मुझे स्विटजरलैण्ड की यात्रा से अधिक आनन्द 2 घण्टे की यात्रा में मिला। तेजपुर के तवांग मार्ग पर गेमाड़िला मुख्यालय, डेरंग, यशवन्त गढ़ प्रमुख शहर है यहाँ भारतीय सेना की छावनियां है, रास्ते में सेन्य स्मारक आते है। तवांग में शहीद स्मारक एक आकर्षण का केन्द्र है जो 1962 के युद्ध में शहीद हुए जवानों की यादों के साथ युद्ध की गाथा भी बताते है। प्राकृतिक झील, पहाड़ी सुन्दरता बौद्ध तीर्थ के कारण यह क्षेत्र पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। हाल ही में गोहाटी से तवांग हेलीकॉप्टर सेवा सप्ताह में चार दिन प्रारम्भ की गई है। जिसका उपयोग शासकीय सेवा के लिये अधिक होता है।

बद्रीनाथ केदारनाथ की तीर्थ यात्रा के समान ही तवांग भी एक बौद्ध तीर्थ है। यहां 90 प्रतिशत बोद्ध रहते है। मन्दिर है, जहां सभी देवताओं की मूर्ति है। मस्जिद देखने में नहीं आई है।

-महेन्द्र नागर

गृह नक्षत्र शांति के लिए श्री सोमनाथ मंदिर सर्वश्रेष्ठ

श्री सोमनाथ मंदिर एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह गुजरात में सौराष्ट्र क्षेत्र में वैरावल बंदरगाह में स्थित है। मंदिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण राजा चंद्रदेव ने किया था। इसका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। इस मंदिर को 17 बार नष्ट किया गया तथा 17 बार यह पुनर्निर्माण किया गया। 12 ज्योतिर्लिंगों में यह महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। लोककथा के अनुसार यहां पर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी देह त्याग की थी, इस लिए यहां का महत्व बढ़ गया है। ऐसी मान्यता है कि जब भगवान श्री कृष्ण भालुका तीर्थ में विश्राम कर रहे थे तभी शिकारी ने उनके पैर के तलवे के पदचिन्ह को हिरण की आंख जानकर धोखे से तीर मारा था। श्री सोमनाथ (चंद्रदेव रोहणी) की आराधना, अनुष्ठान करने से प्रत्येक कार्य में आ रहे विघ्न-बाधाएं समाप्त होती हैं तथा आर्थिक क्षे, व्यवसाय में तरक्की होती है। सौराष्ट्र का यह स्थल ज्योतिष शास्त्र से गृह नक्षत्रों की शांति हेतु सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसी प्रयोजन से गुजरात की समस्त धर्मप्राण जनता की सुख-समृद्धि हेतु मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की सहमति से उज्जैन के पं. दुर्गाशंकर नागर ने रोहणी-चंद्र कवच अनुष्ठान किया।

चंद्रराशि पर आधारित संतोष व्यास 'देवज्ञ'

जून माह का भविष्यफल

ज्योतिष शास्त्र काल का बोधक शास्त्र है
एवं पंचांग अनिवार्य उपकरण है

मेष- इस मास में स्वास्थ्य में विशेष सुधार होगा, मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। मनोबल में वृद्धि होगी। भाग्यफल श्रेष्ठ बना रहेगा। राजकीय कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी। धन व्यय की अधिकता हो, धन व्यय शुभ मांगलिक कार्यों में होगा, बाह्य यात्रा का आकस्मिक योग बन रहा है।

वृष- इस माह में मन में संतोष रहेगा। आमदनी कम व्यय अधिक होगा। स्त्री-संतान सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम व आत्मबल में वृद्धि होगी। मासांत में शारीरिक, मानसिक सभी कष्टों का निवारण होगा। नित्य लक्ष्मीजी की पूजा करें, पत्नी का साथ लाभदायी रहेगा।

मिथुन- इस माह का फल विशेष उत्तम है, समय पर अच्छा धन लाभ होगा। शत्रु दल का पूर्ण रूप से विनाश निश्चय ही होगा। माता-पिता को कष्ट भी संभव है। शारीरिक पीड़ा से आप विशेष त्रस्त रहेंगे। भाइयों के सहयोग से व्यापार में विशेष लाभ होगा।

कर्क- मास का फल साधारण ही रहेगा। स्त्री को उदर पीड़ा से विशेष कष्ट होगा। आर्थिक स्थिति में आकस्मिक सुधार संभव होगा। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेंगे। नवीन कार्य का प्रारंभ भी हो सकता है, लंबी यात्रा का आकस्मिक योग बनेगा। परिवार में सुख-शांति का वातावरण बन सकता है।

सिंह- इस माह में उत्तम फल दृष्टि गोचर हो रहा है, किसी नवीन कार्य का सम्पादन भी होगा। उदरशूल पीड़ा से स्वास्थ्य में आकस्मिक गिरावट आ सकती है। तीर्थ यात्रा का योग बन रहा है। आय की विशेष कमी हो सकती है। दुर्गाष्टमी का व्रत रखें।

कन्या- मास का फल मध्यम ही है, आय-व्यय समान रहेंगे। परिवार में सुख-शांति का वातावरण बन सकता है। कमर की पीड़ा से विशेष परेशानी, मासांत में अच्छा धन लाभ हो सकता है। शत्रु दल से आपका विरोधाभास चल सकता है। श्री गणेशजी की पूजा-अर्चना आराधना करें।

तुला- इस माह में शारीरिक सुख उत्तम रहेगा। आय अच्छी होगी। आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार हो सकता है। साधारण चोट, स्त्री, संतान सुख उत्तम होगा। बंधुजनों से मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। संकटमोचन हनुमान अष्ट का पाठ अवश्य करें।

वृश्चिक- इस माह में शारीरिक सुख ठीक नहीं रहेगा। आय-धन संबंधी रुकावट आयेगी। शत्रु दल का गुप्त षड्यंत्र निश्चय ही विफल होगा। मित्र वर्ग का विशेष सहयोग बना रह सकता है। भाइयों से विशेष सहयोग मिलेगा। आप संतोषी माता का व्रत रखें।

धनु- इस मास में आपको शारीरिक, मानसिक व्याधाएं नहीं सताएंगी। आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा। गृह कलेश से मन में खिन्नता आ सकती है। बौद्धिक विकास कार्यों में सवर्था सफलता मिलेगी। स्त्री को उदार-विकार हो सकता है। श्री भोलेनाथ महादेव की पूजा-अर्चना करें।

मकर-इस माह में फल अच्छा घटित नहीं होगा। आर्थिक स्थिति डांवाडोल सी रहेगी। सामाजिक अपयश मिल सकता है। परिचित पुरुष की ओर से विशेष चिंता रहेगी। आकस्मिक धन का लाभ हो सकता है। नेत्र पीड़ा से परेशानी रहेगी। भगवान विष्णु की अर्चना-आराधना करें।

कुंभ- इस माह में आपको साधारण ही फल प्राप्त होंगे। धर्म संबंधी कार्यों में विशेष रुचि होगी। पारिवारिक कलह से तनाव बढ सकता है। पूर्णिमा के व्रत से आपको शांति मिल सकती है।

मीन- इस माह का फल श्रेष्ठ है। लाभ का उत्तम समय है। शत्रु दल उग्र रूप धारण कर सकता है। बंधुजनों से अच्छा पूर्ण सहयोग मिलेगा। शारीरिक व्यथाओं का शीघ्र शमन होगा।सनतान सुख उत्तम रहेगा।